हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अप्रैल, 2005 वर्ष 4 अंक 2

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

सुन्नत की अहम्मीयत

जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उसने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(हदीस)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

औलादे आदम के सरदार	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अब्दुल हयी हसनी	6
हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में	मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी	7
न्याय के लिए साहसिक क़दम	डा० मु० इज्तिबा नदवी	12
तूफ़ान और जंग	अल अहरार	15
हज़रत मुहम्मद (स०) ग़ैर मुस्लिम विद्वानों	मु० सरवर फ़ारूकी	16
कौन सा दर है	खैरुन्निसा बेहतर	20
उनपे लाखों सलाम		20
तिब्बे नबवी	ग़ुफ़रान नदवी	22
हज़रत (स०) का ज़माना	अब्दुस्सलाम किदवाई	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	27
जिन्न क्या कर सकते हैं ?	अबू मर्ग़ूब	28
तालीम व तर्बियत	मौ० मु० तक़ी उस्मानी	29
टीपू सुल्तान	मु० हसन अंसारी	32
उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़ीया	मुहसिना फ़ारूकी	34
खान पान	मनुस्मृति	36
रसूलुल्लाह (स०) का संसार पर उपकार	अनुवाद	38
अबरहा का लशकर	लतीफ़ अहमद एम०ए०	39
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

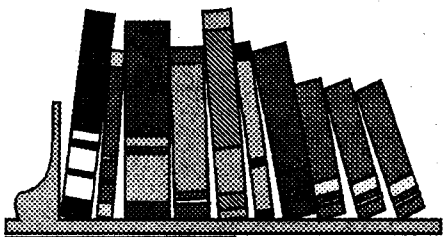

औलादे आदम के सरदार
हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक्का शहर में क़ुरैश के सरदार अ़ब्दुल मुत्तलिब के घर पैदा हुए। वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह और माँ का नाम आमिना था। रबीअुल अव्वल के महीने में १२ तारीख़ को पीर (सोमवार) के दिन, सुब्हे सादिक़ के वक़्त (भोर के समय) आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पैदाइश हुई। तारीख़ में इख़्तिलाफ़ हुआ है किसी ने ८ किसी ने ९ भी माना है। अंग्रेजी तारीख़ २० अप्रैल ५७१ बयान की गयी है उस वक़्त ईरान में नौशीर्वां बादशाह राज करता था। उस वक़्त के रवाज के मुताबिक़ दूध पिलाने के लिए दाई के हवाले हुए, यह ख़ुश क़िस्मत दाई क़बील–ए–बनी सअ़द की माई हलीमा थीं जिनको हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर ईमान लाने का शरफ़ (सम्मान) भी हासिल हुआ।

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) माँ की कोख ही में थे कि वालिद साहिब का इन्तिक़ाल (देहान्त) हो गया। ६ साल की उम्र हुई तो माँ भी न रहीं। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने न किसी से पढ़ना सीखा न लिखना, इसीलिये आप को उम्मी (बे पढ़ा लिखा) कहा गया। यह भी एक फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) की बात थी कि जब आप को सारे आ़लम का उस्ताद (गुरू) बनना था तो अल्लाह के अ़लावा आप का और कोई कैसे उस्ताद बन सकता था?

बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) बे हयाई (निर्लज्जता) से आप हमेशा दूर रहे। आप की सच्चाई और अमानतदारी (विश्वसनीयता) पूरे मक्का में मानी हुई थी। लोग आप को सादिक़ (सच्चा) और अमीन (विश्वसनीय) के नाम दिये हुए थे।

आप पचीस वर्ष के हुए तो एक ख़ुश क़िस्मत (भाग्यवान) बेवा औरत हज़रत ख़दीजा रज़ि० से आप का निकाह हुआ उस वक़्त उन की उम्र चालीस साल थी आप से चार बेटियां हज़रत ज़ैनब, हज़रत रूक़य्या, हज़रत उम्मे कुल्सूम, हज़रत फ़ातिमा और तीन बेटे हज़रत क़ासिम, हज़रत ताहिर और हज़रत तय्यिब पैदा हुए कुछ लोगों का कहना है कि ताहिर ही को तय्यिब कहा गया है।

जब आप चालीस साल के हुए तो १७ रमज़ान या २४ रमज़ान की तारीख़ में वह रिसालत की दौलत अ़ता (प्रदान) हुई जो अज़ल (अनादिकाल) से आप के लिये मुक़द्दर थी। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम) अब आप पर क़ुर्आने मजीद उतरना शुरू हुआ जो तेईस वर्षों में पूरा हुआ। नुबूवत व रिसालत मिलने के बाद आप ने तबलीग़े रिसालत का काम शुरूअ़ कर दिया और लोग इस्लाम में दाख़िल होने लगे। औरतों में सब से पहले हज़रत ख़दीजी, मर्दों में सबसे पहले हज़रत अबूबक्र, लड़कों में सबसे पहले हज़रत अ़ली और ग़ुलामों में सबसे पहले हज़रत ज़ैद ईमान लाये। (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम)

ईमान न लाने वाले हट धर्मों की मुख़ालफ़त और ईज़ा रसानी के बावजूद आप १३ साल तक मक्के में रहकर इस्लाम फैलाते रहे। जब मुख़ालिफ़ीन ने आप को और ईमान लाने वालों को तक्लीफ़ पहुंचाने में हद कर दी यहां तक कि मआ़ज़ल्लाह आप के क़त्ल के इरादे से आप का घर घेर लिया तो आपने अल्लाह के हुक्म से मक्के से मदीना हिजरत फ़रमाई।

हिजरत रात में उस वक़्त हुई जब मुख़ालिफ़ीन घर घेरे हुए थे, आप ने हज़रत अ़ली (रज़ि०) को कुछ हिदायात देकर अपने बिस्तर पर लिटाया और बाहर निकले मुअ़जिज़ा ज़ाहिर हुआ, कोई

आप को देख न सका, हज़रत अबू बक्र को साथ लेकर ग़ारे हिरा में दाख़िल हो गये। सुबह के वक़्त खलबली मच गई मुख़ालिफ़ीन ने आप को ढूंढ लाने वाले के लिए १०० ऊंटों के इन्आम का एअ़लान किया।

लोग ढूंढते हुए ग़ारे हिरा के दरवाज़े तक पहुंच गये, हज़रत अबू बक्र ने ख़त्रे का इज़हार किया आप ने फ़रमाया "दुखी न हो अल्लाह हमारे साथ है" मुख़ालिफ़ीन में से किसी ने कहा इस ग़ार (गुफ़ा) में हो सकते हैं कि दूसरे ने दलील दी कि देखो दाख़िल होने के रास्ते में कबूतर का घोंसला है उस में दो अन्डे भी हैं और मकड़ी का जाला तना हुआ है इसमें कोई दाख़िल होता तो दोनों चीज़ें न होतीं। चुनांचिः वह लोग वहां से लौट आये यह हमारे नबी का मुअ़जिज़ा था। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

तीन रोज़ के बाद हज़रत (सल्लल्लाहु अ़लैहिव सल्लम) अपने यारे ग़ार हज़रत अबू बक्र के साथ मदीना रवाना हुए पूरे रास्ते मुतअ़दिदि मुअ़जिज़ात का ज़ुहूर हुआ। मदीना वालों को इत्तिलाअ़ थी उन्हों ने शानदार इस्तक़बाल किया। औरतों ने खुशी में यह अशआ़र कहेः

तलअ़ल्बद्रु अ़लैना–मिन सनिय्यातिल्वदाअ़ि
वजबश्शुक्रु अ़लैना–मा दआ़ लिल्लाहि दाअ़ि
अय्युहल्मब्अ़ूसू फ़ीना–जिअ़त बिल्अम्रिलमुताअ़ि

अर्थः सनिय्यातिल वदाअ़ (घाटी) से हम पर माहेकामिल (पूर्णिमा का चान्द) निकल आया। इस निअ़मत (पुरस्कार) का शुक्र हम पर उस वक़्त तक वाजिब है जब तक कोई दुआ़ करने वाला दुआ़ मांगता रहे अर्थात क़ियामत तक। ऐ वह नबी जो हम में भेजा गया है आप ऐसा हुक्म नामा लेकर आए हैं जिसका मानना ज़रूरी है।

अब मदीने से इस्लाम फैलने लगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी मस्जिद बनवाई लेकिन मक्के के मुख़ालिफ़ीन बराबर हम्ले करते रहे, बद्र, उहद और ख़न्दक़ नाम के तीन गज़वात इन के हम्लों के नतीजे ही में हुए। हिजरत के बाद आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) मदीना तय्यिबा में १० साल तक रहे। इस दौरान इस्लाम फ़ैलाने में रूकावट डालने वालों या मुसलमानों पर ज़ुल्म करने वालों से १६ लड़ाईयां लड़ना पड़ीं उधर क़ुर्आने शरीफ़ बराबर उतरता रहा इस्लामी अह़काम आते रहे और इस्लाम फैलता रहा यहां तक कि जज़ीरतुल अ़रब (अ़रब खाड़ी) से बाहर मुल्कों में भी पहुंच गया।

जब क़ुर्आन मुकम्मल हो गया और अल्लाह तआ़ला को आप से जितना काम लेना था वह पूरा हो गया तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आप का बुलावा आ गया उस वक़्त आप की उ़म्र त्रीसठ साल की थी, १४ दिन बीमार रहने के बाद १२ रबीअ़ुलअव्वल दोशंबे के दिन हज़रत आ़इशा के हुजरे में आप की वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअ़ून।

बहुत ही अ़जीब बात है कि मश्हूर क़ौल के मुताबिक़ जो तारीख़ महीना और दिन आप की पैदाइश का है वही तारीख़ महीना और दिन आप की वफ़ात का भी है, शायद इस में क़ुदरत का इशारा है कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पैदाइश के दिन अपनी ना समझी से बहुत ज़ियादा खुशी मत मनाओ कि वही वफ़ात का दिन भी है, ऐसे ग़म का दिन कि उस से बड़ा ग़म का दिन न हुआ है न होगा।

सह़ाब–ए–किराम ने आप को ग़ुस्ल दिया कफ़न पहनाया सबने अलग अलग नमाज़े जनाज़ा पढ़ी इसी दौरान सह़ाब–ए–किराम ने हज़रत अबू बक्र को ख़लीफ़ा चुना फिर ख़लीफ़ा के हुक्म से आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को हज़रत आ़इशा के हुजरे ही में दफ़न किया गया। हम सब का अ़क़ीदा है कि आप अपनी क़ब्रे मुबारक में ज़िन्दा हैं लेकिन वह ज़िन्दगी हमारी नाक़िस अ़क़्ल से बालातर (परे) है। जब हम को शहीद की ज़िन्दगी के बारे में कह दिया गया कि

(शेष पृष्ठ २१ पर)

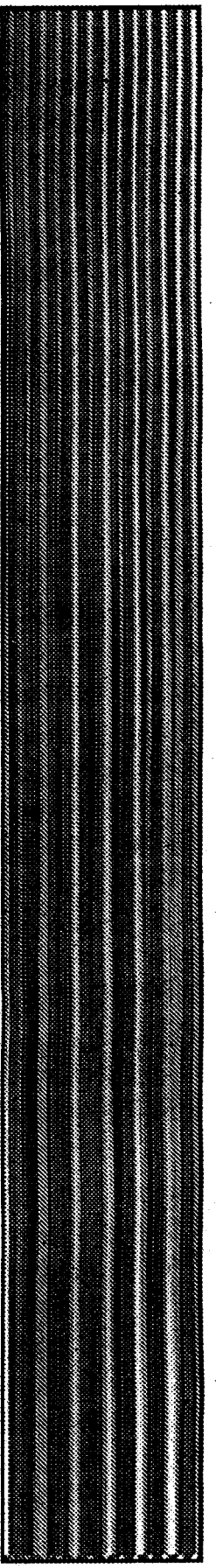

क़ुरआन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

बद गुमानी :

ऐ ईमान वालो! बद गुमानी से बचो बेशक बाज़ बद गुमानियाँ गुनाह हैं।

किसी की नीयत के बारे में अच्छा ख़याल न रखना यही बद गुमानी है। इस की वजह से आपस का मेल मिलाप कम हो जाता है। एक दूसरे को शक की निगाह से देखने लगता है। आहिस्ता आहिस्ता यह बद गुमानी दिलों में जड़ पकड़ जाती है और लड़ाई का अच्छा खासा सामान पैदा हो जाता है। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि बद गुमानी से बचो क्योंकि बदगुमानी झूठी बात है। यह बात भी मुनासिब है कि अगर आदमी ऐसा काम कर रहा हो जिससे दूसरों को बदगुमानी का मौका मिले तो वह उस बदगुमानी को दूर कर दे। एक मर्तबा रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एअ़तिकाफ़ में बैठे थे, रात को आप की बीवी मिलने आईं, आप उन को वापस पहुंचाने चले तो रास्तें में दो सहाबी मिल गये वह आप को औरत के साथ देख कर वापस जाने लगे, आप ने फ़ौरन आवाज़ दी और कहा यह मेरी बीवी फ़ुलां हैं। एक सहाबी ने कहा कि अगर मुझे किसी के साथ बदगुमानी ही करनी होती तो क्या आपके साथ करता? हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि शैतान इन्सान के अन्दर खून की तरह दौड़ता है।

मतलब यह है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बदगुमानी के ख़तरे को दूर फ़रमा दिया।

तजस्सुस (टोह)

और किसी के अन्दर का भेद न टटोला करो (हुजुरातः १२)

किसी की बुराई की खोज करना बड़ी ख़राब बात है। इस से बचना चाहिए। रसूलुल्लाहु (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के ऐब ढूंढता है, खुदा उस के ऐब ढूंढता है, वह अगर अपने घर में छुपा भी रहेगा तो खुदा उसे रूस्वा कर देगा। इसी तरह हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने कहा है कि जो शख़्स (छुप कर) लोगों की बात सुनेगा तो कियामत के दिन उसके कानों में पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा।

सोचने की बात है कि हम को बे सबब किसी की बातों और अन्दर के भेदों को टटोलने और टोह लगाने की जरूरत ही क्या है? आदमी के लिये खुद अपनी बातें क्या कम हैं कि दूसरों के मुआ़मले में दख़्ल दें, अल्लाह और रसूल के इन हुक्मों के बाद किसी मुसलमान को यह गलती न करना चाहिए।

हिर्स (लालच)

और अपनी आंखें न पसार उस की ओर जो हम ने उन में से तरह–तरह के लोगों को सामान दिया है।

(ताहाः १३१)

इस आयत से यह मालूम हुआ कि मुसलमान के लिये ठीक नहीं कि दुन्या की चटक भड़क पर अपनी जान देने लगे और उस के पीछे दीन व ईमान बर्बाद करे, खुदा ने जो कुछ दिया है उ़सी पर सब्र व किनाअ़त करना चाहिए। ज़ियादा की हवस फ़ुजूल है, इसी को बे नियाज़ी कहते हैं। इन्सान की बे नियाज़ी यही है कि खुदा के सिवा दूसरों से बे नियाज हो, किसी दूसरे के सामने हाथ न फैलाए, और जो मिला है उस पर तमानियत (संतुष्टि) हासिल की जाए।

हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि दौलत मन्दी माल की बहुतात का नाम नहीं है बल्कि अस्ल दौलत मन्दी दिल की बेनियाज़ी है। फरमाया मालदारी दिल की मालदारी है और मुहताजी (निर्धनता) दिल की मुहताजी है। एक बार हकीम बिन हिजाम ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बार बार माल का सुवाल किया और हर बार आप ने उनकी मांग पूरी की, लेकिन आख़िर में फरमाया कि ऐ हकीम यह माल बहुत पसन्दीदा चीज़ है जो शख्स इस को बिना लालच के सिर्फ ज़रूरत के लिये लेता है खुदा उस में बरकत देता है और जो इस को लालच और हवस के साथ लेता है उस में बरकत नहीं होती और वह उस

(शेष पृष्ठ २४ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ० अब्दुल हयी हसनी

मुश्किल हालात में हक़ पर जमे रहने का सवाबः—

४३३: हज़रत अबू उमय्या शअ़बानी (रजि०) से रिवायत है कि मैंने अबू सअ़लबा खश्नी (रजि०) से पूछा कि तुम इस आयत "अलैकुम अन्फुसकुम" (तुम को अपनी फ़िक्र ज़रूरी है) के बारे में क्या कहते हो? तो उन्हों ने जवाब में कहा कि तुम ने एक जानने वाले से पूछा है। मैंने खुद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से इस आयत के बारे में पूछा था तो आप ने फरमायाः इस का मतलब यह है कि नेक मश्वरे करो और बुराई से बचों और जब देखो कि लालच का दौर दौड़ा है और लोग नफ़्स (मन) की चाहतों के गुलाम बन चुके हैं, दुन्या की अव्वलीयत (प्राथमिकता) हासिल है, हर शख्स अपने ख़यालात और सोच को सब से बढ़ कर समझता है तो तुम अपने आप की फिक्र करो। आम लोगों से अलग थलग हो जाओ, और समझो कि तुम्हें ऐसे मुश्किल हालात से सबिका पड़ने वाला है जिनमें दीन पर जमे रहना उतना ही मुश्किल होगा जितना हाथ में आग का अंगारा लेना, उस नाज़ुक ज़माने में दीन पर अमल करने वालों की (ठीक हालात में) उस जैसे पचास अमल करने वालों के बराबर सवाब मिलेगा। (तिर्मिजी)

हर हक़ वाले का हक़ अदा करनाः—

४३४: हज़रत अबू जुहैफा यानी वहब बिन अब्दुल्लाह फरमाते है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत सलमान और हज़रत अबू दर्दा (रजि०) के बीच भाई चारगी करवा दी, एक दिन हज़रत सलमान (रजि०) हज़रत अबू दर्दा (रजि०) के घर तशरीफ लाए, उन की बीवी बहुत मअ़मूली (साधारण) कपड़ों में थी, कहा तुम्हारा क्या हाल है? बताया कि तुम्हारे भाई को दुन्या से कोई जरूरत नहीं। इतने मे अबू दर्दा आ गये उनके लिये खाना तैयार किया गया, हज़रत अबू दर्दा ने हज़रत सलमान से कहाः तुम खाओ मैं रोज़े से हूँ। हज़रत सलमान ने कहा जब तक तुम नहीं खाओगे मैं नहीं खाऊंगा, तो उन्होंने खाना खाया। जब रात हुई तो अबू दर्दा खड़े हुए। हज़रत सलमान ने कहा सो जाओ, वह सो गये, (कुछ वक्त बाद) फिर खड़े हुए, फिर हज़रत सलमान ने कहा अभी सोओ। जब आखिरी रात हुई तो हज़रत सलमान ने कहा अब उठो। फिर दोनों ने (तहज्जुद की) नमाज पढ़ी। हज़रत सलमान (रजि०) ने कहाः तुम्हारे रब का तुम पर हक़ है, तुम्हारे नफ्स का तुम पर हक़ है, तुम्हारी बीवी का तुम पर हक़ है। पस हर एक का हक़ उसके हक़ के मुताबिक (अनुकूल) अदा करो। वह दोनों नबीए करीम के पास आये और इस बात का जिक्र किया आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि सलमान ने सच कहा।

(बुखारी)

रोज़े से मिलाकर रोजा़ रखने की मनाहीः—

४३५: हज़रत अब्दुल्लाह अम्र बिन आस (रजि०) से रिवायत है कि रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को खबर दी गई किः मैं कहता हूं कि जब तक मैं जिन्दा रहूंगा। दिन में रोजा़ रखूंगा और रात में इबादत करूंगा। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मुझे बुलाकर दर्याफ्त फरमायाः तुम ही ने यह कहा है? मैंने कहा ऐ अल्लाह के नबी मेरे मां बाप आप पर कुर्बान मैंने यह बात कही है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया तुम ऐसा नहीं कर सकते, रोजा़ भी रखो खाओं पियो भी, सोओ भी नफ़्ल नमाज़ें भी पढ़ो। महीने में तीन दिन रोज़े रखो कि एक नेकी पर दस गुना सवाब मिलता है इस तरह यह हमेशा रोज़ा रखने के बराबर हो जाएगा। मैंने अर्ज़ कियाः अल्लाह के नबी (अलैकस्सलातु व स्सलाम) मैं इससे जियादा की ताकत रखता हूं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया अच्छा एक दिन रोज़ा रखो एक दिन छोड़ दो। हज़रत दाऊद (अ०) इसी तरह रोज़ा रखते थे। इससे अच्छा रोज़ा (नफ़्ल रोज़ा रखने का तरीका) नहीं हो सकता। (हज़रत अबू दर्दा इसी सौमे दाऊदी अपनाए हुए थे आखिर उम्र में) वह फरमाते थेः अगर मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महीने में तीन रोज वाली बात मान ली होती तो वह बात मेरे लिये और मेरे बाल बच्चों के लिये और मेरे माल के लिये बेहतर होती।

हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अ़ली ह़सनी

मुसलमानों के दो बड़े त्योहार

मुसलमानों के दो बड़े त्योहार ईदुल–फ़ित्र और ईदुल–अजहा हैं, जिनको ईद व बकरईद के नाम से भी याद किया जाता है। ईद रमज़ान के महीने के अन्त और शव्वाल के चांद दिखाई देने पर शव्वाल की पहली तारीख को होती है। चूंकि रमजान का महीना रोज़ों का महीना है, और वह धैर्य तथा संयम, उपासना तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं में व्यस्त रहने में बीतता है अतः स्वाभाविक रूप से ईद के चांद की बड़ी प्रतीक्षा होती है। विशेषकर उन्तीसवीं के चांद की अधिक प्रसन्नता होती है। उर्दू में वाक्य "ईद का चांद" और "उन्तीसवी का चांद" प्रसन्ता एवं आनन्द हेतु लोक उक्ति बन गये हैं रमजान की उन्तीस तारीख को सूर्य अस्त होने के समय मुसलमानों की निगाहें आसमान पर होती है, और प्रत्येक आयु एवं वर्ग के लोग चांद की खोज में व्यस्त होते हैं, उन्तीसवी को चांद दिखाई नहीं देता तो अगले दिन फिर रोजा रखा जाता है और तीस का चांद निश्चित रूप से हो जाता है। जैसे ही चांद पर दृष्टि पड़ती है, चारों ओर मुबारक, सलामत की पुकार होने लगती है। छोटे बड़ों को सलाम करते हैं, बच्चे खानदान के बुजुर्गों तथा महिलाओं को ईद का शुभ सन्देश सुनाते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं, जो लोग पढ़े लिखे हैं और सुन्नत के अनुसार कर्म करने का प्रयत्न करते हैं, वह चांद देख कर अग्रलिखित दुआ पढ़ते है:–

(ऐ चांद) मेरा और तेरा मालिक अल्लाह तू है, तू हिदायत और भलाई का चांद है। ऐ अल्लाह! इस महीने को हमारे ऊपर शान्ति एवं ईमान, सलामती तथा आज्ञा पालन और अपनी प्रसन्नता प्राप्ति की क्षमता के साथ आरम्भ फ़रमा।

ईद का स्वागत तथा उस दिन के आचार–व्यवहार

कई दिन पहले से ईद की तैयारी आरम्भ हो जाती है, परन्तु ईद की रात बड़ी हमा हमी और बाजारों तथा घरों में चहल–पहल होती है। प्रातः काल से ही ईद से सम्बन्धित क्रियायें आरम्भ हो जाती है। इस तथ्य को व्यक्त करने के लिए कि आज रोज़ा नहीं है और खुदा ने २९ या ३० दिन के प्रतिकूल आज दिन के किसी भाग में खाने पीने की अनुमति प्रदान कर दी है, सुबह ही सुबह क्षमतानुसार खजूर या किसी मीठी वस्तु से सत्कार किया जाता है। फिर स्नान भली प्रकार करना आरम्भ होता है। खुदा ने जिनको दिया है, वह उस दिन नया जोड़ा पहनना जरूरी समझते हैं। नहा धोकर, कपड़े पहनकर, इत्र या खुशबू लगाकर, लोग ईदगाह की ओर चल देते हैं। ईदगाह जाने के पूर्व गरीबों के लिए दान हेतु कुछ अनाज अथवा नक़द के रूप में निकालते हैं, जिसको "सदक–ए–फ़ित्र" कहते हैं, यह मानो रमज़ान के रोज़ों के प्रति कृतज्ञता का प्रदर्शन है। यदि गेहूं के रूप में हो तो एक व्यक्ति को पौने दो सेर गेहूं और अगर जौ हो तो उसका दुगुना अथवा उसका मूल्य भी अदा किया जा सकता है, जो अनाज के भाव के अनुसार घटता बढ़ता रहता है। यह सदका अथवा दान बालिगों के अतिरिक्त बच्चों की ओर से भी अदा किया जाता है। ईद की नमाज़ सूर्य चढ़ने के बाद अदा करना सुन्नत है, और इसमें जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा है। परन्तु ईद से सम्बन्धित स्वयं रचित अनेक बखेड़ों के कारण हिन्दुस्तान में इसको देर से पढ़ने का आम रिवाज हो गया है। फिर भी दस से लेकर ग्यारह बजे दिन तक सामान्यतः ईद की नमाज पढ़ ली जाती है। ईद की नमाज पढ़ने का उचित स्थान तो नगर से बाहर मैदान या ईदगाह थी, परन्तु अब सुविधा हेतु, जनसंख्या की अधिकता और नगरों के विस्तृत होने के कारण मुहल्लों की मस्जिदों में भी ईद की नमाज़ पढ़ने का रिवाज बढ़ गया है। फिर भी अधिक संख्या में लोग नगर की ईद गाह में नमाज पढ़ते हैं।

ईद की नमाज़

मुसलमान ईद की नमाज़ पढ़ने जब जाते है तो मार्ग में खुदा का गुणगान तथा कृतज्ञता के शब्दों का मन्द स्वर में उच्चारण करते हुए जाते हैं। मसनून यह है कि एक मार्ग से ईदगाह जाय और दूसरे मार्ग से वापस आए, ताकि दोनों ओर खुदा की बड़ाई और

मुसलमानों की उपासना के प्रति अभिरूचि तथा एकत्व महिमा का प्रदर्शन हो जाय। परन्तु अब अधिक दूरी तथा सभ्यता एवं सांस्कृतिक उन्नति के फलस्वरूप सामान्यतया सवारियां प्रयोग की जाती है और दो मार्गों वाली बात करीब करीब समाप्त हो गई है।

प्रति दिन पांच समय की नमाजों तथा जुमा की नमाज़ के प्रतिकूल दोनों ईदों की नमाजों मे न अजान है, न इक़ामत न कोई सुन्नत न नफ़्ल है। जैसे ही मुसलमान एकत्र होते है या नमाज़ का पूर्व निश्चित समय आ जाता है, इमाम आगे बढ़ता है और नमाज़ आरम्भ कर देता है। पांचों वक्त की नमाजों की हर रकअत में दो तकबीरें है, एक तकबीर तहरीमा जिससे नमाज़ आरम्भ की जाती है और एक रूकू की तकबीर, परन्तु दोनों ईदों (ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़हा) की नमाज़ में हनफ़ियों के यहां हर रकअत में रूकूअ़ की तक्बीर के अ़लावा चार तकबीरें हैं, सलाम फेरने के बाद तुरन्त इमाम मिम्बर पर चला जाता है और ईद का खुत्बा (ईद से सम्बन्धित परम्परागत भाषण) देता है, जो जुमा के खुत्बा के समान दो खण्डों में विभाजित है। एक खुत्बा (प्रथम खण्ड) देकर कुछ सेकन्ड के लिए वह बैठ जाता है, फिर खड़ा होता है और दूसरा खुत्बा देता है। जुमा में पहले खुत्बा है फिर नमाज़, ईद में प्रथम नमाज़ फिर खुत्बा। हिन्दुस्तान में सामान्यतः अरबी भाषा में खुत्बा पढ़ने का रिवाज है। प्रायः इमाम खुत्बा की किताब लेकर खुत्बा पढ़ते हैं। अब अनेक स्थानों पर (कम से कम ईद के एक खुत्बा का) उर्दू अथवा क्षेत्रीय भाषा में खुत्बा देने का रिवाज हो गया है। इस में ईद की वास्तविकता, उसका सन्देश, ईद से सम्बन्धित आदेश एवं निर्देश और समय की मांगों पर प्रकाश डाला जाता है।

ईद की नमाज़ के पश्चात एक दूसरे से मिलना और सत्कार करना

ईद का खुत्बा समाप्त होते ही लोग एक दूसरे से गले मिलना आरम्भ कर देते है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह गले मिलन की प्रथा हिन्दुस्तान की विशेषता है। मुआनिका (गले मिलना) का कोई धार्मिक अस्तित्व नहीं है और न इस्लामी केन्द्र में इसका प्रचलन है। कोई आश्चर्य की बात नहीं, सम्भवता मुसलमानों ने इसको अपने देश वासियों के कुछ त्योहारों की रस्मों, विशेषकर "होली मिलन" से अपनाया हो जो प्रेम, हर्ष तथा उल्लास प्रकट करने का प्रतीक समझा जाता है। ईदगाह से वापसी पर लोग घरों पर ईद मिलने जाते हैं और एक दूसरे का मिठाई अथवा मीठी वस्तु द्वारा सत्कार करते हैं। इस अवसर पर सिवइयों का ऐसा प्रचलन हो गया है कि वह ईद का एक प्रतीक (SYMBOL) बन गई हैं, इसका भी सम्बन्ध विशेषकर हिन्दुस्तान से है दूसरे इस्लामी देशों में किसी भी प्रकार की मिठाई एवं इत्र से सत्कार किया जाता है।

बक़रईद में कुर्बानी का आयोजन तथा उसकी महानता

ईदुल–अज़हा (बक़रईद) में केवल कुर्बानी की अभिवृद्धि हो जाती है। इसमें सदक–ए–फ़ित्र नहीं दिया जाता। इस के अतिरिक्त एक अन्तर यह भी है कि ईद शव्वाल मास की पहली तारीख को होती है, जब कि बक़रईद ज़िलहिज की दसवीं तारीख को होती है। यह वह दिन है जब कि मक्का मुकर्रमा में हाजी हज की समस्त प्रक्रियाओं से निवृत्त हो जाते है, और मिना में अल्लाह के ज्ञान, ध्यान, उपासना, कुर्बानी और अल्लाह की प्रदत्त की हुई वस्तुओं को प्रयोग करने तथा खान पान में व्यस्त होते हैं। दूसरा अन्तर यह है कि ईदुलफ़ित्र एक दिन की होती है जब कि ईदुलअज़हा तीन दिन (१०,११,१२,जिलहिज)। ईदुल–अज़हा की नमाज़ तो एक ही दिन अर्थात १०, जिलहिज को पढ़ी जाती है, परन्तु कुर्बानी १२, जिलहिज को सूर्य अस्त होने तक की जा सकती है। ईदुल–अज़हा के अवसर पर एक बात यह भी है कि ६, जिल हिल की फ़ज्र की नमाज़ के बाद से १३, जिलहिज की अस्र की नमाज़ तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कुछ विशिष्ट शब्द ऊँची आवाज में कहे जाते हैं, जिनमें खुदा की बड़ाई का एलान और उसका गुण गान होता है। इनको तकबीराते तशरीक कहते हैं जिनका अर्थ अग्र लिखित है:–

अल्लाह सबसे बड़ा है–अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है– अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह ही का शुक्र अदा किया जाता है।

कुर्बानी के गोश्त के तीन भाग किये जाते है। एक भाग अपने घर वालों और अपने प्रयोग तथा आतिथ्य हेतु दूसरा भाग मित्रों एवं पड़ोसियों के लिये और तीसरा भाग अनाथों तथा गरीबों के लिये। यह दिन खान पान हेतु निर्धारित किये गये है और ईदुल–फ़ित्र के एक दिन तथा ईदुल–अज़हा के तीनों दिन रोज़ा रखना निषिद्ध है। सामान्यतः मुसलमान ईदुल–अज़हा के दिन सन्तुष्टि पूर्ण खाते

पीते हैं और बहुत से लोगों को वह वस्तुएं उपलब्ध हो जाती है और गोश्त की इतनी मात्रा खाने मे आती है जो बहुधा साल भर उपलब्ध नहीं होती।

दोनों त्योहार मुसलमानों के अन्तर्राष्ट्रीय त्योहार हैं

ईदुल–फ़ित्र तथा ईदुल–अज़हा मुसलमानों के विश्वव्यापी एवं अन्तर्राष्ट्रीय त्योहार हैं, जिनमें शास्त्रीय एवं धार्मिक मान में किसी प्रकार का मतभेद नहीं और किसी युग मे भी इनके प्रति कोई आक्षेप नहीं किया गया, और लगभग समस्त देशों मे चाहे वह देश बहुसंख्यक हो अथवा अल्पसंख्यक, उनके मनाने के ढंग और उनके व्यावहारिक तथा धार्मिक स्वरूप में कोई विशेष अन्तर नहीं, और यह उन समस्त धार्मिक क्रियाओं तथा प्रथाओं की विशेषता है, जो कुर्आन मजीद और हदीस शरीफ़ से प्रमाणित तथा मुसलमानों में निरन्तर एवं अनवरत् रूप से चली आ रही हैं।

दूसरे त्योहार

अब हम यहां उन त्योहारों का वर्णन करते हैं, जो किसी सीमा तक स्थानीय एवं स्वदेशी हैं और जिनमें से कुछ का महत्व केवल भारत वर्ष में हैं, और उनमें बहुत से ऐसे तत्व एवं अनेक बातें सम्मिलित हो गई हैं जो हिन्दुस्तान के बाहर कोई मान नहीं रखतीं या उनके कार्यान्वित ढंग भिन्न हैं।

१२, रबीउल–अव्वल का हर्ष एवं उल्लास पूर्ण उत्सव

इन त्योहारों और हर्ष एवं उल्लासपूर्ण उत्सवों में सबसे अधिक महत्व एवं सार्वजनिकता १२, रबी उल–अव्वल को प्राप्त है। इस्लामी कलेन्डर के हिसाब से वर्ष के तीसरे महीने रबी–उल–अव्वल की १२, तारीख को पैग़म्बरे–इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म हुआ था। संसार के अधिकांश देशों में इस दिन खुशी मनाई जाती है। बड़े–बड़े सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है, जिनमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र एवं आदर्श जीवन, आपके संदेश तथा आप की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला जाता है। हिन्दुस्तान, मिस्र, तथा कुछ और देशों में इन सम्मेलनों का विशिष्ट विषय जन्म के बारे में वर्णन करना होता है, इसी कारण इन सम्मेलनों को जलस–ए–मीलाद अथवा मीलाद शरीफ़ की संज्ञा दी जाती है। इसकी विभिन्न प्रणालियां प्रचलित है। जन्म का वर्णन करते समय बहुत जगह सलाम पढ़ा जाता है और उस अवसर पर सम्मान हेतु खड़े हो जाने का प्रचलन है, जिसको क़याम (खड़े होना) कहते हैं। इस अवसर पर रोशनी करते, बहुत ज्यादा रोशनी एवं सजावट और विशेष रूप से पिंडाल सजाने का रिवाज हो गया है। मिठाई बांटने का भी आम रिवाज है। धर्म सुधारक संस्थाएं और अधिकांश यर्थाथवादी विचारधारा रखने वाले विद्वान तथा ज्ञानी पुरूष, इन समारोहों के वाह्य रूप के, जो मीलाद की मजलिसों का आवश्यक अंग बन गये है, इसके विरूद्ध हैं। वह इन समारोहों को सरल तथा उद्देश्यपूण्र बनाने के आवाहन देते हैं और इनकी रसूलूल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन चरित्र से सम्बन्धित सच्ची प्रमाणीक घटनाओं तथा प्रभावात्मक एवं मनोरम कथाओं और आपके सन्देशों का प्रचार एवं प्रसार करने तक सीमित देखना चाहते हैं, और उस बड़ी धन राशि को जो साज सज्जा तथा रोशनी आदि की सजावट में पानी की तरह बहाई जाती है और जिसका अनुमान केवल हिन्दुस्तान में कई करोड़ रूपया वार्षिक तक लगाया जाता है, उन अवसरों पर व्यय करने का आवाहन करते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षानुसार, और मुसलमानों तथा मानव जाति के लिये अधिक लाभप्रद हों। कुछ बड़े शहरों में इस दिन बड़े बड़े जुलूसों के निकालने का भी रिवाज हो चला है। अब मीलाद के जलसों में नातिया मुशायरे एक आवश्यक अंग बन गए है, जिनका क्रम रात भर चला करता है।

मुहर्रम तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न रीति–रिवाज

इस्लामी कलेण्डर के हिसाब से वर्ष का प्रथम मास मुहर्रम है। यह महीना इस्लाम से पूर्व भी तथा उसके बाद भी प्रतिष्ठा, सम्मान तथा मान मर्यादा का महीना समझा जाता था, और बहुत सी शुभ एंव मंगलमयी घटनायें १०, मुर्हरम को घटित हुई। जिसमें से एक महत्वपूर्ण घटना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तथा बनी इसराईल का फ़िरऔन के अत्याचार से छुटकारा पाना, मिस्र से निकल कर सीना प्रयाद्वीप में कुशलता पूर्वक पहुंच जाना तथा फ़िरऔन का अपने लाओ लशकर सहित डूब जाना है। इसी की यादगार में मदीना मुनव्वरा के यहूदी आशूरा (१०, मुहर्रम) को रोज़ा रखते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा छोड़ कर मदीना मुनव्वरा पधारे तो आपने फ़रमाया कि हमारा सम्बन्ध हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से यहूदियों की अपेक्षा कहीं अधिक है, अतः हम को उनसे अधिक खुशी मनाने और शुक्र (कृतज्ञता) अदा करने का अधिकार है, आपने स्वयं रोज़ा रखा और मुसलमानों को रोज़ा रखने का आदेश दिया। रमज़ान के रोज़े (तीस

अथवा उन्तीस) अनिवार्य होने से पूर्व यही रोज़ा मुसलमानों पर फ़र्ज (अनिवार्य) था। जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हुए तो आशूरा का रोज़ा ऐच्छिक तथा नफ्ल रह गया। अब भी संसार के विभिन्न भागों में धार्मिक मुसलमान यह रोज़ा रेखते हैं और भारत में सुन्नी मुसलमानों में इसका प्रचलन है।

एक शोक पूर्ण घटना की याद और उससे सम्बन्धित विभिन्न वर्गों की रस्में

परन्तु इस मुबारक उल्लासपूर्ण महीने के साथ जिससे वर्ष आरम्भ होता है, एक अशोभनीय, अभाग्यपूर्ण तथा शोकजनक घटना सम्बन्धित है, जिसको याद करके हर मुसलमान का हृदय दुखी और उसकी गरदन शर्म से झुक जाती है। यह नवास–ए–रसूल, जिगर गोश–ए–बुतूल, हुसैन बिन अली की शहादत है, जो ठीक आशूरे के दिन हुई वह इसी दिन यजीद के मुकाबले मे लड़ते हुए (जो खिलाफ़त के तख्त पर आसीन हो गया था, और शाम में बैठ कर उस समय के इस्लामी संसार पर प्रशासन करता था) करबला के मैदान में १० मुहर्रम सन् ६१ हिज्री को शहीद हुए, तथा उनके परिवार के अनेक युवक भी लड़ते हुए शहीद हुए। यही वह घटना है जिसकी यादगार में शिया हज़रात मुहर्रम में ताजिये तथा अलम निकालते हैं, मातम करते हैं, शोक प्रदर्शन हेतु मज्लिसें आयोजित होती हैं। मुहर्रम के प्रारम्भिक दस दिन और फिर सफ़र मास की २०, तारीख जो चेहल्लम कहलाती है, इसी शोक प्रदर्शन तथा मातम–व–शेवन में गुजरती है। ईराक तथा ईरान में जहां शिया सम्प्रदाय की बड़ी संख्या है और अवध में जहां एक सौ छत्तीस वर्ष तक शिया खानदान की हुकुमत रही है, और उसमें भी विशेष कर लखनऊ में मुहर्रम की बड़ी धूम धाम और उससे सम्बन्धित रीतियों का आयोजन होता है। मुहर्रम की रीतियों में (जैसा कि समस्त स्थानीय रीतियों का दस्तूर है) हर जगह स्थानीय विशेषताएं विद्यमान हैं। कहीं ताजियादारी का बड़ा जोर है, कहीं कम। मातम और शोक प्रदर्शन के रूप भी विभिन्न हैं। कहीं इस बारे में परिवर्तन एवं सुधार किए गए हैं और कहीं पुरातन परिपाटी अब भी प्रचलित हैं, और उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

सुन्नी मुसलमान सामूहिक रूप से इन रसमों में भाग नहीं लेते, उनका दृष्टिकोण मुहर्रम के बारे में अपने शिया भाईयों से पूर्णतया भिन्न हे। वह हज़रत हुसैन (रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु) द्वारा उठाए गये पद को सत्यपक्षी, उचित, सराहनीय और उनसे सम्बन्धित घटना को सत्यप्रियता, सिद्धान्तप्रियता, पुरूषत्व, साहस, वीरता, निर्भीकता और पराक्रम का एक अद्वितीय एवं अनुपम कारनामा समझते हैं। उनको वह हर प्रकार से उत्पीड़ित एवं उनके क़ातिलों और विरोधियों को अत्याचारी समझते हैं, परन्तु उनके अनुसार अपनी भावनाओं एवं संवेगों को प्रदर्शित करने की यह रीति एवं पद्धति इस्लाम की प्रवृत्ति के विरूद्ध और उनके लिए निरर्थक एवं लाभ रहित है, जिनके नाम पर यह सब कुछ मनाया जाता है। वह केवल बखशिश की दुआ और पुण्यात्मक कार्यों पर बस करते हैं। और उनके आदर्श से वास्तविक लाभ उठाना और सत्य पर जमे रहने तथा असत्य के सामने डट जाने को उनकी शहादत का मूल सन्देश समझते हैं। अतः उनमें से धार्मिक सिद्धान्तों पर जीवन व्यतीत करने वाले लोग और जो अपने विश्वासों तथा धार्मिक शिक्षा से भली भांति अवगत हैं, वह इन रीति रिवाजों से पृथक रहते हैं, लेकिन मुसलमान जन साधारण की एक बहुत बड़ी संख्या अब भी बहुत स्थानों पर बड़े धूम धाम से ताजियादारी करती है, और उनके स्थानों पर ताजियादारी की शोभा उन्हीं के दम से क़ायम है। इन सुन्नी मुसलमानों के कतिपय स्थानों पर अपने अपने विचारों में अपनी विशेषता बनाएं रखी है और वह दमेचार यार का नारा बलन्द करते हैं।

शबे–वराअत् में मुसलमानों की परम्परा

ईदों, १२, रबीउलअव्वल तथा मुहर्रम के बाद फिर सबसे प्रसिद्ध और सार्वजनिक त्योहार शब्बराअत् का है। यह इस्लामी कलेण्डर अनुसार आठवें महीने की पन्द्रहवीं रात को होती है। मुसलमानों में इसके सम्बन्ध में इस प्रकार की धार्मिक निष्ठा है, कि इस रात में हम सबका पैदा करने वाला एवं पालनहार मनुष्यों के प्रति अगले वर्ष के लिए आयु, रोजी और सौभाग्य एवं दुर्भाग्य का निर्णय करता है अतः यह रात्रि दुआ एवं उपासना में बीतना चाहिए। बहुत से धार्मिक पुरूष तथा महिलायें १५, शाबान को रोज़ा रखती है और यह मुस्तहब है। हिन्दुस्तान में इस दिन हलवा तैयार करने का आम रिवाज है और वह खाया खिलाया और मित्रों को भेजा जाता है। सूर्यास्त पश्चात् धार्मिक मुसलमान कुरआन शरीफ़ का पाठ करते हैं, अपने और अपनी औलाद तथा मित्रों के लिये दुआ करते हैं। बहुत से लोग इस रात क़ब्रिस्तान जाते है और अपने रिश्तेदारों, पूर्वजों तथा मित्रों की कब्रों पर फ़ातिहा पढ़ते हैं और उनकी बख्शिश के लिये दुआ करते हैं। वैधानिक रूप से निषिद्ध होने पर भी नगरों में इस दिन महिलाओं के क़ब्रिस्तान जाने का रिवाज भी होता जा रहा हे।

एक नितान्त अनुचित, अशुद्ध तथा इस्लामी परम्परा के विरूद्ध क्रिया

इस धार्मिक त्योहार की सबसे विचित्र तथा अशोभनीय विशेषता एवं रिवाज, आतशबाजी है, जो केवल हिन्दुस्तान की विशेष उपज है। इस रात में लाखों रूपये आतशबाजी में फूंक दिये जाते है और एक कहावत, "घर फूंक कर तमाशा देखना" को वास्तविकत रूप प्रदान किया जाता है। विद्वानों द्वारा विरोध प्रकट करने तथा सुधारात्मक परामर्श देने के उपरान्त भी इस, इस्लामी विचारधारा के विपरीत प्रथा, में कोई विशेष कमी नहीं आई है। हिन्दुस्तान के अतिरिक्त कहीं और इस रिवाज के न होने से ऐसा आभास होता है कि कदाचित यह दीवाली का अनुकरण मात्र है।

जुमुअतुलविदाअ (अलविदा) का वार्षिक समारोह और नमाज़ का विशिष्ट रूप से आयोजन

जुमुअतुलविदाअ ने भी एक त्योहार, तथा एक वार्षिक समारोह का रूप धारण कर लिया है। रमज़ाने मुबारक (रोज़ो का मास) के अन्तिम जुमा को जुमु–अतुलविदाअ कहते हैं। उस दिन स्नान तथा नगर की सबसे बड़ी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का मुसलमान विशेष आयोजन करते हैं। दूर दूर के देहातों, गांवों तथा कस्बों से लोग निकटतम नगर में नमाज़ पढ़ने के लिये आते है, विशेष रूप से दिल्ली की जाम–मस्जिद में बहुत बड़ी जमाअत होती है। जिसमें सम्मिलित होने के लिए बहुत बड़ी संख्या में लोग दूसरे नगरों तथा दूरस्थ स्थानों से आते हैं और वह एक प्रकार से ईद की नमाज़ मालूम पड़ती है। इस्लाम के प्रारम्भिक काल में इस समारोह का कोई संकेत नहीं मिलता, और हदीस तथा फिक़्ह में इसका कोई उल्लेख नहीं।

कुछ और ऐतिहासिक दिवस तथा उनसे सम्बन्धित रिवाज

२७, रजब का दिन भी मुसलमानों में पवित्र समझा जाता है। सामान्य रूप से यह मशहूर है कि इस दिन पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम को मेराज हुई थी। इसना अशरिया (शिया) सम्प्रदाय के लोग भी सत्ताइसवी रात्रि को महत्व देतें हैं और उस दिन दीवाली के समान रोशनी करते हैं, क्योंकि इस तारीख को हज़रत अली (रजियअल्लाहु तआ़ला अन्हु) का जन्म हुआ था। ११, रबीउस्मानी को बड़े पीर साहब हज़रत अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह, जो इस्लाम के सुप्रसिद्ध बुजुर्ग तथा आध्यात्मिक नेता है, की ग्यारहवीं की जाती है। इस दिन मिठाई या खाने पर उनका फ़ातिहा होता है, लोग दावतें भी करते हैं।

कुछ विशुद्ध हिन्दुस्तानी मुसलमानों के उत्सव

उन त्योहारों के अतिरिक्त जो किसी न किसी रूप में हिन्दुस्तान के बाहर भी पाये जाते है, और उनका कुछ न कुछ महत्व है, कुछ ऐसे उत्सव भी हैं, जो बिलकुल हिन्दुस्तान की उपज है और देश के बाहर उनकी कोई परिकल्पना नहीं। यथा–रजबी जिसमें लगभग साठ,सत्तर वर्ष से कूंडों का रिवाज हुआ है, नौचन्दी जुमेरात (मास का प्रथम बृहस्पतिवार) और वह मेले जो हिन्दुस्तान के बुजुर्गों के मजारों पर प्रत्येक वर्ष लगते हैं, जैसे ग़ाजी मिंया का मेला जो बहराईच में लगता है, और अन्य बुजुर्गों के उर्स जिनकी एक लम्बी सूची है, और जिनमें सबसे अधिक जन प्रिय तथा प्रसिद्ध उर्स अजमेर का है, जो रजब मास की पहली छः तारीख तक होता है, और दूर दूर से यात्री इसमें सम्मिलित होने के लिए आते है। मुसलमानों की वे संस्थाएं जो विशद्ध इस्लामी दृष्टिकोण रखती हैं और प्रत्येक क्रिया के लिए कुरआन हदीस तथा इस्लाम के प्रारम्भिक काल का उदाहरण प्रमाण तथा तर्क के रूप में मांगती है, इन मेलों तथा उर्सों के, विरूद्ध है। सम्भवतः भारत की प्राचीन परम्परा और यहां की जीवन विधियों ने भी इन हम पल्ला मेलों तथा उत्सवों को विराट तथा वैभवशाली ढंग से मनाने में पथ प्रदर्शन किया।

0522-256005

Asif Bhai Saree Wale

M.A. Saree Bhandar

Manufacturer & Supplier of :

Chickan Sarees & Suit Pieces

In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646

Bombay Jewellers

The Complete Gold & Silver Shop

84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

न्याय के लिए साहसिक क़दम

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

दक्षिणी अफ्रीका का शासक मुहम्मद बिन अग़लब अपने ज्ञान, सूझ बूझ और प्रताप के कारण बड़ी ख़्याति व लोकप्रियता का मालिक था। उसकी सेनाएं अनुभवी और बहादुर सेनापति इब्न रबीअ के नेतृत्व में निरन्तर सफलताएं हासिल कर रही थीं। इसी बीच रबीआ ने एक ज़बरदस्त लड़ाई में फ़तह हासिल की और बहुत सी नकदी, सोना, चांदी व जवाहरात के साथ शहर में दाखिल हुआ। उसके साथ कैदियों में कुछ आज़ाद और शरीफ महिलाएं भी थीं, जिन्हें रबीअ ने अपने महल में भिजवा दिया। जन्ता ने उसका भव्य स्वागत किया। नारों ढोल ताशों और नक्कारों की आवाज़ से शहर गूंज उठा।

अमीर मुहम्मद बिन अगलब ने हुक्म दे रखा था कि विजयी कमांडर का अधिक से अधिक सम्मान व स्वागत किया जाए और भव्य उत्सव मनाया जाए। शहर की पूरी आबादी खुशी में मस्त थी। उधर न्याय की मूर्ति, सच्चे और निडर क़ाज़ी सहनून अपनी अदालत में मौजूद है। उनका विशेष और विश्वसनीय प्रतिनिधि अदालत में पहुंचता है और काजी साहब को सूचित करता है कि सेना पति रबीअ ग़नीमत के माल के साथ कुछ शरीफ़ औरतों को भी कैदी बनाकर लाया है।

क़ाज़ी सहनून यह सुनकर बेचैन हो गए क्या यह संभव है कि रबीअ आज़ाद औरतों को कैदी बनाकर लाए। मेरे होते हुए ऐसा घोर अत्याचार नहीं हो सकता। इसी बीच उनके बेटे मुहम्मद कमरे में दाखिल होते है, तो अपने बाप को क्रुद्ध व उत्तेजित पाते हैं। सही हालात जानने के बाद कहा कि अब्बा जान आप क्या कर सकते है? रबीअ जंग में सफलता प्राप्त करके वापस हुआ है। हुकूमत उसकी पूरी तरह आभारी है, उसकी रक्षक व संरक्षक है। अमीर खुलकर उसका विरोध नहीं कर सकता है।

क़ाज़ी सहनून ने भी पूरे मामले की ज़टिलता पर विचार किया और इसके बाद न्याय की सुरक्षा और शरीअत की रक्षा के लिए एक अटल फैसला कर लिया।

न्यायलय के सहायकों को बुलवाया और उनसे कहा कि न्याय के रक्षकों की एक जमाअत एक हजार जवानों को तैयार करें। सहायकों ने शहर के लोगों से सारी बात बतायी तो एक हजार सशस्त्र शक्ति शाली नवजवान क़ाज़ी सहनून की सेवा में हाजिर हो गए। काज़ी साहब ने इनमें से सौ नवजवानों को चुना और शेष की सावधानी के तौर पर रोक लिया। नवजवानों को कुछ मालूम नहीं था कि उनको क्या करना है? क़ाज़ी सहनून ने उक़बा बिन नाफ़ेअ की मस्जिद में मगरिब की नमाज़ अदा की। इसके बाद उन चुने हुए नवजवानों से फरमाया:

' मैं शरअी फ़र्ज़ के अनुसार तुम्हें आदेश देता हूं कि तुम इसी समय सेनापति रबीअ के घर जाओं और दरवाजे पर दस्तक दो, जब दरवाजा खुल जाए तो उसे मेरा सलाम कहो उसके बाद मेरा यह सन्देश पहुंचाओ कि उन महिलाओं को आज़ाद कर दे जिन को वह गिरफ्तार करके लाया है। सचेत रहना कि वह दरवाज़ा बन्द न करने पाएं वर्ना वह अपने साथियों के साथ तुम्हारा मुक़ाबला करने के लिए अवसर पा जाएगा और इसके नतीजे में मार काट होगी, जो उचित नहीं है। यदि वह मेरे इस सन्देश को न माने और इन्कार करें तो तुम्हारे सात बुजुर्ग आदमी अन्दर दाखिल होकर आवाज़ दें, ऐ गिरफ्तार की जाने वाली औरतो! काज़ी ने तुमको अपने यहां पहुंचने का हुक्म दिया है, इसलिए तुम सब बाहर निकल आओ। जब वे औरतें निकल आएं तो उनको मेरी अदालत में पेश करो।'

काज़ी साहब का दस्ता सेना पति के महल पहुंचा और थोड़े से संघर्ष के बाद औरतें क़ाज़ी साहब की अदालत में पहुंचा दी गयीं। सेनापति रबीअ उसी समय अमीर के महल की ओर चल दिया, मगर दरवाजे बन्द हो चुके थे। उसने रात महल की दीवार से टेक लगाकर गुजार दी। सुबह सवेरे कपड़े फाड़ कर रोता हुआ अमीर मुहम्मद बिन अगलब की सेवा में पहुंचा और पूरी कहानी सुनायी और कहा कि क़ाज़ी सहनून को इस हरकत की सज़ा दें और औरतों को वापस दिलाएं।

अमीर ने क़ाज़ी साहब के नाम तत्काल एक पत्र लिखा और आदेश दिया कि रबीअ की मांग को पूरा करें। क़ाज़ी साहब ने कहा: कसम है उस

जात की जिसके सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं है, इन औरतों को कदापि वापस न करूंगा, चाहे मुझे काजी के पद से ही क्यों न हटा दिया जाए। फिर उन्होंने अपने बेटे मुहम्मद को बुलाया और उनको राजा के पत्र का जवाब लिख कर दिया।

'ऐ मेरी कौम! मैं तुम्हे निजात की दावत दे रहा हूं और तुम मुझे जहन्नम की ओर बुला रहे हो। तुम मुझे खुदा से कुफ़्र व शिर्क करने पर तैयार कर रहे हो। मैं तुम्हें सबसे बड़ा और माफ़ करने वाले, प्रभुत्वशाली व उच्च हस्ती की ओर बुला रहा हूं। बेशक तुम मुझसे जिस बात की, मांग कर रहे हो उसका दुनिया व आखिरत में कोई महत्व नहीं है। हम सब खुदा से जा मिलने वाले हैं और अत्याचार व दमन करने वाले ही जहन्नम के ईंधन बनेंगे।'

काजी साहब ने अपने बेटे मुहम्मद को अमीर बिन अग़लब के पास भेजा और स्वयं वसीयत नामा तैयार किया और अपनी बेटी खदीजा को घरेलु मामलों के बारे में हिदायतें दीं। काज़ी सहनून के साथियों का विचार था कि अमीर पत्र पढ़ कर अपने सेनापति की हिमायत में काज़ी सहनून को गिरफ्तार करा लेगा या इससे भी बड़ी सज़ा देगा। गिरफ्तार की गयी औरतें रिहाई की प्रतीक्षा कर रहीं थी, जनता सोच रही थी कि समस्या बड़ी पेचीदा हो गयी है, न्याय व्यवस्था और सरकार के बीच भयानक लड़ाई है। अमीर के सामने दो रास्ते है, यदि सेनापति नाराज़ हो जाता है तो सेना भड़क जाएगी और विद्रोह का खतरा है और यदि वह काजी साहब को नाराज करता है तो खुदा तआला की नाराज़गी मोल लेता है और जनता उत्तेजित हो जाती है।

मुहम्मद बिन सहनून पत्र लेकर राजा के सम्मुख पहुंचते है। काज़ी साहब के त्याग पत्र की ओर भी इशारा करते हैं। अमीर मुहम्मद बिन अगलब ने पत्र पढ़ा और बिना कुछ कहे घर के अन्दर चला गया और तीन दिन तक घर से नहीं निकला न किसी से बात की। उधर मुहम्मद बिन सहनून जवाब के और सेनापति रबीअ के फैसले की इन्तजार में रहे। तीन दिन की खामोशी के बाद अमीर अबुल अब्बास मुहम्मद निकले और तुरन्त सेनापति रबीअ को बुलवाया और उससे कहा कि तुम तो अपने आपको रोक लो। सेनापति ने उनकी बात मान ली। तब अमीर ने मुहम्मद बिन सहनून को बुलाकर कहाः

'अपने बाप से मेरा सलाम कहो और कहो कि अल्लाह आपको अच्छा बदला प्रदान करे। आपने पहले भी और इस समय भी बड़ा अच्छा कारनामा अनजाम दिया है आप अपना काम करते रहें और अपनी दृढ़ता दिखाते रहें।'

काजी सहनून ने सन्देश सुनकर अल्लाह का शुक्र अदा किया। कैदी औरतों को उनके घर हिफ़ाज़त के साथ भिजवाया और लोगों को और नवजवानों को वापस भेज दिया।

क़ाज़ी कीरवान की कर्तव्य परायणता और उच्च आचरण

दक्षिण अफ्रीका की प्रसिद्ध राजधानी कीरवान के निकट एक तटीय कसबे में एक महान विद्वान, नेक बुजुर्ग, मुत्तकी और परहेजगार फकीह शैख ईसा बिन मिस्कीन राजकाज के मामलों से अलग रहकर पढ़ने पढ़ाने और लिखने लिखाने के कामों में व्यस्त हैं। उनके पास कुछ खेती योग्य ज़मीन है। उनमें जौ और सब्जियां उगाकर उसी से अपनी गुजर बसर करते हैं। इसके अलावा न उन्हें कोई इच्छा, न अभिलाषा। अपने हाल में मस्त और अपने काम से सन्तुष्ट। कीरवान की अदालत के रजिस्ट्रार इब्न ज़रयाब कहते है कि शैख ईसा बिन मिस्कीन अपने मकतब में शिष्यों को पाठ पढ़ाने मे व्यस्त थे कि दूर से एक तेज सवार आता नज़र आया। उसने शैख के घर के सामने आकर सवारी रोकी और पूछा कि शैख ईसा कहां हैं? उनको अभी कीरवान के शासक अमीर इब्राहीम बिन अगलब ने बुलाया है।

लोग सन्देश सुनकर घबरा गए। शैख ईसा ने बड़े इत्मीनान और शान से कहा कि अब क्या आदेश है? मैं काजी का पद स्वीकार करने से पहले ही माफी मांग चुका हूं और इस एकान्त–वास को बेहतर समझा है। शाही सन्देश वाहक ने कहा कि मुझे केवल यह हुक्म मिला है कि तुरन्त आपको लेकर दरबार में हाजिर हो जाऊं।

शैख ईसा अपने शिष्यों और घरवालों से विदा होकर कीरवान पहुंचते है और दरबार में उनको शैख हमदीस अशअरी के बराबर में आसन मिलता है। अमीर इब्राहीम बिन अगलब शैख को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि उस व्यक्ति के बारे में आपकी क्या राय है, जिसमें सारे गुण पाए जाते हों और देश का शासक उसे काज़ी के पद पर बिठाना चाहता हो ताकि उसके द्वारा मुस्लिम समुदाय में एकता और अखंडता

पैदा हो जाए, लेकिन वह व्यक्ति पद को स्वीकार करने से इन्कार करता रहे।

शैख ईसा ने कहा कि उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। अमीर ने कहा यदि वह इनकार करता रहे तो? शैख ने कहा उसे मजबूर किया जाएगा और यदि वह फिर भी इनकार करे तो उसे कोड़े लगाए जाएं तब तक कि वह स्वीकार न कर ले।

अमीर इब्राहीम ने हंसते हुए कहा तो फिर आप इस पद को स्वीकार कर लीजिए। यह बातचीत आप ही के बारे में है।

शैख ईसा ने फिर क्षमा चाही तो तलवार उनकी गर्दन पर रख दी। शैख़ हमदीस अशअरी बयान करते हैं कि मैं दूर हट गया कि कही मेंरे कपड़े शैख ईसा के खून से खराब न हो जाएं। शैख ईसा ने यह पद इस शर्त के साथ स्वीकार किया कि उनके फैसलों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा और वे जो भी फ़ैसला करेंगे उसे लागू किया जाएगा। अमीर ने उनकी शर्तें मान ली। शैख ईसा बिन मिसकीन ने न्याय संबंधी जिम्मेदारियां निम्न तरीके पर विभाजित कीं।

१. शैख अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अल मफ़रज बिन अल अलबनना को अपना सहायक नियुक्त किया।

२. एहतसाब (जवाब देही, जांच कार्य और निरीक्षण) का दायित्व शैख़ अबुल कासिम के हवाले किया।

३. तुरन्त दिये जाने वाले फैसलों का काम शैख सुलैमान बिन सालिम और इब्राहीम बिन खश्शाब को दिया।

४. वक्फ़ सम्पत्तियों और तरके में मिलने वाली विरासत की तकसीम के फैसले के काम शैख अबु बकर बिन लुबादा के जिम्मे किया।

५. रजिस्ट्री और दफ्तरी जिम्मेदारी शैख इब्न जरयाब को सौंपी।

शैख ईसा ने बड़े सोच विचार के बाद यह जिम्मेदारियां सौंपी थी। गंभीरता, सदाचार, सादगी और विनम्रता से लोगों ने सोचा कि शैख ईसा नम्र स्वभाव और नर्म दिल वाले है, इसलिए फैसलों में नर्मी बरतेंगे और उपेक्षा से काम लेने वाले काज़ी होंगे। मुख्य रूप से शैख ज़रयाब को कुछ अधिक ही गलत फहमी रही। इब्न ज़रयाब को यह भी घमंड था कि उसका अमीर के दरबार में बड़ा प्रभाव है, अतः उसे दरबार की संरक्षकता प्राप्त होगी।

अतएव एक दिन रोज़ की तरह फ़ज्र की नमाज़ के बाद प्रमुख काजी शैख ईसा और उनके सहयोगी अन्य काजी अपने अपने स्थानों पर आकर बैठ गए। वादी और प्रतिवादी भी पहुंच गए। लेकिन रजिस्ट्रार इब्न ज़रयाब अनुपस्थित थे। समय काफी बीत गया चीफ जस्टिस ने इब्न ज़रयाब के बारे में बार बार पुछा और कार्यवाही शुरू करने का आदेश दिया। उन्होंने मुख्य रूप से शैख अबू सईद तमीमी के मुकदमे के बारे में कार्यवाही शुरू करने का आदेश दिया, क्योंकि वे बहुत सवेरे से आए हुए थे और कमजोर व बूढ़े थे, लेकिन अदालत के कारन्दों ने कहा कि सारी फाइले इब्न ज़रयाब के पास हैं।

काजी ईसा ने सोचना शुरू किया फिर कहा कि शैख अबू सईद और दूसरे लोगों को बुलाया जाए ताकि देरी के लिए उनसे क्षमा मंगवाई जा सके। लेकिन देरी हो जाने के कारण अनेक लोग जा चुके थे।

बहुत देर के बाद इब्न ज़रयाब बड़े ठाठ से चमक दमक के कपड़े पहनकर अदालत पहुंचे, तो काजी ईसा ने उनसे देर से आने का कारण मालूम किया। उन्होंने बड़े रूखेपन से जवाब दिया कि वे अपने एक दोस्त अबुल कासिम बिन अब्बास के यहां एक प्रोग्राम में भाग लेने के लिए गए थे, वहां देरी हो गयी।

दोनों के बीच कुछ सुवाल व जवाब हुए। इसके बाद काजी ईसा ने फैसला सुनाया कि इब्ने ज़रयाब का यह समय मुसलमानों की सेवा के लिए निर्धारित था जिसका वेतन लेते हैं, इस समय में वे शादी के प्रोग्राम में चले गये, जिसके कारण उन्होंने एक धार्मिक दायित्व को अदा करने में कोताही की है। इसलिए उन्हें कैद की सजा दी जाती है। अतः इब्ने ज़रयाब जेल भेज दिये गए।

अस्र की नमाज़ के बाद जेल का दरोगा इब्न ज़रयाब का क्षमा पत्र लेकर आया, जिसमें यह वायदा किया गया था कि अब आगे कभी वे ऐसी गलती नहीं करेंगे, चाहे कितना ही जरूरी काम हो। काजी साहब के दोनों साथियों इब्न बन्ना और इब्न लुबाद ने कहा कि इतनी ही सजा काफी है, रिहाई का आदेश दे दिया जाए। तब काजी साहब ने आदेश दिया इशा की नमाज़ के बाद इब्ने ज़रयाब को रिहा कर दिया जाए।

इस घटना के बाद से इब्ने मिसकीन नौ साल काजी के पद पर रहे, इस अवधि में उनसे कभी कोई कोताही या गलती नहीं हुई अमीर अगलब ने भी अपना वायदा पूरा किया

और कभी मामले में हस्तक्षेप नहीं किया।

काजी ईसा बिन मिसकीन ने सरकार से या अमीर से या बैतुल माल से वेतन के नाम पर या इस काम के बदले एक दिरहम भी नहीं लिया। उनके घर से जौ का आटा आता और सब्जी आती थी। वह स्वयं खाना पकाते और खाते थे। नौ साल के दौरान केवल एक बार इंजीर और एक बार खरबूजा खाया।

उनके एक सहायक इब्ने दयोस बयान करते हैं कि वे काजी साहब से मुलाकात के लिए एक जुमा को पहुंचे। दरवाजे पर दस्तक दी तो उन्होंने एक पट खोला। मैंने देखा कि वे केवल लुंगी पहने हुए हैं और अपने कपड़े स्वयं धो रहे हैं। मालूम किया कि किस काम से आए हो? मैंने कहा कि केवल मुलाकात के लिए लेकिन आप व्यस्त हैं तो लाईए मैं पानी डाल देता हूं। आप धोइये या मैं धोता हूं आप पानी डालें। काजी साहब ने फरमाया कि तुम्हारे पास और कोई काम नहीं है? और दरवाजा बन्द करके अपने काम में लग गए। मैं वापस चला आया।

इसी उच्च आचरण के आधार पर काजी इब्ने मिसकीन बड़े लोकप्रिय थे।

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

तूफान और जोश

उसके दोनों हाथ हथकड़ियों में ऊपर बंधे हुए थे, पैरों में बेड़िया थीं, अमरीकी फौजी उसे उसके मुजाहिद भाई के ना मिलने पर दो दिन पहले घर से घसीट लाए थे। उसकी इज्जत को चुकना चूर किया जा चुका था, उसके बदन को बार बार सिगरेट से दाग़ दिया जाता, और उस नीम जान के तड़पने पर इराक की अबू ग़रीब जेल का सारा स्टाफ खुश हो रहा था। उसके जख़्मों से खून बह रहा था, उसकी चीख और आहें आखिरकार खामोश हो गई। जेल में हथकड़ियों में जकड़े काबुल, कंधार, फलूजा, मोसल और करबला व बग़दाद में बमों और गोलियों की बौछाड़ का निशाना बनने वालों की मजलूमियत ६ अरब इंसानों के हजूम से कोई मदद ना पा सकी, मगर उनकी शहादत का गर्म खून जमीन में बहते–बहते समद्र के पानी में जा मिला, तो उसकी गर्मी से सीना–ए–समुद्र में गुस्सा और जलाल की लहरें दौड़ने लगी। वाशिंगटन और लंदन के हुक्मरानों की संगदिली आग और बारूद में झुलसते हजारों इंसानों को देखकर तो नर्म ना हुई मगर जलते हुए इंसानी गोश्त की बदबू समुद्र तक पहुंची तो उसकी सांस रूक गयी, वह सदमे और गुस्से से कांपने लगा, समुद्र की तह में सैकड़ों मील नीचे बहता हुआ लावा खोलने लगा, पानियों में हलचल हुई, जमीन पुकार उठी या रब्बुल आलमीन! मैं तेरे हर हुक्म कुदरत की फरमांबरदार, फिरऔनों, नमरूदों के जुल्म से तंग हो गई हूं। सितारों के टूटने और सूरज के बेनूर हो जाने का लम्हा अभी तक कितनी दूर है? खुदाया! बुश और टोनी बलेरो और शेरूनों का यौमे हिसाब कब आयेगा, जमीन की सिसकीयां समुद्र ने सुनी तो उसके सब्र व बरदाश्त का पैमाना लबरेज हो गया। मशरिके बईद में ज़ेरे आब चटाने उस जोर से फटीं कि अफ्रीका तक पानी के पहाड़ बुलन्द हो गये और पांच हजार किलोमीटर की रफ्तार से जंजीरों और साहिलों से इस जोर से टकराए कि आने वाहिद में हंसती मुस्कराती इंसानी आबादीयों को सूखे पत्तों की तरह बहा कर ले गए। इस अंधेरे को दूर करने के लिए पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति कलिंटन और मौजूदा राष्ट्रपति के पिता जार्ज बुश चंदा इकट्ठा कर रहे है, जो फौजी अमरीका ने फलूजा में इराकी अवाम की मदद के लिए भेजे थे और वह फैक्टरियों, रिहाईशगाहों, मकानों इबादतगाहों, गलियों, बाजारों को तबाह करके और इराकियों को कत्ल करके उनकी मदद करते रहे ऐसे ही फौजी श्रीलंका और इंडोनेशिया भेजे गए है, जबकि जो सेवाएं उन्होंने इराक में अंजाम दी वही सेवाऐं सुनामी तुफान खुद अंजाम दे चुका है। सवाल यह है कि इंडोनेशिया श्रीलंका के लोगों को मुसीबतों से बचाना और फिलस्तीन अफगानिस्तान और इराक के आवाम पर जुल्म करना और उन की आजादी छीन लेना यह दोनों अदाऐं इंसानियत नवाज़ इंसाफ कैसे कहला सकती है, क्या राष्ट्रपति बुश और प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर इराक और अफगानिस्तान से अपनी फौज वापिस बुलाना पसंद करेंगे ताकि इन देशों के अवाम भी इज्जत और आजादी के साथ सुख की सांस ले सकें। (अल अहरार पन्द्रह रोजा) १.२.०५

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

प्रसिद्ध ग़ैर मुस्लिम विद्वानों की दृष्टि में

मुहम्मद सरवर फारूकी नदवी

'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के रचयिताओं के अनुसार–

"मुहम्मद के स्वाभाव में हर विषय की तह को पहुंच जाने का एक प्राकृतिक गुण था, यद्यपि सर्वथा अनपढ़ थे, बल्कि अरबी भाषा की काव्य–कला से अनभिज्ञ थे इसी के संकेत के तौर पर कुरआन की एक सविख्यात और प्रसिद्ध सूरः में उनसे यूँ कहा गया है–

"हमने मुहम्मद को काव्य–विद्या नहीं सिखाई और न उनके लिए कवि होना आवश्यक है।"

यह बात सर्व सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद (आप पर ईश्वर की दया और कृपा हो) पढ़ना लिखना बिल्कुल नहीं जानते थे और यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि आपके पास कुर्आन आने तक किसी धर्म का यह कोई ग्रन्थ नहीं पहुंचा था, फिर विचार करने की बात है कि ऐसे विद्या और ज्ञान शून्य देश और जाति में पैदा होकर और उसी में जवान होकर भी आपको इतना ज्ञान कहां से प्राप्त हो गया कि आपने इतना बड़ा सार्वभौम और विश्वव्यापी क्रान्ति उत्पन्न कर दी? आपकी शिक्षा ने संसार के सारे देशों, सारी जातियों और सारी सभ्यताओं पर समय–समय में प्रभाव डाला। भारत जैसा धर्म, संस्कृति और विद्या, ज्ञान से परिपूर्ण और सम्पन्न देश भी इस्लाम के प्रभाव से नहीं बचा और आपके बाद अब तक कोई इतना बड़ा धर्म–नेता नहीं हुआ। सारे पहेलुओं पर विचार करने के बाद यह मानना ही पड़ेगा कि आप ईश्वर के पैगम्बर थे और आपका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान था।

अत्यन्त तेजस्वी पुरूष–

एक ईसाई विद्वान, जिसका नाम मुहलर है, हज़रत मुहम्मद साहब को पैग़म्बर न मानने वालों से सुवाल करता है–

"यह किस तरह सम्भव है कि एक धार्मिक ज्वाला जो यद्यपि एक जंगल से उठी थी, मगर जिसने इतने कम समय में आश्चर्यजनक रूप से सारे एशिया में भड़का दी, वह ऐसे हृदय से निकली हो, जिसमें उसकी कुछ भी गर्मी मौजूद न हो।" (एजाजुत्तंज़ील, पृष्ठ १२४, बहवाला 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' – विषय 'मुहम्मद और उनका मज़हब।)

मिस्टर टाम्स कार्ल– उन लोगों के खंडन में, जो हज़रत पैग़म्बर (सल्ल०) पर झूठे दोष लगाते हैं, लिखतें हैं।

"हां ऐसा हरगिज़ नहीं, यह पैनी दृष्टि वाला व्यक्ति जो जंगली मुल्क में पैदा हुआ, जो मनोआकर्षक काली आंखों और प्रफुल्ल और शिष्टापूर्ण और विचारशील स्वभाव के साथ अपने दिल में मान–सम्मान की इच्छा के विपरीत कुछ और विचार रखता था। वह एक शान्तिमय और असाधारण शक्तियों वाली आत्मा थी और उन लोगों में से था, जो सत्यवान होने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकते, जिसको खुद प्रकृति ने सच्चा और सत्यप्रिय पैदा किया था, जबकि और लोग अंध विश्वासों और संस्कारों पर चल रहे थे और उन्हीं पर सन्तुष्ट थे। यह व्यक्ति उन विश्वासों और संस्कारों में नही रह सकता था और अपनी आत्मा और पदार्थो के तथ्याओं की जानकारी में वह औरों से भिन्न था। जैसाकि मैंने वर्णन किया है सर्वशक्तिमान का रहस्य अपने प्रताप और सौन्दर्य के साथ उस पर प्रकट हो गया था और इस तथ्य पर जिसका वर्णन करने में वाक्शक्ति असमर्थ है और जिसने अपने प्रति 'मैं यहां हूं' प्रयुक्त किया। पुरानी कथायें पर्दा न डाल सकीं, और ऐसा सत्य जिसका कोई श्रेष्ठतर शब्द न मिलनें की वजह से हमने सत्य नाम रखा है, वास्तव में ईश्वरीय चिह्नों में से एक चिह्न है। ऐसे व्यक्ति की बात एक वाणी है, जो बिना किसी सम्बन्ध के सीधे ईश्वरीय प्रकृति के हृदय से निकलती है, जिसे इन्सान सुनते हैं और जिसके सुनने में और चीज़ों के मुक़ाबले में अधिक ध्यान की जरूरत है, क्योंकि इसके मुकाबले में सब कुछ तुच्छ हैं। शुरू ही से उसके दिल में हज के अवसरों पर एवं प्रतिदिन के इधर–उधर के चलने फिरने में तरह–तरह के हजारों विचार पैदा होते थे। मसलन यह कि मैं क्या हूं? जीवन क्या है? मृत्यु क्या है? मुझे किस बात का यकीन करना चाहिए और क्या करना चाहिए? जिनका (मक्का के) हिरा और (शाम के) सीना (पहाड़) के बड़े–बड़े पत्थरों के ढेरों और कठोर सुनसान

रेतीलों, जंगलों ने कुछ जवाब न दिया और सिर पर चुपचाप चक्कर खाने वाले आसमान ने भी अपने नीले प्रकाश वाले नक्षत्रों के समेत कुछ न बताया, मगर बताया तो केवल उसी की आत्मा ने और ईश्वरीय ज्ञान ने जो उसमें था।

(एजाजुत्तन्ज़ील, पृष्ठ १२५–१२६)

जर्मन इतिहासकार डोश के अनुसार

"हर्ष और विषाद, प्रेम और ममता, शौर्य और वीरता की यह विशाल पुकार जिसकी कुछ हल्की–सी आवाजें हमारे कानों में आती हैं, मुहम्मद (सल्ल०) के समय में पूरी–पूरी आवाज़ रखते थे। मुहम्मद (सल्ल०) को सबसे ज्यादा सुभाष्य और उच्च–भाष्य लोगों से क़ेवल बराबरी ही नहीं करनी पड़ी बल्कि उन पर श्रेष्ठता भी प्राप्त करनी पड़ी और अपने कथन की सुभाष्यता और उच्चता को अपनी पैगम्बरी के दावा का प्रमाण भी बनाना पड़ा। मुहम्मद (सल्ल०) से पहले कवियों ने बहुत सी प्रेममयी कविताओं की रचना की थी। अन्तरा ने जिसके प्रेम का हाल एक प्रसिद्ध कथा में लिखा है और इमरउलक़ैस ने, जिसे मुहम्मद (सल्ल०) ने अरब के कवियों का सरदार मगर नर्कवासियों का नेता कहा है, प्रेम के नितांत उच्च और चन्द्रमुखी, रजत वदन प्रेमिकाओं का नेता कहा है, प्रेम के नितांत उच्च और दिव्य कोटि के पदों की रचना की थी और शराब–कबाब और चन्द्रमुखी, रजत वदन प्रेमिकाओं की प्रशंसा में भाषा की सरलता और अलंकार की सरिता बहा दी थी। मगर मुहम्मद (सल्ल०) ने न प्रेममयी पद छन्दबद्ध किया, न प्रेममयी कविता कही, न इस नश्वर संसार के दुख–सुख को छन्दबद्ध किया, न कोई विशेष वर्णन किया, जिससे मालूम हो कि उनके निकट मानव–काया का कोई तथ्य ही नहीं और इसके लिये केवल विनाश है। सारांश यह, कि उन्होंने लोगों को कविता और वार्ता नहीं सिखाई, बल्कि इस्लाम सिखाया, और इस प्रकार सिखाया कि धरती और आकाश को चीर कर स्वर्ग और नरक को साकार बनाकर दिखा दिया।"

(एजाजुत्तंज़ील पृष्ठ ६३)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के समय में यहूदियों और ईसाइयों में जो बुरी मान्यतायें और कुरीतियां फैल गई थीं, उनको बयान करने के बाद मिस्टर वास्वर्थ स्मिथ अपनी पुस्तक 'मुहम्मद एण्ड मुहम्मदइज़्म' में लिखते है–

"मुहम्मद (सल्ल०) इसलिए आये कि उन सारी झूठी बातों पर झाड़ू फेर दें। मूर्ति क्या है? जैतून की लकड़ी के टुकड़े, जो खुदा होने का दावा करते है, उनकी वास्तविकता क्या है? भ्रमजनक दार्शनिक विचार मकड़ी का तना हुआ जाल और अधर्म, इन सबको दूर करो। अल्लाह सबसे बड़ा है और उसके सिवा कोई चीज़ नहीं है। यही मुसलमानों की जीवन प्रणाली। एक आरोपक यह सवाल कर सकता है कि इन दोनों सिद्धान्तों में, जो ऊपर बयान हुये है। कौन सी बात ऐसी है, जिसको यह कहा जाये कि वह नई थी, या मुहम्मद (सल्ल०) ही को सूझी थी? निःसन्देह कोई नई बात नहीं थी, बल्कि ये बातें उतनी ही पुरानी थी, जितना मूसा का जमाना, बल्कि वास्तव में इतनी पुरानी जितने खुद हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) थे। मुहम्मद (सल्ल०) ने बार–बार अत्यन्त गंभीरता से जताया कि मैं अरबों के लिए कोई नई बात लेकर नहीं आया हूं, बल्कि इब्राहीम के धर्मशास्त्र को दोबारा जिन्दा करने के लिए आया हूं यह इससे गफिल हो गये हैं। कौम से अलग और शोकग्रस्त और नाखुश यहूदियों और आपस में लड़ने वाले तीन खुदाओं के कायल ईसाइयों और हर तरह की प्राणी–पूजकों में एक ऊंट हांकने वाला आया, इसलिरे नहीं कि वह उनको कोई नई बात सिखाये, बल्कि इसलिये कि जो पुरानी बातें वे भूल गए हैं, वे उनको याद दिला दें। अरब की ज़मीन पर दो हज़ार वर्ष पहले एक ऐसे शख़्स (हज़रत मूसा) को, जो जंगल में अपने बाप (ससुर) की बकरियां चरा रहे थे, यह सादा, मगर चौंका देने वाला सन्देश आया था– "मैं वह हूं, जो मैं हूं। सुन ऐ इसराईल! हमारा मालिक खुदा एक है। इसलिए जा! मैं तेरी ज़बान के साथ हूंगा और तुझे जो कहना चाहिये, वह तुझे सिखाऊंगा।"

इन शब्दों को सुनकर यह सम्मान प्राप्त कौम (बनी इसराईल) अफ़रीका से एशिया में चली गई। गुलाम आज़ाद हो गये और एक खानदान एक कौम बन गया।

उसी अरब की सरज़मीन पर अब फिर वही आवाज़ एक दूसरे बकरियां चराने वाले को आई और ऐसे असर के साथ आई, जो पहली आवाज से कुछ कम विचित्र या आम तौर पर दुनिया को फ़ायदा पहुंचाने में उससे हरगिज़ कुछ कम न थी। यानी 'अल्लाहु अकबर, लाइलाहइल्लल्लाहु, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' इस सन्देश देने वाले को कुबूल करके खुदा के सन्देश का एलान किया गया और एक सदी में उसकी आवाज़ की गूंज अदन से अन्ताकिया तक (एशियाई रूमी साम्राज्य

का केन्द्र) और सेबील (स्पेन का एक सूबा और शहर) से समरकन्द तक फैल गई और उन सारे मुल्कों ने उसकी सच्चाई को मान लिया।''

(एजाजुत्तन्ज़ील पृष्ठ २८–२६)

मिस्टर कारलायल लिखते हैं–

'' हम मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में कदापि यह विचार नहीं कर सकते कि वह केवल एक शुअबदाबाज़ और आत्महीन शख़्स थे और न हम उनके सम्बन्ध में यही कह सकते है कि वह एक नीच, अधिकार लोभी और जान–बूझकर मंसूबा गांठने वाले थे, उन्होंने जो कठोर और सख़्त सन्देश दिया यद्यपि वह एक ग़ैर–मुरत्तब कथन था, लेकिन इसके बावजूद उसका उद्‌गम वही व्यक्तित्व (ईश्वर) था, जिसकी थाह किसी ने नहीं पाई। उस शख़्स (हज़रत पैग़म्बर साहब) के न कथन ही झूठे थे और न कार्य ही और न वह सच्चाई से ख़ाली और किसी की नक़ल एवं अनुसरण थे। वास्तव में, जो प्रकृति के विस्तृत सीने से संसार को प्रकाशित करने के लिए निकला था और निःसन्देह उसके लिये ईश्वर का ऐसा ही आदेश था।'' (एजाजुत्तन्ज़ील पृष्ठ ५६, बहवाला' हीरोज एण्ड हीरोजवर्शिप' द्वितीय लेक्चर पृष्ठ ४३)

कट्टर ईसाई डा० स्पिरिंगर के अनुसार–

वह जिसके विचार में सदा खुदा की कल्पना रहती थी और जिसको निकलते हुए सूरज, बरसते हुए पानी और उगती हुई हरयाली में खुदा ही का हाथ दिखाई देता था और बादल की गरज, पानी की आवाज, ईश्वर की प्रशंसा में गाये जाने वाले चिड़ियों के गान में ईश्वर ही की वाणी सुनाई देती थी और सुनसान जंगलों और पुराने शहरों के खंडरों में खुदा ही के प्रकोपों के चिहन दिखाई देते थे।'' (एजाजुत्तन्जील पृष्ठ ३०,बहवाला 'लाइफ आफ मुहम्मद' पृष्ठ ८२, डाक्टर स्पिरिंगर द्वारा लिखित और १८५१ में इलाहाबाद से प्रकाशित)

कुरआन के अनुवादक रेवरेण्ड जी० एम० राडवेल लिखते हैं–

''यह अद्‌भुत और आश्चर्यजनक नमूना है उस शक्ति और आत्मा का जो ऐसे शख़्स में होती है, जिसको खुदा और परलोक पर दृढ़ता के साथ विश्वास होता है और जो अपने महान् व्यक्तियों और सत्यतापूर्ण आचरण के कारण हमेशा उन लोगों में गिना जायेगा, जिसको मानव–जाति के विश्वास, आचार और सारे सांसारिक जीवन पर ऐसा पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है, जो किसी अत्यन्त महान् कोटि के व्यक्ति के सिवा किसी और को नहीं प्राप्त हुआ और न हो सकता है।''

(एजाजुत्तन्जील पृष्ठ ३०, बहवाला भूमिका अनुवाद कुरआन, लिखित राडवेल साहब पृष्ठ २३ मुद्रित १८६१)

''आप जरा हमारे पैग़म्बर का ख़्याल कीजिये और उस स्थिति की कल्पना कीजिये जब केवल उनकी पत्नी ही उन पर ईमान लाई है, इसके बाद अत्यन्त निकटतम सम्बन्धी उन पर ईमान लाते हैं, इस बात से भी मुहम्मद (सल्ल०) के विषय में कुछ–न–कुछ पता चलता है। एक ऐसे समूह में से अनुयायी प्राप्त कर लेना सहज है, जो आपको नहीं जानता जो आपका केवल लिखा, लिखाया भाषण ही सुनता है या आपको कुछ सवालों का जवाब देने की हालत में देखता है। लेकिन अपनी पत्नी, अपनी बेटी और अपने दामाद और दूसरे निकटवर्ती सम्बन्धियों की नजरों में नबी हज़रत ईसा को भी प्राप्त नहीं हुई।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के चरित्र का वर्णन करते हुए मिसेज एनीबेसेन्ट कहती है–

''निस्सन्देह यह भद्रतापूर्ण जीवन है, एक अद्‌भुत और विचित्र जीवन है। वास्तव में वह ईश्वर दूत थे। लेकिन इसके बावजूद वह ऐसे मितव्ययताप्रिय, सरल और नम्र है कि अपने फटे हुए कपड़ो को खुद ही पेवंद लगा देते है, अपने जूतों की खुद मरम्मत कर लेते हैं। विशेषकर ऐसी हालत में कि हजारों (लाखों) आदमी उन्हें नबी और रसूल कहकर उनके सामने नतमस्तमक होते थे (यह ताबीर ग़लत है) और वह आस पास के लोगों से अत्यन्त प्रेम और नम्रता का व्यवहार करते थे। हज़रत अनस रजि०, जो आपके सेवक थे, कहते हैं कि मैं दस वर्ष आपकी सेवा में रहा। इस अवधि में कभी आप (सल्ल०) ने मुझको 'उफ' तक नहीं कहा।

''आपके विरोध में दो बड़े–बड़े दोषों का आरोपण किया गया है। एक यह कि आपने बुढ़ापे में नौ शादियां की। यही ठीक है, लेकिन क्या आप मुझ से यह कहना चाहते हैं कि जिस शख़्स ने ठीक युवावस्था में, जबकि वह केवल २४ बरस का था, एक ऐसी स्त्री से विवाह किया हो, जो उससे आयु में कहीं अधिक थी और २६ बरस तक उसका विश्वासपात्र पति रहा हो। पचास बरस की आयु में, जो काम–वासनाओं के पतन का काल है, उसने काम और इच्छाओं के प्रभाव से विवाह किये? मानव–जीवन इस मान

दण्ड से कभी परखे नहीं जा सकते। अगर आप उन स्त्रियों की अवस्था पर विचार करें, जिनसे आप (सल्ल०) ने विवाह किया तो आपको ज्ञात हो जायेगा कि उनमें से हर एक के द्वारा या मुसलमानों के लिये समझौता किया गया था या उनके लिए कुछ हासिल किया गया था, या उस स्त्री की सरंक्षण की कुछ ज़रूरत थी। लोग यह भी कहते हैं कि आपने युद्ध और काफिरों को मार डालने का उपदेश दिया। इसके सम्बन्ध में मुसलमान फ़क़ीहों (शास्त्र–आचार्यों) ने निर्णय कर दिया है कि जब दो आज्ञायें हों एक अबाध्य (बेशर्त) जैसे "काफिर को क़त्ल कर डालो।" और दूसरा बंधन पूर्ण (शर्तिया) जैसे "काफिरों को क़त्ल कर डालों, अगर वह तुम पर आक्रमण करे या तुम्हारे धर्म में बाधा डाले।" तो ऐसी हर अबाध्य आज्ञा पर उस बन्धन या बाध्य का बढ़ाना अनिवार्य है। और इस सिद्धान्त के कुरआन शरीफ़ में बहुत से उदाहरण मिलते हैं। आप (सल्ल०) की कार्य प्रणाली भी उसी के अनुसार थी।

अब तनिक आप (सल्ल०) की कार्य–प्रणाली को देखिये कि उन्होंने दूसरों को जो शिक्षा दी, स्वयं किस तरह उसके अनुसार व्यवहार किया। आप (सल्ल०) के साथ कोई ऐसी बुराई नहीं की गई, जिसे आपने क्षमा न कर दिया हो?

"ऐ मेरे भाइयों! इस व्यक्ति को इसी दृष्टि से देखो, जैसा वास्तव में वह है। द्वेष के पर्दे में उसे देखने का प्रयास न करो।"

(मासिक 'निजामुल मशायख़', दिल्ली, जुमादलऊला, १३३४ हिजरी)

मिस्टर बर्नार्डशॉ के अनुसार–

इंग्लैण्ड के विश्व विख्यात दार्शनिक और विद्वान मिस्टर बर्नार्डशॉ ने जनवरी १६३३ ई० में भारतागमन के अवसर पर 'लाइट' लाहौर के प्रतिनिधि से पैग़म्बरे इस्लाम के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किये थे वे मिस्टर बर्नार्डशॉ के शब्दों में यह है–

"हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को आसपास के रहने वाले लोग अमीन (धरोहर–रक्षक) कहकर पुकारते थे। गरीब लोग, जो कष्ट में पड़े होते, आपके पास परामर्श करने आते थे, क्योंकि उन्हें आपकी सच्चाई पर विश्वास था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अधिकतर एक निर्जन स्थान में गुफ़ा के भीतर ईश्वर उपासना में लीन रहते। एक रात जबकि वह ज़मीन पर लेटे हुए थे, आसमान से एक प्रकाश प्रकट हुआ और एक तेजस्वी रूप पर आपकी दृष्टि पड़ी, जिसने कहा–

उठ! तू खुदा का पैग़म्बर है। अपने पालनकर्ता का नाम लेकर पढ़। मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा – मैं क्या पढूं? इसके बाद उस दैवी आत्मा ने कुछ उपदेश दिया। (ताबीर ग़लत है) यह वह अद्भुत और विचित्र घटना थी, जिसने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन को सर्वथा बदल दिया। इसके पूर्व वह केवल 'अमीन' थे। मगर अब रसूल (सन्देष्टा) हो गये। उन्होंने जो सर्वप्रथम उपदेश लोगों को दिया, उसमें ईश्वर के एकतत्व का वर्णन था और मानव हत्या, मद्यपान और हर कुकर्म की निन्दा की गई थी। बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। वास्तव में यह अनुमान कठिन है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) लोगों के दिलों को मोहित करने की कितनी महान् शक्ति रखते थे।"

जार्ज बर्नाड शाह के अनुसार ह० मुहम्मद (सल्ल०)–

मैंने मुहम्मद (सल्ल०) के धर्म को सदैव उनकी आश्चर्यजनक शक्ति तथा सत्यवादिता के कारण, सर्वोच्च स्थान दिया है। मेरे विचार में मुहम्मद का धर्म विश्व का एक मात्र धर्म है जो हर काल की बदलती हुई आवश्यकताओं के प्रति आर्कषण रखता है। मेरा ईमान है कि यदि मुहम्मद (सल्ल०) जैसा व्यक्ति वर्तमान विश्व का शासक होता तो हमारी सारी पेरशानियां हल हो चुकी होतीं तथा पूरे विश्व में शान्ति व सुख समृद्धि होती।

मैं मुहम्मद (सल्ल०) के धर्म के सम्बन्ध में यह भविष्यवाणी करता हूं कि यह कल के यूरोप के लिए उतना ही स्वीकार करने योग्य है जितना कि आज के यूरोप के लिए। जो इसे स्वीकार करने का आरम्भ कर चुका है।

(Gedorge Bernard Shaw in "Islam Our Choice")

उस मुहम्मद (सल्ल०) से महान् व्यक्ति.....मानवता का रक्षक.... दुनिया कभी पैदा न कर सकेगी।

(Voltair in Philosphical Dictionary)

सभी धार्मिक व्यक्तियों में मुहम्मद (सल्ल०) सर्वाधिक सफल रहे हैं।

मैंने उनका अध्ययन किया है एक अद्भुत व्यक्ति होने से बहुत दूर। उन्हें तो अवश्य 'मानवता का उद्धारक एवं मुक्ति दिलाने वाला' कहना चाहिए।

(George Bernard Shaw in `The Genuine Islam` Col-1)

यदि किसी धर्म की सम्भावना है जो अगले १०० वर्षों से इंग्लैण्ड नहीं बल्कि पूरे यूरोप पर विजय प्राप्त कर सकता है तो वह धर्म है इस्लाम।

(George Bernard Shaw)

कौन सा दर है न जिस दर से कोई खाली फिरा

ख़ैरूनिन्सा बेहतर

कौन सी सरकार है जिसका है सबको आसरा
कौन सा दरबार है जिसमें है हर कोई खड़ा
कौन सा वह शाह है जिसका है हर कोई गदा
कौन सा दर है न जिस दर से कोई ख़ाली फिरा
आज उसी सरकार से मैं भी तो पाकर शाद हूं
आज उसी दरबार से मैं भी तो खुश होकर फिरूँ

हम गुनहगारों पे भी तेरा बड़ा एहसान है
नाम तेरा या इलाही कादिरे जी शान है
तेरा ही इनआम सब पर हर घड़ी हर आन है
तू जो चाहे दे तेरे नज़दीक सब आसान है
गो मैं इस काबिल नहीं हूँ है मगर सबको मिला
बेकसों का है तु ही फ़र्यदरस रब्बुलउला

या इलाही अब जहां में मुबतलाए ग़म न कर
दिल मेरा पुरग़म न कर और चश्म मेरी नम न कर
फ़िक्रे ग़म से हूँ मैं लाग़र पुश्त मेरी ख़म न कर
जो निगाहें रहम है मुझ पर तेरी वह कम न कर
दे रिहाई क़ैदे ग़म से ऐ ख़ुदा अब तू मुझे
बस बड़ी उम्मीद से मैंने पुकरा है तुझे

या इलाही वास्ता आदम सफीयुल्लाह का
या इलाही वास्ता मूसा कलीमुल्लाह का
या इलाही वास्ता तेरे ख़लीलुल्लाह का
या इलाही वास्ता अहमद हबीबुल्लाह का
अब तू दे ऐसी खुशी जिसमें न हो कुछ रंजो ग़म
जो रहे बाकी जहां में और कभी होए न कम

हज़रते युसुफ़ को जिस दम चाह में दहशत हुई
और निकलने की न वां, से जब कोई सूरत हुई
फिर जो तन्हाई से उन को उस घड़ी वहशत हुई
बाबे रहमत से तेरे हासिल उन्हें फरहत हुई
भेजकर जिब्रील को तूने तसल्ली दी उन्हें
बाद इसी तक्लीफ़ के फिर सलतनत बख्शी उन्हें

हो गये अय्यूब साबिर जब बला में मुबतला
रह गया उनको न कुछ भी ज़िन्दगी का आसरा
फिर पुकारा जब उन्होंने तुझको ऐ रब्बलउला
तू ने अपनी खास रहमत से उन्हें चंगा किया
वैसी ही कर आफ़ियत अब तू मरीजों का अता
या इलाही सुन ले मुझ नाचीज़ की तू यह दुआ

पेट में मछली के यूनुस जिस घड़ी नालां हुए
और परेशानी में फंस कर बे सरो सामा हुए
बार गह में जब तेरी वह लुत्फ़ के ख्वाहां हुए
तूने ऐसी की मदद जिससे कि वह शादा हुए
ऐसे ही अपने करम से ऐ ख़ुदाए पाक जात
मुश्किलें आसान कर और दर्द ग़म से दे निजात।

आतिश इब्राहीम पर की तूने जैसे गुलसितां
वैसे ही अब गुल्खने ग़म से मुझे भी दे अमा
गो हूँ मैं इक बदतरीने कमतरीने कमतरां
तेरी रहमत तो वही है कर मुझे भी शादमां
मुझ पे कर ऐसा करम जिससे कि बदनामी न हो।
मेरे कामों में मेरे अल्लाह नाकामी न हो।

तेरी रहमत पर नज़र करके मैं करती हूँ दुआ
चाहे बख्शे और जो चाहे करे तू है ख़ुदा
मुझ को तेरी ज़ात पर लेकिन भरोसा है बड़ा
और तेरे फ़ज़्ल का मुझको है हर दम आसरा
गर करे बेहतर मुझे तू फ़ज़्ल है तेरा बड़ा
क्या तलब तुझ से करे यह मुंह है किस काबिल मेरा

उन पे लाखों सलाम

लकब जिनको नबियों में रहमत मिला
उन्हीं के तू रस्ते पे हम को चला
दे तू अपनी महब्बत और उन की सदा
जो यहां रहनुमा हैं वहां रहनुमा
जो हैं महबूबे रब और अअ़ला मक़ाम
उन पे लाखों दुरूद और लाखों सलाम

तु है जानता मैं हूँ पापी बड़ा
तुने तौफीके तौबा भी दी है सदा
कर न रहमत से अपनी तू मुझको जुदा
हूं नबी की मैं उम्मत में बन्दा तेरा
जो हैं महबूबे रब और अअ़ला मक़ाम
उन पे लाखों दुरूद और लाखों सलाम

बिगड़ी तहज़ीब का मैं करूं क्या बयां
जिस तरफ देखो नंगी खुली लड़कियां
कपड़े पहने हैं ऐसे कि सब कुछ अयां
सदक़े महबूब के तेरी पाऊं अमां
जो हैं महबूब रब और अअ़ला मक़ाम
उन पे लाखों दुरूद उन पे लाखों सलाम

तू है मअबूद अकेला नहीं दूसरा
और मुहम्मद हैं तेरे नबी मुस्तफ़ा
होगी बख़्शिश न अब उन को माने बिना
मेरे रब अब वही हैं मेरे रहनुमा
जो हैं महबूबे रब और अअ़ला मक़ाम
उन पे लाखों दुरूद उन पे लाखों सलाम

जिन के एहसान हैं बे अ़दद बे शुमार
जिन की फ़ुरक़त में रहता है दिल बेक़रार
उनके सदक़े में सुन ले तू मेरी पुकार
मेरे रब उन नबी पर तू रहमत उतार
जो हैं महबूबे रब और अअ़ला मक़ाम
उन पे लाखों दुरूद उन पे लाखों सलाम

नाम हनफ़ी किसी का कि हो मालिकी
शाफ़अ़ी कोई कहलाए या हंबली
कोई नज्दी हो या कि हिजाज़ी कोई
जो है पैरौ नबी का बस है मुस्लिम वही
जो हैं महबूबे रब और अअ़ला मक़ाम
उन पे लाखों दुरूद और लाखों सलाम

(पृष्ठ ४ का शेष)

वह ज़िन्दा हैं पर तुम (उन की ज़िन्दगी को) समझते नहीं हो तो वफ़ात के बाद नबी की ज़िन्दगी की हक़ीक़त समझना हमारे लिये आसान नहीं है।

आख़िरी वक़्त में आप ने वसीयत फ़रमाई कि "नमाज़ की हिफाज़त करना और लौन्डी ग़ुलामों के साथ अच्छा सुलूक करना।" हम को चाहिये कि हम नमाज़ में कोताही न करें और अब लौन्डी ग़ुलाम तो रहे नही लिहाज़ा उन की जगह अपने मातहतों से अच्छा सुलूक करें। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह त़आ़ला की तरफ़ से एक ही वक़्त में चार से ज़ियादा बीवियां रखने की इजाज़त थी। उन हमारी माओं के ज़रीअे औ़रतों में इस्लाम की त़ालीम आ़म हुई और औ़रतों के मख़सूस अह़काम (नारी संबंधित विशेष नियम तथा आदेश) औ़रतों तक पहंचाने तथा समझाने में बड़ी आसानी हुई और भी बहुत सी मस्लह़तें होंगी जो हमारी नज़रों से ओझल हैं। चुनांचि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने हम मुसलमानों की मां ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के अ़लावा नीचे लिखी औ़रतों को भी हम मुसलमानों की मां बनने का शरफ़ (सम्मान) बख़्शाः–

१. ह़ज़रत सौदः (रज़ि०) इन से नुबूवत के दस्वे साल ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के इन्तिक़ाल के बाद निकाह़ हुआ यह उस वक़्त पचास साल की थीं।

२. ह़ज़रत आ़इशा बिन्त अबू बक्र (रज़ि०) इसी स० १० नुबूवत में इन से निकाह़ हुआ इनकी उ़म्र अभी कम थी इसलिये रूख़्सती हिजरत के बाद हुई।

३. ह़ज़रत ह़फ़्सा बिन्त फ़ारूक़ (रज़ि०) इन से शअ़बान ३ हिज्री में निकाह़ हुआ।

४. ह़ज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमाः इन से स० ३ हिज्री में निकाह़ हुआ और तीन माह बाद इनका इन्तिक़ाल हो गया।

५. ह़ज़रत उम्मे सल्मा बिन्त अबी उमय्याः इन से शअ़बान स० ४ हिज्री में निकाह़ हुआ।

६. ह़ज़रत ज़ैनब बिन्त जहश (रज़ि०): यह आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की फूफी ज़ाद बहन थी इन से स० ५ हिज्री में निकाह़ हुआ।

७. ह़ज़रत उम्मे ह़बीबः बिन्त अबी सुफ़्यान (रज़ि०) यह ह़ज़रत मुआ़वियः(रज़ि०) की सगी बहन थीं इन से स० ६ हिज्री में निकाह़ हुआ।

८. ह़ज़रत जुवेरीयः बिन्त ह़ारिस (रज़ि०) इन से भी स० ६ हिज्री में निकाह़ हुआ।

९. ह़ज़रत मैमूना बिन्त ह़ारिस हिलालीया, यह ह़ज़रत ख़ालिद बिन वलीद और ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की ख़ाला हैं। इन से स० ७ हिज्री में निकाह़ हुआ।

१०. ह़ज़रत सफीयः बिन्त हुयै से भी स० ७ हिज्री में निकाह हुआ, यह यहूदीयः थीं और ह़ज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं।

११. मारियः क़िब्तीयः इनको भी उम्मुल मोमिनी होने का शरफ़ हासिल है इन्हीं की कोरव से हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के बेटे ह़ज़रत इब्राहीम पैदा हुए।

१२. ह़ज़रत रैह़ाना बिन्त अम्र क़र्ज़ीयः भी हम मुसलमानों की मां है। अल्लाह तआ़ला इन सबसे राज़ी हुआ। इन में से औलाद सिर्फ़ ह़ज़रत ख़दीजा और मारिया किब्तीयः से हुई। यह भी वाज़िह रहे कि इन में सिर्फ़ ह़ज़रत आ़इशा कुंवारी थीं।

अल्लाह तआ़ला ने अपने आख़िरी नबी अ़लैहिस्सलाम को इतने मुअजिज़ात अ़ता फ़रमाए कि उन की गिन्ती मुश्किल है उन में से कुछ बड़े–बड़े मुअ़जिज़े यह हैं।

१. आप पर क़ुर्आन उतारा गया जो एक मुअ़जिज़ा है। ऐसा कलाम न कोई मख़लूक बना सकी है न बना सकेगी।

२. मिअ़राज आप का बड़ा मुअ़जिज़ा है। रातों रात आप को मक्के से बैतुल मुक़द्दस फिर वहां से आसमानों पर ले जाया गया। जन्नत दोख़ज़ के मनाज़िर दिखाए गये, अल्लाह तआ़ला से कुर्बत हुई बातें हुई।

३. आप की जुदाई में लकड़ी के खम्बे का इन्सानों की तरह रोना।

४. थोड़ा सा खाना सैकड़ों हजारों के लिये काफ़ी हो जाना, ऐसा बार बार हुआ।

५. थोड़ा पानी हजारों को काफी हो जाना यह भी बार बार हुआ।

६. बीमारों को शिफा पाना, नाबीनाओं का बीना हो जाना वगैरह।

७. कंकरीयों का तस्बीह़ पढ़ना।

८. गोह का आप की रिसालत की गवाही देना।

९. ऊंट का सज्दा करना, मज़लूम ऊंट का आप से शिकायत करना।

१०. पेशीन गोइयों का पूरा होना जैसे, अन गिनत मुअजिज़ात हैं। अल्लाह तआ़ला हम को आप की त़ालीमात पर साबित क़दम रखें और मैदाने हश्र में आप के मुबारक हाथों से कौसर का जाम पिलाएं और आप की शफाअ़त से हमको बख्श दें और हम से राजी हो जाएं। आमीन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व अ़ला आलिही व सल्लम।

एक वक़्त में चार से ज़ियादा बीवियां हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुसूसीयत थी।

तिब्बे नबवी

गुफ़रान नदवी

खाना और खाने के आदाब

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मानव जीवन के लिये हर आवश्यक बात बता दी है, चुनांचि खाने के आदाब (नियम) बहुत तफ़सील से बयान किये, खाना कैसे खाएं? शुरू कैसे करें? खाने के लिए बैठने का क्या तरीक़ा हो? एक जगह खाने की क्या बरकतें है? दूसरों को खाने में शरीक करना किस कदर ख़ैर व बरकत का ज़रया है? खाने से पहले और बाद में कौन सी दुआऐं मसनून है? ग़रज़ खाने के बारे में शायद ही कोई ऐसा अहम सवाल होगा जिसका जवाब इरशादाते नबवी में मौजूद न हो।

जायज़ ग़िज़ाएं (आहार)

किसी ग़िजा के जाएज़ या नाजाएज़ होने की बुन्यादी शर्तें दो हैं।

पहली शर्त यह है कि हलाल हो दूसरी शर्त यह है कि वह तय्यिब (पाक) हो, जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है "ऐ लोगो जो कुछ ज़मीन में है उसमें से खाओ हलाल और तय्यिब"– (अल बक़रह १८६)

हलालः– वह चीज़ जिसकी शरीअत ने इजाज़त दी हो, और उसके इस्तेमाल (प्रयोग) को मना (वर्जित) न किया हो, जैसे दूध, घी, फल, सब्जी, हलाल जानवरों का गोश्त वग़ैरह।

इस इजाज़त के साथ ही ज़रूरी है कि वह हलाल चीज़, जाएज़ तौर पर ही हासिल की गई हो, नाजाएज़ कमाई या नाजाएज़ तरीके से हासिल न की गई हो, जैसे डाका, चोरी से रिश्वत या ज़बरस्ती या किसी नाजायज़ ज़रीये मआ़श (अवैधानिक जीविका साधन. से)–

तय्यिब (पाक):– ग़िज़ा के लिये हलाल होने के अलावा दूसरी शर्त उसका तय्यिब (पाक होना है) कैसी ही हलाल चीज़ क्यों न हो और कैसे जाएज़ तरीक़े से क्यों न हासिल की गई हो, अगर उसमें नजासत और नापाक चीज़ की मिलावट हो जाए तो वह जाएज़ नहीं रहती, हम इन शर्तों को इस मिसाल (उदाहरण) से स्पष्ट करते हैं।

मुर्ग़ हलाल है, शरीअ़त ने उसका गोश्त हलाल क़रार दिया है लेकिन ज़रूरी है कि चोरी का न हो, नाजाइज़ तौर पर हासिल न किया गया हो, मुर्दार का गोश्त न हो, बल्कि बाकाइदा ज़बह किया गया हो, इन तमाम बातों के बावजूद अगर हाँडी में नजा़सत गिर जाए तो सारा धरा का धरा रह जायेगा, और ना काबिले इस्तेमाल हो जाएगा किस क़दर अफ़सोस का मुक़ाम है कि ऊँचे तबक़े से तो हलाल हराम की तमीज़ ही उठती जा रही है, अगर आम लोगों में इस मआ़मले में एहतियात है तो जाइज़ नाजाइज़ ज़राए (साधन) का ख्याल नहीं रहा, और पाकी नापाकी की इहतियात तो बिलकुल ही नहीं रही।

कुछ हराम ग़िज़ाएं:– मुर्दार जानवर, बेशक तुम पर मुर्दार जानवर का ग़ोश्त हराम किया गया है। (अल बक़रहः १७३)

हराम जानवरों में ख़ास तौर पर यह तफ़सील क़ाबिलेग़ौर।

१. अलमैतः (मुर्दार जानवर) ज़बह के बग़ैर बीमारी या किसी वजह से या तबई (स्वाभाविक) मौत मर जाने वाला जानवर।

२. अलमुन खनिक़ः (गला घुट कर मर जाने वाला जानवर)

३. अलमौक़ूजः (चोट लग कर मर जाने वाला जानवर)

४. अलमुत रद्दियः (गिर कर मर जाने वाला जानवर)

५. अननतीहः (सींग की चोट से मुर्दार हो जाने वाला जानवर)

६. दरिन्दे (हिंसक जंतु) के खाने से मर जाने वाला जानवर

७. जो किसी थान पर ज़बह किया गया हो, यानी किसी बुत वग़ैरह के स्थान पर चढ़ाया गया हो,

८. जिस पर अल्लाह के अलावह किसी और का नाम पुकारा गया हो यानी वह जानवर जो अल्लाह के अलावह किसी और के नाम पर ज़बह किया गया हो हराम जानवरों का तफ़सीली ज़िक्र कुरआन मजीद के निम्न लिखित स्थानों पर मौजूद है।

अल बक़रहः१७३, अलमाइदः ३
अननहलः ११५

मुर्दार जानवर का गोश्त हराम है इस मनाही में बड़ी हिकमतें (गुण) पोशीदा हैं, चाहे हम इन हिकमतों की तह तक न पहुंच सकते हों, अल्लाह के आज्ञापालन ही में हमारी भलाई पोशीदा (छुपी) है, किसी जानवर की मौत के कारण निम्नलिखित है:–

बुढ़ापे और शरीर की कमज़ोरी की वजह से मौत की घटना हो अर्थात इतना कमज़ोर हो गया हो, कि जीने की ताक़त न रही हो,

कोई शारीरिक रोग लग गया हो और क्या मालूम उससे उसके शरीर और गोश्त में किस कदर बिगाड़ पैदा हो गया हो।

मौत का कारण कोई बाहरी हानि या ज़हरीला माद्दा (विषैला तत्व) उसके समाप्त होने का कारण हो, किसी ज़हरीले कीड़े, मकोड़े, सांप वग़ैरह, ने उसे डस लिया हो और उसका ज़हर मौत का कारण बना हो, इनमें से कारण कोई भी हो उससे मुर्दार जानवर का गोश्त ज़हरीले असरात, फ़ासिद माद्दे (विकृत तत्व) हानिकारक खून और हानिकारक कीटाणु से मरा होगा और बेख़बर खाने वाले के लिये शारीरिक रोगों का कारण बन जाएगा।

यूँ भी जो जानवर ज़बह किये बग़ैर मर जाएगा और उसका ख़ून न बहेगा उसके ज़हरीले माद्दे (विषैले तत्व) शरीर में रह जाएंगे।

जो जानवर बुतों के स्थान पर चढ़ाए गए हों या ग़ैर अल्लाह के नाम पर ज़बह किये गए हों उनका गोश्त ख़ाना अक़ीदे के बिगाड़ का कारण होगा, चुनांचि अल्लाह तआ़ला ने तमाम मुर्दार जानवरों का गोश्त हराम क़रार दिया है।

कुछ हराम ग़िजाएं खिनज़ीर (सुअर) का गोश्त

"बेशक तुम पर हराम किया गया है मुर्दार जानवर और खून, और सुअर का गोश्त" (सूरह बक़रः १७३)

इस आयत के अलावा सुअर के गोश्त की मनाही का हुक्म कुरआन करीम में कई जगह मौजूद है, जैसे सूरह माइदाः३, सूरह अनआ़मः १४५ सूरह नहलः ११५, वग़ैरह। इसी तरह हुज़ूर ख़त्मी मरतबत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस गन्दे और हद दर्जे नजिस मकरूह जानवर के गोश्त को बिल्कुल हराम क़रार दिया है। चुनांचि रासिख़ुल अक़ीदा (पक्के मुसलमानों) को इससे इस क़दर नफ़रत रही है कि वह इस जानवर का नाम लेना गवारा नहीं करते है, सूरह अनआ़म की आयत १४५ में अल्लाह तआ़ला ने उसे (रिज्स और फ़िस्क) कहा है यानी हद दर्जे गन्दगी और हुकम इलाही से नाफ़रमानी।

खिनज़ीर (सुअर) दुनिया के नजिस तरीन जानवरों मे से है कूड़े पर मुंह मारता फिरता है, गन्दगी खाता है। गन्दी आदतें रखता है, हया शर्म उसके करीब नहीं फटकी, उसका मिज़ाज हद दर्जे गर्म है, उसका खून हानिकारक कीटाणु का भन्डार है और उसका गोश्त रूहानी और जिसमानी रोगों का मजमूअः (समूह) है।

सुअर के गोश्त के बारे में जदीद तरीन (आधुनिक) सांइसी तजज़िये (अनवेशण) हद दर्जे इबरत अंगेज़ (शिक्षा पूर्ण) है, इनसे खुलकर यह बात सामने आती है कि उसके निरन्तर प्रयोग से चर्म रोग, जिगर और अनतड़यों की बीमारियाँ पेचिश और दस्त, मसाने (मूत्र कोष) की खराबी, पेट में कीड़ों की ज़ियादती, हृदय रोग, और सरतान (कार बंकल) की बीमारी पैदा होने वाला सोलियम कीड़ा अनतड़यों में पहुंच जाता है, जिसके नतीजे में मिंगी पैदा होती है, उसकी चर्बी के इस्तेमाल से खून में कोलिस्ट्रोल बढ़ते हैं जिससे शिरयाने तंग हो जाती है शिरयानों के सुकुड़ जाने से ब्लेड सरकुलेशन में रूकावट पैदा होती है, जिसके नतीजे में फ़ालिज का हमला और दिल का दौरा, रोग होता है। आमतौर पर सुअर का गोश्त खाने वाले की खाल पर बारीक बारीक दाने हो जाते है जो एक पूर्णरूप से चर्मरोग का रूप धारण कर लेते हैं। इनके अलावा बहुत से ऐसे रोग हैं जिनका कारण केवल सुअर का गोश्त है, कुरआ़न मजीद के अलावा मुकद्दस इनजील में भी सुअर के गोश्त को हराम क़रार दिया गया है, यह और बात है कि तमाम यूरोप वाले इसके रसया हो चुके है और उनकी देखा देखी उनकी नक़्ल में दूसरे लोग भी उसके शौक़ीन हो गए है, जबकि यह मानी हुई हक़ीक़त है कि सुअर का गोश्त खाने वाली कौमें और लोग उस बेहया जानवर की तरह शर्म हया से ख़ाली हैं। मादह सुअर एक नर से गर्भवती नहीं होती एक के बाद दूसरा बारी बारी कई नर उससे जुफ़्ती करते हैं।

जबकि दूसरा कोई जानवर यह बेग़ैरती बर्दाश्त नहीं करता–

ऐसा जानवर जिसका गोश्त मनुष्य की आत्मा और आचरण को दुष्टि कर दे और वह बहुत से रोगों का समूह बन जाए, उसके करीब भी जाना अक़ल और बुद्धि के ख़िलाफ़ है।

कुछ हराम गिज़ाएं–खून खाने पीने की हराम चीज़ों में दूसरे नंबर पर खून है, उसके हराम होने का ज़िक्र कुर्आन मजीद में मुर्दार जानवर और सुअर के साथ साथ बार बार हुवा है– हराम का अर्थ है किसी चीज से रोक

(शेष पृष्ठ २४ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

शख्स की तरह होता है जो खाता है लेकिन उसका पेट नहीं भरता।

हज़रत हकीम पर इसका ऐसा असर हुआ कि इस के बाद उन्हों ने किसी का हदीया (उपहार) भी कबूल नहीं किया।

ग़ुस्साः

जब उन को ग़ुस्सा आता है तो मुआफ़ कर देते हैं।

(शूराः ३७)

मुसलमान को चाहिये कि वह अपने गुस्से पर काबू रखे और बेसबब उसको जाहिर न करे, अल्लाह तआला ने अच्छे मुसलमानों की यह तारीफ की है कि वह अपने गुस्से को दबा लेते हैं। सुकून की हालत में मुआफ़ कर देना आसान है लेकिन गुस्से की हालत में जब आदमी काबू से बाहर हो जाता है तो मुआफ़ करना मुश्किल होता है मगर तारीफ़ इसी में है कि मुसलमान उस वक्त भी मुआफ़ करे। हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमायाः पहलवान वह नहीं है जो दूसरे को पिछाड़ दे, पहलवान वह है जो गुस्से में अपने को काबू में रखे। एक आदमी ने हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा कि मुझे नसीहत फरमाइये! आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया! गुस्सा न किया करो। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) गुस्से के तीन इलाज (उपाए) बताए हैं।

१. फ़रमाया ग़ुस्सा शैतान से है और शैतान आग से बना है और आग को पानी ठन्डा करता है तो जिस को गुस्सा आए वह वुज़ू कर ले।

२. फरमायाः जिस को गुस्सा आए वह अगर खड़ा है तो बैठ जाए, अगर इससे भी गुस्सा कम न हो तो लेट जाए।

३. फरमाया कि मुझे ऐसा कल्मा मालूम है कि अगर उसको कह ले तो गुस्सा जाता रहे और वह यह हैः "अअूजु बिल्लाह मिनश्शैतानिर्रजीम" इस को कह लें।

(पृष्ठ २३ का शेष)

देना, रोकने की वजह कभी उसकी बड़ाई और पाकी होती है जैसे (बैतुल्लाहिल हराम) हराम होने की दूसरी वजह उसकी ख़राबी होती है जैसे मुर्दार जानवर का गोश्त, सुअर कुत्ते और खून वगैरह का हराम होना।

खून, शरीर के तमाम कीटाणु, विषैले तत्व, हानिकारक असरात और बीमारियों का धारक होता है। उसकी तेज़ी व गर्मी हद से ज़ियादह होती है, इसी से उसके हानिकारक प्रभाव का अन्दाज़ा किया जा सकता है, अल्लाह तआला ने खून को हराम क़रार देकर अपनी हिकमते बालिग़ा से इन्सान पर करूणा और दया का उपहार किया है

मिडेकल रिसर्च के अनुकूल यह बात प्रमाणित है कि खून, पीने वाले की अनतड़ियों में पहुंचता है तो उसके कीटाणु एमोनिया पैदा करते है जिससे जिगर की खराबी और कई प्रकार की बीमारियां लग जाती है।

क़ादियानियों का धोखा

क़ादियानी यही कुर्आन पढ़ते और पढ़ाते हैं लेकिन क़ुर्आन मजीद में जहां भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्रे ख़ैर आया है क़ादियानी लोग उससे ग़ुलाम अहमद मुराद लेते हैं। कितना बड़ा धोखा देते हैं।

(पृष्ठ ३१ का शेष)

का जीना कठिन कर दिया था, अत्याचार का कोई तरीक़ा नहीं छोड़ा था मक्का पर विजय पाने के बाद आप (सल्ल०) ने यह एलान फ़रमाया–

अनुवाद–"आज के दिन तुम पर कुछ मलामत (धिक्कार) नहीं जाओ तुम सब आज़ाद हो।"

सारांश यह है कि आप (सल्ल०) की तालीम व तर्बियत (शिक्षा दीक्षा) जिसने दुश्मन तक के दिल जीत लिए और जिस ने एक वहशी (जंगली) क़ौम को सभ्यता के उच्च स्थान तक पहुंचाया उसकी विशेषता यह थी कि उसकी तालीम केवल एक फलसफ़ा या दर्शन न थी बल्कि वह एक मुसलसल अमल थी। आप (सल्ल०) की मुबारक जिन्दगी की हर हर अदापूर्ण शिक्षा थी जो दिलों पर असर करती थी।

अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी

गुलाम अहमद क़ादियानी ने अपना एक नाम मुहम्मद भी बताया है इसलिये क़ादियानी क़ल्मे में जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम आया है उस से ग़ुलाम अहमद मुराद लेते हैं।

मो० असलम
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

हाजी सफीउल्लाह
एण्ड सन्स
ज्वैलर्स

नगीना मार्केट
अकबरी गेट, लखनऊ

गड़बड़ झाला के सामने,
अमीनाबाद रोड, लखनऊ

दूसरी किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

ह़ज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़माना

अ़ब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी

ओहद –३ हि०

मक्का मोकर्रमह में बद्र की प्राजय की ख़बर पहुंची तो घर घर रोना पीटना मच गया। जिन जिनके सगे सम्बन्धी मर गए थे वह इकट्ठा होकर अबू सुफ्यान के पास आये। उसके सम्बन्धी भी मारे गए थे। यूं भी वह कुरैश का सरदार था इसलिए मुसलमानों से बदला लेना उसका कर्तव्य था। उसने सारे कुरैश से चन्दा जमा किया, बड़े जोर शोर से लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी और दूसरे साल तीन हजार फौज लेकर मदीना की तरफ़ रवाना हुआ और ओहद के पास आकर खेमे लगा दिये। रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुना तो सहाबियों (साथियों) से परामर्श किया और हजार आदमियों के साथ मुक़ाबले के लिए चल खड़े हुए। रास्ते में मुनाफ़िकों (कपटा चारियों) का एक बड़ा गिरोह अलग हो गया और आपके साथ केवल सात सौ आदमी रह गए। लड़ाई का समय आया तो आपने पीछे की तरफ, जिधर से काफ़िरों के हमले का ख़तरा था, सुरक्षा के लिए अब्दुल्लाह बिन जबीर (रज़ि०) के साथ एक दस्ता मुर्करर कर दिया और फरमाया कि घाटी पर खड़े रहो। हमें जीत हो या हार तुम अपनी जगह से न हटना।

इसके बाद जंग शुरू हुई और मुसलमान बहुत बहादुरी से लड़े, काफिरों के पांव उखड़ गए। यह देखकर तीर अंदाज जो पुश्त पर रक्षा कर रहे थे, माल ग़नीमत की तरफ झुक पड़े, उनकी जगह खाली देखकर ख़लिद बिन वलीद ने उधर से हमला कर दिया। मुसलमान लूट में लगे हुए थे, इसलिए न रोक सके और बहुत से मुसलमान शहीद हो गए। इस हंगामे से मशहूर हो गया कि रसूलुल्लाह अलैहि व सल्लम ने शहादत पाई। इस ख़बर के उड़ते ही मुसलमान बदहवास हो गए और उनके पांव उखड़ गए लेकिन बहुत से मुसलमानों का जोश अधिक बढ़ गया और बराबर लड़ते रहे कि इतने में एक सहाबी की नज़र रसूलुल्लाह पर पड़ गई। उन्होंने मुसलमानों को पुकारा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यहां हैं। यह आवाज सुनकर मुसलमानों की जान में जान आई। और आप के पास जमा हुए। काफिरों ने यह देखा तो हर तरफ़ से आप को घेर लिया लेकिन मुसलमानों ने जानें लड़ा दीं। हज़रत अबू दुजाना अंसारी (रज़ि०) का यह हाल था कि जो तीर हुजूर (सल्ल०) की ओर जाते उन्हें अपने शरीर पर रोक लेते थे। हज़रत तलहा(रज़ि०) दुश्मनों की तलवारें अपने हाथ पर रोक लेते थे यहां तक कि उनका हाथ हमेशा के लिए बेकार हो गया। गरज़ मुसलमानों ने जानों पर खेलकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आंच न आने दी।

फिर भी आप ज़ख़्मी हुए और जान देने वाले सहाबा के साथ चोटी पर चढ़ गये। अबू सुफ्यान समझता था कि मुहम्मद (सल्ल०) काम आ गए इसलिए टीले पर चढ़ कर अबू बक्र (रजि०) और उमर (रजि०) को पुकारा। जब उस को मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िन्दा हैं तो उसने कहा आज का दिन बद्र का बदला है। अगले वर्ष बद्र के मैदान में फिर हमारा तुम्हारा मुकाबला होगा। हुजूर ने सहाबा से फ़रमाया कह दो मंजूर है। इस लड़ाई में सत्तर मुसलमान शहीद हुए। याद होगा कि बद्र के कैदियों के साथ मुसलमानों ने कैसा अच्छा सुलूक किया था, लेकिन काफिरों ने ज़िन्दों का क्या मुर्दों तक से बुरा व्यवहार किया। लाशों के टुकड़े टुकड़े कर डाले। उनके नाक कान काटे, पेट फाड़ कर कलेजा निकाला और उसे चबाया। ग़रज़ कि जो कुछ बुराई और बुरा सुलूक उनसे हो सका उन्होंने किया।

ख़न्दक़– (५ हि०):–

रसूल्लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने से पहले यहां यहूदियों का बड़ा ज़ोर था और वह अपने मज़हब और अपनी दौलतमंदी की वजह से बड़े इ़ज़्ज़तदार समझे जाते थे। जब मदीना में मुसलमान पहुंचे और यहां इस्लाम फैलने लगा तो यहूदियों का मान सम्मान खतरे में पड़ गया। इसलिए मुसलमानों की दुश्मनी में कुरैश से भी बढ़ गए। मुसलमानों का ज़ोर तोड़ने की कोशिश शुरू कर दी। उन में बनु नज़ीर सबसे बड़े दुश्मन थे। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको मदीना से निकाल दिया और वह ख़ैबर चले आए यहां आने के बाद उन्होंने एक बड़ी

जबर्दस्त साजिश की। कुरैश तो मुसलमानों के पुराने दुश्मन थे ही, उन को मिलाना क्या कठिन था। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की दुश्मनी में तुरंत तैयार हो गए। उसके अतिरिक्त उन्होंने अरब के तमाम क़बीलों को मिलाकर चौबीस हजार की संख्या में मदीना पर चढ़ाई कर दी।

चूंकि इतनी बड़ी फौज मुसलमानों के मुकाबले में कभी नहीं आई थी, इसलिए जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह खबर सुनी तो सहाबा से राय ली। सलमान फारसी (रज़ि०) ने राय दी कि मदीना के चारों तरफ एक ख़न्दक (खाई) खोदी जाए ताकि दुश्मन अन्दर न आ सकें। हुजूर (सल्ल०) ने यह राय पसन्द फरमाई और ख़न्दक खुदवाई। कुफ्फार आए तो उन्हें मुक़ाबले में बड़ी कठिनाई पेश आई। मजबूर होकर चारों तरफ से घेर लिया। यह वक़्त मुसलमानों के लिए सख्त परेशानी का था। कई कई दिन खाने को नहीं मिलता था। मुनाफिकों ने बहाना करके अलग साथ छोड़ना शुरू कर दिया। खन्दक पार से दुश्मन तीर और पत्थर बरसा रहे थे। एक महीने तक घेराव क़ायम रहा। मुसलमान अल्लाह का नाम लेकर हिम्मत से काम लेते थे। एक महीने के बाद अल्लाह ने उन पर फ़ज़्ल (अनुकम्पा) किया और दुश्मनों में आपस में फूट पड़ गई। इसके सिवा ऐसी भयानक आंधी आयी कि चूल्हे की हांडियां उलट उलट गईं। इससे दुश्मनों की हिम्मत छूट गई और वह परेशान होकर लौट गए।

सुलहे हुदैबिया :

मक्का मुसलमानों का प्रिय देश था। यहां से वह बल पूर्वक निकाले गए थे। लेकिन सब सगे संबंधी यहीं थे। कुछ लोगों के बाल बच्चे भी अब तक यहीं थे। मुसलमानों को मक्का छोड़े हुए कई वर्ष बीत गए थे। अतः उनको वतन की याद सता रही थी। यहां की हर चीज़ याद आती थी। इसके अतिरिक्त बैतुल्लाह शरीफ (खान–ए–काबा) उन का किबला था। वर्षों से उसके दर्शन और हज्ज से वंचित थे। अतः ख़न्दक की जंग के एक साल बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चौदह सौ मुसलमानों के साथ काबा की जियारत (दर्शन) के लिए चल पड़े और इस विचार से कि कुरैश को यह ख़्याल न हो कि हम लड़ाई के लिए आ रहे हैं उमरा (एक प्रकार का हज्ज) का एहराम बांध लिया और कुर्बानी के जानवर साथ लिए लेकिन फिर भी दुश्मन शरारत से बाज़ न आए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी मक्का पहुंच भी न पाए थे कि उन्होंने आगे बढ़कर रास्ता रोक लिया। काफी यकीन दिलाया कि केवल उमरा की नीयत है, लड़ाई भिड़ाई का कोई इरादा नहीं है लेकिन शैतानों ने एक न सुनी।

हज़रत उसमान (रज़ि०) मुआमला तय करने गए थे, किसी ने खबर उड़ा दी कि वह शहीद कर दिए गए हुजूर सल्ल० को बहुत रंज हुआ। तुरंत एक पेड़ के नीचे बैठ कर सभी सहाबा (रज़ि०) से बैअ़त ली कि इस खून का बदला लिए बिना यहां से न टलेंगे। यही बैअते रिजवान कहलाती हैं। बाद में मालूम हुआ कि सूचना ग़लत थी । अब फिर असल बात शुरू हुई अखिर बड़ी मुश्किलों से इस पर मुआमला तय हुआ कि –

१. अब की मुसलमान वापस चले जाएं। अगले साल आएं लेकिन शर्त यह है कि तलवार (वह भी मियान में) के सिवा और कोई हथियार न हो। तीन दिन वह मक्का में ठहर सकते हैं। उन दिनों में कुरैश शहर से बाहर चले जाएंगे।

२. मुसलमान और कुरैश दोनों को हक़ है कि जिस से चाहें समझौता करें।

३. अगर कुरैश में कोई व्यक्ति बिना अनुमति मुसलमनों के पास आए तो वापस कर दिया जाएगा लेकिन अगर कोई मुसलमान कुरैश के पास आए तो फिर वापस नहीं लौटाया जाएगा।

४. दस साल आपस में सुलह रहेगी और इस दर्मियान कोई लड़ाई भिड़ाई नहीं होगी।

इस समझौते की तीसरी धारा देखने में कुछ अच्छी नहीं मालूम होती लेकिन सच पूछो तो इसमें बड़ी मसलहत थी। जब मुसलमान काफिरों से मिल गया तो वह किस काम का, जितना दूर रहे उतना ही अच्छा है। पास रखकर सिवाए हर समय खटके के और क्या लाभ रहा। मुसलमान तो कहीं भी रहे काफिरों को नुक्सान के सिवा उस से क्या लाभ पहुंच सकता है। चुनानचः यह हुआ कि कुरैश के जो लोग मुसलमान हो जाते वह इस धारा के कारण मदीना में नहीं रह सकते थे और मक्का काफिरों के पास लौट कर जाना नहीं चाहते थे। विवश होकर उन्होंने अपनी एक अलग टोली बना ली और कुरैश के काफिलों को लूटना शुरू किया। कुछ ही दिनों में कुरैश का नाक में दम हो गया और उन्होंने खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इच्छा प्रकट की कि सुलहनामे से यह धारा निकाल दी जाए।

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्नः अल्लाह के आख़िरी रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हाज़िर व नाज़िर समझना कैसा है?

उत्तरः हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की लाई हुई किताब और आप की ताअ़लीमात के ख़िलाफ़ है इसलिये नाजाइज़ है। सूर–ए–हदीद आयत न० ४ में अल्लाह तआ़ला के लिए बताया गया है कि वह तुम्हारे साथ है तुम चाहे जहां हो और अल्लाह तुम्हारे अ़मल से बा खबर है। बेशक हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दर्जा अल्लाह की मख़्लूक में सब से ऊँचा है लेकिन अल्लाह ने आप को हाज़िर व नाज़िर नहीं बनाया।

ज़रा गौर फ़रमाएं अल्लाह ने हम को पैदा फ़रमाया वह हमें नंगे खुले भी देखता है, पाख़ाना पेशाब करते भी देखता है, बीवी के पास सोते भी देखता है, शैतान के बहकावे से जब हम कोई बुरा काम करते हैं उसे भी देखता है, वह हमारा ख़ालिक़ है हमारा हर हाल देखता है। उससे हम किसी हाल में नहीं छुप सकते क्या यह सब बातें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये भी मान ली जाएं? क्या हुज़ूर ने औरतों को अपने से पर्दे का हुक्म नहीं दिया था? हम समझते हैं कि कोई भी मुसलमान नहीं पसन्द करेगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसको नंगा व खुला देखें।

अ़ल्लामा इक़्बाल की एक रूबाअ़ी है जिस का मतलब इस तरह़ है:

"ऐ अल्लाह तू दोनों आ़लम से ग़नी है मैं फ़क़ीर हूं। मैदाने ह़श्र में हिसाब व किताब के वक़्त मेरे उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लीजिये और मुझे बख़्श दीजिये, लेकिन अगर मेरा हिसाब लिया जाना ज़रूरी ही हो तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की निगाहों के सामने न लीजिये।"

बेशक अल्लाह हमारा ख़ालिक़ है हम उससे किसी हाल में नहीं छुप सकते लेकिन उस के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने कभी सहाबा बरहना नहीं हुए न ईमान वाली औरतें बे पर्दा आईं न आज ऐसा है। वल्लाहु अअ़लमु विस्साब।

प्रश्नः क़ुर्आन मजीद में आया है जिस का मफ़्हूम (भावार्थ) यह है कि "बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरूद भेजा करो और सलाम भी बहुत बहुत भेजा करो। इस आयत के हुक्म की तअ़मील में अगर हम नमाज़ में पढ़ा जाने वाला दुरूदे इब्राहीमी पढ़ लिया करें तो क्या तअ़मील हो जाएगी?

उत्तरः पिछले अंक में दुरूद पर कई सवालात आए हैं उनको भी देख लेना चाहिए।

इस आयत के तह़त (अंतरगत) उ़लमा ने कहा है कि ज़िन्दगी में एक बार जैसे अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अश्हदुअन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाहि पढ़ना फ़र्ज़ है वैसे ही ज़िन्दगी में एक बार दुरूद व सलाम पढ़ना फ़र्ज़ है। उसके बाद जब भी हुज़ूर का नामे नामी बोला जाए, सुना जाए, लिखा जाए, पढ़ा जाए तो दुरूद पढ़ना वाजिब है। एक नमाज़ी अगर अलग से दुरूद व सलाम न पढ़े तो नमाज़ में पढ़े गये दुरूद व सलाम से उसका फ़र्ज़ अदा हो जाएगा लेकिन अलग से दुरूद पढ़ने का वक़्त न निकालना बड़ी महरूमी की बात है चाहिए कि ह़स्ब इस्तिताअ़त दुरूद पढ़ने का वक़्त निकालें। बेशक दुरूदे इब्राहीमी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का सिखाया हुआ है मगर आप ने इसे नमाज़ में पढ़ने के लिये सिखाया था और इससे पहले "अत्तह़ीयात" में सलाम पढ़ना भी सिखा दिया था इसलिये इस दुरूद में सलाम पढ़ना नहीं दुहराया लिहाज़ा अलग से अगर इस दुरूद का विर्द करें तो इस के बाद अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम अ़ला मुहम्मदिंव्व अ़ला आलहि व अस्हाबिही बढ़ा लें, या दुरूद की किताब से ऐसा दुरूद मुंतख़ब कर लें जिस में सलाम भी हो ताकि आयत के हुक्म व सल्लिमू तस्लीमा" पर भी अ़मल हो जाए। वल्लाहु तआ़ला अअ़लमु विस्सवाब।

प्रश्नः अगर कोई १०० बार पहला कल्मा पढ़े तो क्या हर बार दुरूद पढ़े?

उत्तरः अच्छा तो यही है कि हर बार दुरूद पढ़े लेकिन अगर एक ही मज्लिस में १०० बार कल्मा पढ़े तो आख़िर में एक बार दुरूद पढ़ ले तो यह जाइज़ है, लेकिन मज्लिस बदल बदल कर कल्मा पढ़े या रास्ता चलते पढ़े तो हर बार कल्मे के बाद दुरूद भी पढ़े।

जिन्न क्या कर सकते है?

अबू मर्ग़ूब

बेशक जिन्न मोमिन भी हैं और काफ़िर भी, शैतान भी जिन्नों में से है। लगता है कि आ़म जिन्न तो आ़म इन्सानों की तरह जिन्दगी गुजारते हैं। अपनी बनावट के लिहाज़ से न तो उन को मकान बनाने की ज़रूरत है न रोज़ी कमाने की, बस इबादत करें अल्लाह को राज़ी करें हवाई ग़िजाओं से ज़िन्दा रहें। वह और किन कामों में लगे रहते हैं हम इन्सान उन से नावाक़िफ़ (अपरिचित) रखे गये हैं। अल्लाह ने अपनी मख़्लूक़ को क़ुदरत और ताक़त (सामर्थ्य तथा शक्ति) दी है, उस में हम इन्सानों और जिन्नों में बड़ा फ़र्क़ (अन्तर) है। आ़म जिन्न और शैतान की ख़िल्क़त (प्रकृति) में यक्सानियत (समानता) है, इसलिये उन की ताक़त व क़ुदरत में भी यक्सानियत है। लेकिन चूंकि शैतान का एक ख़ास मिशन है इसलिये उस ताक़त के इस्तिअ़माल (प्रयोग) में आ़म जिन्न और शैतान जिन्न में फ़र्क़ है। जिन्नों के कामों की तफ़्सील (विस्तार) क़ुर्आने मज़ीद में कई जगह आयी है जिसे हम "ह़ज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के जिन्न" के उन्वान (शीर्षक) से पिछले अंको में बयान कर चुके हैं। उससे ज़ियाद तफ़्सील न हम को बताई गई ना ही इस की ज़रूरत थी,

शैतान चूंकि हमारा दुश्मन है और अल्लाह की मस्लह़त (छुपे उद्देश्य) से वह हमारे पीछे भी लगाया गया है। लिहाज़ा उस की चालों से बचने के लिये अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रीअ़े शैतान के कामों की तफ़्सीलात ज़ियादा बताई हैं। जिनका बयान आगे आ रहा है मगर यह बात याद रहे कि जिन कामों की ताक़त शैतानों को है वह काम दूसरे जिन्न भी कर सकते है वह न करें उन को इख़्तियार है, चुनांचि मोमिन जिन्न उन ताक़तों को नाजाइज़ में इस्तिअ़माल नहीं करता।

शैतान का मक़्सद (उद्देश्य) इन्सान को जहन्नम पहुंचाना है।

शैतान का मक़्सद यही है कि वह किसी भी तरह इन्सान को जहन्नम पहुंचा दे अल्लाह तआ़ला हम सब को शैतान की बुराइयों से और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाए रखे। सूर–ए–फ़ातिर की आयत ६ में बताया गया कि : "वह अपनी जमाअ़त को (जिन को बहका कर अपनी जमाअ़त में कर लिया है।) सिर्फ़ इस की दअ़्वत देता है कि वह जहन्नमी हो जाए।" इस मक़्सद को पूरा करने के लिए पहले तो वह इन्सानों को अपनी तदबीरों (उपायों) से कुफ़्र व शिर्क करवाने की कोशिश करता है जिसका ज़िक्र क़ुर्आन में जगह जगह आया है। सूर–ए– ह़श्र में मुनाफ़िक़ीन की मिसाल बयान करते हुए बताया गया कि "जैसे शैतान कि जब उसने इन्सान से (अपनी तदबीरों से) कहा कि अल्लाह की ना फ़रमानी (आदेश उल्लंघन) कर पस जब इन्सान ने नाफ़रमानी कर ली तो शैतान ने कहा मैं तुझ से बरी हूं (अर्थात तेरी बुराइयों से मेरा कोई संबंध नहीं) मैं तो अल्लाह से डरता हूं जो तमाम जहानों का रब है।"

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की अह़ादीस में भी शैतान की चालों और उसकी धोखा धड़ी की बात बार बार आई है। सह़ीह़ मुस्लिम में अ़याज़ बिन ह़म्माद से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि "ऐ लोगो अल्लाह तआ़ला ने मुझे ह़ुक्म दिया है कि जो बात आज मुझे बताई गई है और जिससे तुम ना बलद हो मैं तुम्हें बताऊँ। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो कुछ मैंने अपने बन्दे को अ़ता फ़रमाया वह उस के लिये ह़लाल है और मैंने अपने सारे बन्दों को दीने ह़नीफ़ (सत्य मार्ग) पर पैदा फ़रमाया, कि शैतान उनके पास आये और उन को बहका कर उनको उनके दीन से फेर दिया और उनको ह़ुक्म दिया कि वह मेरा साझी ठहराएं जिस की कोई दलील उन पर नहीं उतारी गई।"

शैतान जब कुफ़्र नहीं करवा पाता तो दूसरे गुनाह करवाता है

शैतान की दरख़्वास्त पर जब अल्लाह तआ़ला ने शैतान को छूट दी थी तो साफ फ़रमा दिया था कि मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा क़ाबू नहीं चल सकता। शैतान ने भी इस को माना था फिर भी शैतान इन्सान को काफ़िर बनाने की कोशिश में लगा रहता है।

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

ता़लीम व तर्बीयत का ह़कीमाना अन्दाज़

मौ० मुह़म्मद तक़ी उ़समानी

हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी इंसानियत के लिए एक महान और आदर्श शिक्षक बन कर तशरीफ़ लाए थे। ऐसे शिक्षक जिनकी तालीम व तर्बियत (शिक्षा दीक्षा) ने केवल तीस वर्षों की कम अवध में न केवल पूरे अरब प्रायद्वीप की काया पलट कर रख दी बल्कि पूरी दुन्या के लिए पथप्रदर्शन तथा सुधार का ऐसा चिराग़ रौशन कर दिया जो रहती दुन्या तक इंसानियत को इंसाफ़, अमन व शान्ति, सुख संतोष की राह दिखाती रहेगी।

नबी–ए–करीम (सल्ल०) ने तेईस साल की कम मुद्दत में जो चमत्कारी इन्क़लाब बर्पा किया उस की तेज़ रफ्तारी और उसके व्यापक प्रभाव के उन लोगों को भी हैरत में डाल दिया जो आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के मिशन के विरोधी थे।

विषय तो बड़ा ही व्यापक है परन्तु यहां आंहज़रत (सल्ल०) के तालीमो व तरबियत के केवल दो विशेषताओं का वर्णन करना चाहता हूं जो अपने सीमित ज्ञान व अध्ययन की हद तक मुझे सब से अधिक बुन्यादी मालूम होती हैं।

इन में सबसे पहली विशेषता आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया, करूणा, ख़ैरख़्वाही (दूसरों की भलाई चाहना) नम्रता, सहृदयता है।

चुनानचः कुर्आन करीम ने आप (सल्ल०) की इस विशेषता का ज़िक्र फ़रमा कर उसे आप की सफलता का बहुत बड़ा आधार करार दिया है– कहा गया है:–

अनुवाद – पस यह अल्लाह की रहमत (अनुकम्पा) ही थी जिस के बिना पर आप (सल्ल०) लोगों के लिए नम्र मिज़ाज हो गए और अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कठोर स्वभाव और सख्त दिल होते तो यह लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से विमुख हो जाते।

जिस व्यक्ति ने भी आप के पवित्र आचरण का अध्ययन किया है, वह जानता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरोधियों ने आप (सल्ल०) के रास्ते में कांटे बिछाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तरह तरह का कष्ट पहुंचाया और आप (सल्ल०) पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़ने में कोई कसर उठा न रखी लेकिन आप (सल्ल०) का पूरा चरित्र इस बात का गवाह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल में कभी एक क्षण के लिए बदले की भावना पैदा नहीं हुई। आप (सल्ल०) उन पर गज़बनाक (क्रोधित) होने के बजाए उन पर तरस खाते थे कि यह लोग कैसे गम्भीर भ्रम में मुब्तिला हैं और हर समय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह चिन्ता रहती थी कि वह क्या तरीक़े अख़्तियार किया जाएं जिससे हक़ बात उन के दिल में उतर जाए और वह हिदायत के रास्ते (निर्देशित मार्ग दर्शन) पर आ जाएं।

आप (सल्ल०) इस प्रकार के शिक्षक बने थे कि महज़ कोई किताब पढ़ कर या पाठ पढ़ कर छुट्टी पा गए हों और यह समझते हों कि मैंने अपना फर्ज़ अदा कर दिया। इस के बजाए आप (सल्ल०) अपने द्वारा तरबियत पाने वाले लोगों की जिन्दगी के हर एक पहलू के सुधार में दख़ल रखते थे। आप (सल्ल०) उनके हर दुःख दर्द में शामिल और हर क्षण उनकी भलाई तथा कल्याण के लिए चिन्तित रहते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस विशेषता को कुर्आने करीमने इन शब्दों में बयान किया है:–

अनुवाद– निस्सन्देह तुम्हारे पास तुम्ही में से एक ऐसा रसूल आया है जिस पर तुम्हारी मशक़्क़त गिरां गुजरती है और जो तुम्हारी भलाई के लिए बेहद हरीस (बहुत ही उत्सुक) है और मुसलमानों पर बेहद दयालु और मेहरबान है।

अल्लामा नूरूद्दीन हिशमी मअ़जुमज़्ज़वाए में मसनद अहमद और महज़म तिबरानी के हवाले से नक़ल किया है कि एक बार एक नौजवान ने सरकारे दो आलम (सल्ल०) की सेवा में आकर प्रार्थना की कि या रसूल्लल्लाह सल्ल० मुझे ज़िना (ब्लातकार) की इजाज़त दीजिये। ज़रा कल्पना तो कीजिए कि क्या फर्माइश की जा रही है। एक ऐसे घिनावने गुनाह को हलाल क़रार देने की फरमाईश जिस को संसार के सभी धर्म बुरा और गुनाह समझते हैं और यह फरमाइश किसे की जा रही है। उस पवित्र हस्ती से जिसकी परहेज़गाही व इस्मत के (सतीत्व) आगे फरिश्तों का भी सिर झुक जाता है। कोई और होता तो इस नौजवान को

मार पीट कर या कम से कम डाँट डपट कर बाहर निकलवा देता, लेकिन रहमतुल आ़लमीन सल्ल० जिनका काम बुराईयों पर नाराज़ होकर पूरा नहीं हो जाता बल्कि जो इस बुराई के इलाज को भी अपना कर्तव्य समझते थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल में इस नौजवान के खिलाफ क्रोध और गुस्सा के बजाए हमदर्दी और दया की भावना पैदा हुई। उससे नाराज होने के बजाए आप (सल्ल०) ने उसे प्यार से अपने पास बुलाया अपने क़रीब बैठाया। उसके कंधे पर प्यार से हाथ रखा और मोहब्बत भरे स्वर में फ़रमाया "अच्छा यह बताओं कि जो काम किसी अजनबी महिला के साथ करना चाहते हो अगर कोई तुम्हारी मां के साथ यह कर्म करे तो क्या तुम इस को गवारा करोगे?

नौजवान के जेहन के बन्द दर्वाज़े एक एक करके खुलना शुरू हो गये। उसने कहा नहीं या रसूलल्लाहु। आप सल्ल० ने फ़रमाया "तो फिर दूसरे लोग भी अपनी माओं के लिए पसन्द नहीं करते" अच्छा यह बाताओं कि अगर कोई शख़्स तुम्हारी बहन के साथ यह मामला करे तो तुम इस को गवारा कर लोगे? नौजवान ने उत्तर दिया नहीं या रसूलल्लाह। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "जो बात तुम्हें अपनी बहन के लिए गवारा नहीं, दूसरे लोग अपनी बहनों के साथ इसे पसन्द नहीं करते" आंहज़रत मिसालें देकर इस नौजवान को समझाते रहे और अन्त में उस के कन्धें पर हाथ रखके यह दुआ फ़रमाई।

अनुवाद– अल्लाह इस के गुनाहों को माफ़ कर दीजिए और इस के दिल को पाक कर दीजिए और इस की शर्मगाह (गुप्त अंग) को परहेज़गारी प्रदान कीजिए। यहां तक कि जब यह मजलिस से उठा तो इस घिनावने कार्य से हमेशा के लिए तौबा कर चुका था।

आप (सल्ल०) इस नौजवान पर क्रोधित होकर उसे डांट फटकार कर अपने जज़्बात की तस्कीन कर सकते थे लेकिन इस सूरत में आप (सल्ल०) को इस नौजवान की जिन्दगी तबाह होती नज़र आ रही थी। यह आप (सल्ल०) की नर्म मिजाज़ी, हिकमत और तदबीर का नतीजा था कि वह नौजवान हलाकत (विनाष) के गड्ढे से हमेशा के लिए सुरक्षित हो गया। क्या ही अच्छा होता आज के सुधारक, शिक्षक और वक्ता सरकारे दो आलम (सल्ल०) की इस सुन्नत पर अमल कर सकें तो आज उन्हें अपने नौजवानों की बेराहरवी की शिकायत न रहे।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अन्दाज़े तालीम की दूसरी अहम विशेषता का ज़िक्र करना चाहता हूं जो आप (सल्ल०) की तरबियत की सबसे अधिक प्रभावशाली विशेषता है, वह यह कि आप (सल्ल०) ने अपने मानने वालों को जिस बात की तालीम दी उस पर स्वयं अमल कर नमूना बन कर दिखाया। आप (सल्ल०) का उपदेश, नसीहत, और तालीमो तरबियत केवल दूसरों के लिए न थी बल्कि सबसे पहले अपनी ज़ात के लिए थी और अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) के लिए बहुत से मआ़मलात में सहूलत और छूट प्रदान की लेकिन आप (सल्ल०) इस छूट और सहूलत से फ़ायदा उठाने के बजाए अपने ने आप को दूसरे तमाम मुसलमानों की सफ़ (पंक्ति) में रखना पसन्द फ़रमाया।

आप (सल्ल०) ने लोगों को नमाज़ पढ़ने का उपदेश दिया तो खुद अपना हाल यह था कि दूसरे यदि पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ते तो आप (सल्ल.) आठ वक़्त की नमाज़ अदा फरमाते थे जिस में चाश्त, इशराक़ और तहज्जुद की नमाज़े शामिल हैं। तहज्जुद आम मुसलमानों के लिए अनिवार्य (वाजिब) न थी लेकिन आप (सल्ल०) पर अनिवार्य थी और तहज्जुद भी ऐसी कि खड़े खड़े पैरों पर वरम आ जाता था। हज़रत आइशा (रजि०) ने एक बार अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! क्या अल्लाह तआला ने आप के अगले पिछले गुनाह माफ़ नहीं कर दिये, फिर आप (सल्ल०) को इतना कष्ट उठाने की क्या जरूरत है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुझ पर यह कृपा की है लेकिन क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं?

आप (सल्ल०) ने दूसरों को रोज़ा रखने का आदेश दिया तो खुद आप (सल्ल०) का अमल यह था कि मुसलमान यदि रमज़ान के फ़र्ज़ रोज़े रखते तो आप (सल्ल०) का कोई महीना रोज़े से खाली न था। आम मुसलमानों को यह हुक्म था कि प्रातः रोज़ा रखकर शाम को अफ़तार (रोज़ा खोल) लिया करें लेकिन आप (सल्ल०) कई कई रोज़ लगातार इस तरह रोज़ा रखते थे कि रात के समय भी कोई आहार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह में नहीं जाता था।

आप (सल्ल०) ने मुसलमानों को ज़कात देने और अल्लाह की राह में माल खर्च करने की ताकीद फ़रमाई तो सबसे पहले खुद अपनी अमली ज़िन्दगी में इसका बेमिसाल नमूना पेश किया। साधारण मुसलमानों को अपने माल का चालीसवां हिस्सा देने का

आदेश था और इससे अधिक अपनी सामर्थ के अनुसार खर्च करने का उपदेश था लेकिन खुद आंहज़रत (सल्ल०) को यह तक गवारा न था कि आप (सल्ल०) वक्ती ज़रूरत से अधिक एक दीनार भी घर में बाकी रहे। एक बार अस्र की नमाज़ के बाद परंपरा के खिलाफ तुरन्त घर पर तशरीफ़ ले गए और जल्द ही बाहर आए। सहाबा–ए–क्राम (रजि०) ने वजह पूछी तो फ़रमाया "मुझे नमाज़ में याद आया कि सोने का एक छोटा सा टुकड़ा घर में पड़ा रह गया है। मुझे ख़्याल हुआ रात आ जाए और मुहम्मद (सल्ल०) के घर में पड़ा रह जाए" हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाह अनहुम फ़रमाती हैं एक बार आप (सल्ल०) रंजीदा घर में तशरीफ़ लाए। मैंने कारण पूछा तो फ़रमाया उम्मे सलमा! कल जो सात दीनार आए थे शाम हो गई और बिस्तर पर पड़े रह गए। हद यह है कि मृत्व की अवस्था में जबकि बीमारी की तकलीफ़ से बहुत ही बेचैन थे, आप सल्ल० को याद आता है कि कुछ अशर्फियां घर में पड़ी हैं। तुरंत आदेश देते हैं कि उन्हें खैरात कर दो। मुहम्मद अपने रब से इस तरह मिलेगा कि उस के पीछे उस के घर में अशर्फियां पड़ी हों!

आम मुसलमानों के लिए आप (सल्ल०) की तालीम यह थी कि जोश में आकर अपनी सारी पूंजी खैरात कर देना उचित नहीं बल्कि अपनी ज़रूरत के अनुसार माल रखकर अल्लाह की राह में ख़र्च करो।

चुनानचः इंसानियत के इस महान शिक्षक की इस तरबियत का यह प्रभाव था कि जब कुर्आन करीम में अल्लाह तआ़ला का यह आदेश नाज़िल हुआ कि: अनुवाद–

"तुम नेकी का स्थान उस समय तक प्राप्त न कर सकोगे जब तक कि अपनी पसन्दीदा चीजों में से अल्लाह की राह में खर्च न करो।"

तो सहाबा–ए–क्राम ने इस आयत पर अमल करने के लिए अपनी ऐसी प्रिय वस्तों को अल्लाह की राह में खर्च कर दीं जिन्हें वह सालहासाल से अपनी जान से भी अधिक प्रिय रखते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अनुयायिओं को संयम व कनाअ़त (निस्पृहता) की तालीम दी तो खुद अपनी ज़िन्दगी में इस का अमली नमूना पेश करके दिखा दिया। ग़जवहे अहज़ाब (अहजाब के युद्ध) के मौका पर जब बाज़ सहाबा ने आप सल्ल० से शदीद भूख की शिकायत की और पेट खोल कर दिखाया कि इस पर एक पत्थर बन्धा हुआ है तो सरकारे दो आलम सल्ल० ने जवाब में अपनी पेट मुबारक खोल कर दिखाया जिस पर दो पत्थर बंधे हुए थे।

आप सल्ल० ने लोगों को बराबरी, भाईचारे की तालीम दी तो सबसे पहले खुद उस पर अमल करके दिखाया कि अगर दूसरे मुसलमान आम सिपाही की हैसियत से मदीना तैय्यबा की सुरक्षा में खन्दक खोदने की मेहनत बर्दाश्त कर रहे थे तो उन का अमीर (सरदार) (सल्ल०) केवल उनकी निगरानी नहीं कर रहा था बल्कि खुद कुदाल हाथों में लेकर खन्दक खोदने में शरीक था और जमीन का जितना बड़ा टुकड़ा एक आम सिपाही को खोदने के लिए दिया गया था उतना ही टुकड़ा उसने अपने जिम्मे लिया था।

इस स्वार्थ त्याग की तालीम अखलाक़ के हर मुअल्लिम ने दी है परन्तु यह तालीम शब्दों से आगे नहीं बढ़ती इस के विपरीत इंसानियत के इस मुअ़ल्लिम (सल्ल०) अपनी ज़बान से ईसार (स्वार्थ त्याग) के शब्द कम इस्तेमाल किये और अमल से इसकी तालीम ज़ियादा दी। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० आप सल्ल० की चहेती साहबज़ादी हैं लेकिन चक्की पीस्ते पीस्ते उनकी हथेली घिस गई है वह आकर दर्ख़्वास्त करती हैं कि मुझे कोई खादिमा (सेविका) दिलवा दिया जाए परन्तु मुशफिक़ (कृपालु) बाप की ज़बान से जवाब मिलता है कि"फ़ातिमा अभी सफ़ीया के गरीबों का इन्तिज़ाम नहीं हुवा इसलिए तुम्हारी इच्छा पर अमल मुश्किल नहीं।

आप (सल्ल०) ने लोगों को सब्र व क्षमादान करने की शिक्षा दी तो स्वयं उस पर अमल करके दिखाया। एक बार एक आदमी का कुछ कर्ज़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बाकी था। उस व्यक्ति ने आप (सल्ल०) से कर्ज़ की वापसी की मांग की और कुछ अप शब्द (गुस्ताखाना अलफ़ाज़) भी प्रयोग किये। जब आप (सल्ल०) पर जान देने वाले सहाबा (रजि०) ने उस आदमी के यह अभद्र शब्द सुने तो उसे गुस्ताखी का मज़ा चखाना चाहा लेकिन रहमतुल् आलमीन (सल्ल०) ने सहाबा–ए–क्राम को मना कर दिया और फ़रमाया "उसे कहने दो यह हक़ पर है और हक़ वाले को यह बात कहने की गुंजाइश होती है। आप (सल्ल०) ने क्षमादान का जो प्रदर्शन मक्का विजय के समय किया वह सबको मालूम है कि जिन लोगों ने आप (सल्ल०) और आप के साथियों

(शेष पृष्ठ २४ पर)

टीपू सुल्तान

मुहम्मद हसन अंसारी

टीपू सुल्तान का नाम फतेह अली खां था। टीपू सुल्तान उसका उपनाम था। वह एक साहसी उच्च विचार वाला और स्वाभिमानी शासक था। टीपू सुल्तान का जन्म सन् १७५० ई० में देवन हल्ली नामक स्थान पर हुआ था जो दक्षिण भारत में बंगलौर के पास स्थित है। टीपू सुल्तान की मां का नाम फ़ात्मा और बाप का नाम हैदर अली था। हैदर अली मैसूर का शासक था। बचपन ही से टीपू सुल्तान प्रखर बुद्धि वाला परिश्रमी बालक था। वह कई भाषाओं का ज्ञाता था। अरबी, फरसी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, तमिल, कन्नड़ भाषा का उसे ज्ञान था। पन्द्रह बीस साल की उम्र में उसने घुड़सवारी, सिपहगरी (सैन्य शिक्षा), शमशीर ज़नी (खडग–विद्या), तीर अन्दाजी (धनुर्विद्या), नेजा बाजी (भाला चलाने की कला), तुफंग अन्दाजी (बन्दूक चलाने और निशाने साधने की कला) और तैराकी में महारत (निपुणता) हासिल कर ली थी। टीपू सुल्तान जब पहली बार अपने पिता के साथ लड़ाई के मैदान में मालाबार गया उस समय उसकी अवस्था मात्र पन्द्रह वर्ष की थी। टीपू सुल्तान की उम्र तीस साल की थी जब उस के पिता हैदर अली की मृत्यु हुई। उन दिनों हिन्दुस्तान में इंग्लैण्ड की ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपना प्रभाव फैला रही थी। यह अंग्रेजों की हिन्दुस्तान के गुलाम बनाने की शुरूआत थी जिसे समय रहते हैदर अली ने भांप लिया था और वह कम्पनी के विरूद्ध लड़ा। अंग्रेजी शासक उन दिनों दक्षिण भारत में ऐसी चाल चल रहे थे कि दो देशी रियासतों को आपस में लड़ा देते थे और स्वयं इस फूट से लाभ उठाते थे टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों की इस चाल को महसूस किया ओर उनसे लड़ने का फैसला किया।

महान इतिहासकार सैयद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं –

"सब से पहला व्यक्ति जिसको इस खतरे का एहसास हुआ वह मैसूर (कर्नाटक) का साहसी, ऊंचे विचार वाला और स्वाभिमानी शासक फतेह अली खां टीपू सुल्तान था जिसने अपने अनुभव और असाधारण बुद्धि से यह बात महसूस कर ली कि अंग्रेज इसी तरह एक एक राज्य और एक एक रियासत हज़म करते रहेंगे, और अगर कोई संगठित शक्ति इनके मुकाबले पर न आई तो आखिरकार पूरा मुल्क उनका लुक़्म–ए–तर (तर निवाला) बन जायेगा, अतएव उन्होंने अंग्रेजों से जंग का फैसला किया। और अपने पूरे साज व सामान, संसाधन और फौजी तैयारियों के साथ उनके मुकाबले में मैदान में आ गए।

टीपू ने हिन्दुस्तान के राजाओं, महाराजाओं और नवजवानों को अंग्रेजों से जंग पर आमादा करने की कोशिश की। इस उद्देश्य से उन्होंने सुल्तान तुर्की सलीम उस्मानी और दूसरे मुसलमान बादशाहों और हिन्दुस्तान के अमीरों व नवाबों से पत्र व्यवहार किया, अपने राजदूतों को फ्रांस, तुर्की, ईरान और दूसरे देशों में भेजकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फिजा हमवार करने और समर्थन जुटाने की कोशिश की। नैपोलियन ने भी उनसे सहयोग किया और फैलाव वादी तथा खतरनाक ब्रिटिश सत्ता को समाप्त करने के उद्देश्य में उनकी मदद की। वह आजीवन अंग्रेजों से कठोर संघर्ष में व्यस्त रहा। करीब था कि अंग्रेजों के सारे मंसूबों पर पानी फिर जाये और वह इस मुल्क से बिल्कुल बेदखल हो जायें (निष्कासित हो जायें), मगर अंग्रेजों ने दक्षिण भारत के अमीरों को अपने साथ मिला लिया और आखिरकार इस मुजाहिद (पराक्रमी) बादशाह ने ४ मई १७९९ को श्रीरंगापटनम की लड़ाई में शहीद होकर सुर्खरूई (सम्मान) हासिल की। उन्होंने अंग्रेजों की गुलामी और कैद और उनके रहम व करम पर जीवित रहने पर मौत की प्राथमिकता थी। उनका मशहूर ऐतिहासिक कथन है –

"गीदड़ की सौ साल जिन्दगी से शेर की एक दिन की जिन्दगी बेहतर है।"

जब जनरल हारिस (**Harris**) को सुल्तान की शहादत की खबर मिली तो उस ने उनकी लाश पर खड़े होकर यह शब्द कहे जिनकी सदाकत (सच्चाई) की इतिहास ने तस्दीक (प्रमाणित) कर दी :–

"आज से हिन्दुस्तान हमारा है।"

टीपू सुल्तान अपने मंसूबे (योजना) में कामयाब नहीं हो सका

यह विधि का विधान था, कजा व कदर की बात है। किन्तु वह बहादुर था, यह बात निस्संदेह है। यदि उसे सहायता मिली होती तो शायद अंग्रेज भारत में अपना पैर जमा न पाते और हमारे देश का इतिहास कुछ और होता। टीपू सुल्तान ने जब से राज्य का कार्य संभाला तब से सदा साहस और वीरता से काम लिया। और कोई अवसर ऐसा नहीं आया जब वह अपनी राय से तनिक भी डिगा हो। टीपू सुल्तान परिश्रमी था, वह सोलह घंटे काम करता था। आमोद–प्रमोद में समय नष्ट नहीं करता था। खाने और पहनने में उसका जीवन सादा था। गहने या जवाहरात वह नहीं पहनता था। झूठ नहीं बोलता था। गन्दी बातें, गन्दी हंसी वह कभी नहीं करता था। न गप लड़ाने की उसकी आदत थी। प्रशासनिक सुधार के क्षेत्र में उसने बड़ा काम किया । चुम्बकीय पहाड़ों से जलयानों को बचाने के लिए लोहे की जगह तांबे के पेन्दे का प्रयोग टीपू सुल्तान ही की ईजाद है। रेशम उद्योग उसी की देन है। बंगलौर और श्रंगापटनम में लाल बाग़ नाम के दो बड़े बाग़ लगवाये।

एडवांस्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया में टीपू सुल्तान के बारे में लिखा है :–

"एक सद् आचरण का इन्सान अपने तब्क: में व्याप्त बुराइयों से पाक, वह खुदा पर भरपूर ईमान रखने वाला था। वह बहुत शिक्षित था। फारसी, कन्नड़, उर्दू प्रवाह के साथ बोलता था। और एक रिच (बेश कीमत, बहुमूल्य) लाइब्रेरी का मालिक था। एक बहादुर सिपाही और एक मर्मज्ञ धनुर्धारी के साथ–साथ टीपू एक उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ भी था।" .....।

उसने मुल्क की आजादी को दूसरी चीज से बुलन्दतर समझा और उसकी हिफाजत की कोशिश करते हुए जान दी। उसकी सुव्यवस्था को अनेक अंग्रेज इतिहासकारों ने स्वीकारा है .....।

गैर मुस्लिमों के साथ उसका व्यवहार उदारतापूर्ण था। उसके अनेक पत्रों से पता चलता है कि वह हिन्दू

(पृष्ठ ४० का शेष)

दुनिया की सबसे बड़ी मस्जिदें:– रियाज़ में किंगडम टावर में स्थिति प्रिंस अब्दुल्लाह मस्जिद दुनिया की सबसे ऊँची मस्जिद है जो समुद्र तल से १८० मीटर ऊपर स्थित है। गुम्बद नुमा यह मस्जिद सऊदी व्यापारी अलवलीदुल बिन तलाल के अनुदान से तैयार की गई है और किंगडम टावर की ७७ मंजिल पर है। ५०० वर्गमीटर के घेरे में बनी इस मस्जिद में महिलाओं के नमाज़ पढ़ने के लिए भी अलग जगह है।

मुस्लिम स्कालर्स का अंतर्राष्ट्रीय फोरम:–

राबते आलमे इस्लामी के तहत मुस्लिम स्कालर्स का अंतर्राष्ट्रीय फोरम की स्थापना की गई है जिसके चेयरमैन सऊदी अरब के मुफ्ती–ए–आज़म शैख़ अब्दुल अज़ीज़ आलुश्शैख बनाए गए हैं। हाल ही में इसकी एक मीटिंग रबाते आलमे इस्लामी के हेड–क्वार्टर मक्का में हुई। राबते के सिक्रेट्री जनरल डा० अब्दुल्लाह के अनुसार इस फोरम का उद्देश्य मुस्लिम उम्मत की पहचान की सुरक्षा, मुस्लिम स्कालर्स में आपसी संबंध को मजबूत बनाना है। फ़ोरम की बुन्यादी कमेटी में सऊदी अरब, लिबनान, उर्दून, श्याम, बोसनिया, हिन्दुस्तान, मध्यएशिया ताइवान, सेनीगाल, मयांमान, चाड, मारीतनिया और बंगला देश के स्कालर्स सम्मिलित हैं।

जनता की राय को हमवार करना चाहता था, वह यद्यपि खुदा से डरने वाला मुसलमान था, मगर उसने हिन्दू प्रजा के साथ किसी भेज भाव का मामला नहीं किया, यद्यपि कुछ एक अंग्रेज इतिहासकारों ने इसका इल्जाम (आरोप) लगाया है।

(पृष्ठ २८ का शेष)

काफिर व मुश्रिक नहीं बना पाता तो दूसरे गुनाह करवाने की कोशिश करता है। कुछ नहीं तो आपस में लड़ा ही कर खुश हो लेता है।

सूर–ए–माइदा की आयत ६१ में बताया गया: "शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुआ के जरीअे तुम्हारे बीच बुग्ज़ व अदावत डाल दे, अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे क्या तुम अब भी बाज न आओगे?"

सूर–ए–बक़र: आयत १६६ में बताया गया: "शैतान तुमको बुराई और गन्दी बातों का हुक्म देता है और हुक्म देता है कि तुम अल्लाह पर ऐसी बातें कहो जो तुम नहीं जानते।"

सहीह मुस्लिम की किताबुल मुनाफिक़ीन की एक हदीस का मफ्हूम यूं है कि "शैतान इस बात से तो मायूस हो गया है कि जज़ीरतुलअरब (अरब खाड़ी) में नमाज़ी लोग उसकी इबादत करेंगे लेकिन आपस में लड़ाने की कोशिश में लगा हुआ है।"

सूर–ए–अअ़राफ़ आयत १६,१७ में बताया गया कि "मैं आदम की औलाद के रास्ते में ज़रूर ज़रूर बैठूंगा और उन को आगे से पीछे से, दायें से बाएं से आ आकर (बहकाऊंगा) फिर आप उन में के अक्सर लोगों को नाशुक्रा पायेंगे।"

शैतान अगर इन्सान को दीन से हटा नहीं पाता तो उसकी इबादत ही खराब करता है। (जारी)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़ीया (रज़ि०)

मुहसिना फ़ारूक़ी

इनका असली नाम जैनब था, लेकिन चूंकि वह जंगे ख़ैबर में खास हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के हिस्से में आयी थीं और अरब में गनीमत के ऐसे हिस्से को जो इमाम या बादशाह के लिए खास होता था, सफिया कहते थे, इसलिए वह भी सफीया के नाम से मश्हूर हो गयीं, यह जरकानी की रिवायत है।

हज़रत सफिया को मां–बाप दोनों का साया हासिल था, बाप का नाम हुयै बिन अखतब था, जो कबील–ए–नजीर का सरदार था और हज़रत हारून (रजि०) की नस्ल में शामिल था, मां जिसका नाम ज़र्द था समवाल रईस फरीज की बेटी थी और यह दोनों खानदान (करीजः और नजीर) बनू इस्राईल के इन तमाम कबायल से मुम्ताज (सर्वश्रेष्ठ) समझे जाते थे जिन्होंने जमान–ए–दराज से अरब के उत्तरी भाग में रहने लगे।

हज़रत सफिया (रजि०) की शादी पहले सलाम बिन मशकम अलकरजी से हुई थी, सलाम ने तलाक दी तो कनाना बिन अबी हकीक के निकाह में आयी जो अबू राफेअ ताजिर हिजाज़ और रईस ख़ैबर का भतीजा था, कनाना जंगे खैबर में मारा गया, हज़रत सफिया के भाई और बाप भी मारे गये, और खुद भी गिरफ्तार हुई, जब खैबर के तमाम कैदी जमा हुए तो दहया कल्बी ने आंहजरत (सल्ल०) से एक लौंडी की दरख्वास्त की, आंहजरत (सल्ल०) ने चुनने की इजाजत दी, उन्होंने हज़रत सफिया (रजि०) को चुन लिया लेकिन एक सहाबी ने आप की खिदमत में आकर अर्ज किया कि आपने रईसा बनू नजीर व करीज़ को दहया को दे दिया यह तो केवल आप के लिए सजावार है, इसका मकसद यह था कि रईस–ए–अरब के साथ आम औरतों का सा बरताव मुनासिब नहीं, अतः हज़रत दहया (रज़ि०) को आपने दूसरी लौंडी देदी, और सफिया को आजाद करके निकाह कर लिया।(बुखारी किताबुस्सलात मुस्लिम भाग १ पेज ५४६)

खैबर से रवाना हुए तो मकामे सहबा में रस्म अदा की, (इसाबा भाग ८ पेज १२६) और जो कुछ सामान लोगों के पास था इसको जमा करके दअवते वलीमा फरमायी वहां से रवाना हुए तो आप ने इनको खुद अपने ऊंट पर सवार कर लिया और अपनी चादर से उन पर पर्दा किया, अर्थात यह इस बात का ऐलान था कि वह अज़वाज मुतहहरात में दाखिल हो गयीं। (तबकात भाग ८ पेज ८६)

हज़रत सफ़ीया (रजि०) के मश्हूर किस्सों में हज का सफर है जो उन्होंने आंहज़रत (सल्ल०) के साथ किया था।

हज़रत उस्मान (रजि०) का जिस महीने में घेराव जो सन् (३५) हि० में हुआ था, हज़रत सफ़ीया (रजि०) ने उनकी बेहद मदद की थी, जब हज़रत उस्मान (रजि०) पर उनकी जरूरत की चीजे बन्द कर दी गयीं, और उनके घर पर पहरा बिठा दिया गया तो वह खुद घोड़े पर सवार होकर उनके घर की ओर चलीं गुलाम साथ में था, अशतर की नजर पड़ी तो उन्होंने आकर घोड़े को मारना शुरू कर दिया, हज़रत सफ़ीया (रजि०) ने कहा, मुझको जलील होने की जरूरत नहीं, मैं वापस जाती हूं, तू घोड़े को छोड़ दे, घर वापस आयी तो हज़रत हसन (रजि०) को इस काम के लिए भेजा वह उनके घर से हज़रत उस्मान (रजि०) के पास खाना और पानी ले जाते थे। (इसाबा भाग १ पेज १२७ हवाला इब्ने सअ़द)

हज़रत सफ़ीया (रजि०) का रमजान सन (५०) में इन्तिकाल हुआ और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न हुई, उस समय उनकी उम्र (६०) साल की थी, एक लाख तरका छोड़ा और एक सुलुस के लिए अपने यहूदी भांजे के लिए वसीयत कर गयीं।(जरकानी भाग ३ पेज २१६)

हज़रत सफिया से कुछ हदीसे मरवी हैं जिनको हज़रत जैनुल आबदीन (रजि०) इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन हारिस, मुस्लिम बिन सफवान, कनाना और यजीद बिन मोअतब आदि ने रिवायत किया है।

और पत्नियों की तरह हज़रत सफीया (रजि०) भी अपने जमाने में इल्म का मरकज़ थीं, अतः हज़रत सहीरह (रजि०) बिन्त जैफ़र हज कर के हज़रत सफीया (रज़ि०) के पास मदीना आयीं तो कूफा की बहुत सी औरतें मसायल पूछने के लिए बैठी हुई

थी, सहीरः (रजि०) का भी यही मकसद था, इसलिए उन्होंने कूफा की औरतों से सवाल कराए, एक फत्वा के सम्बन्ध में था, हज़रत सफिया (रजि०) ने सुना तो बोली ईराक वाले इस मसला को अक्सर पूछते हैं। (मुसनद भाग ६ पेज ३७७)

अर्थात सफीया आकिल (बुद्धि), फाजिल(विद्वान) और हलीम (सहनशील) थीं।

गजब–ए–खैबर में जब वह अपनी बहन के साथ गिरफ्तार होकर आ रही थी तो उनकी बहन यहूदियों की लाशों को देख–देख कर चीख उठती थीं, हज़रत सफ़ीया (रजि०) अपने महबूब पति की लाश के पास से गुजरी लेकिन अब भी इसी तरह सुकून से थीं उनके ज़बान पर किसी तरह की बेसब्री के शब्द न निकले।

हज़रत सफ़ीया के पास एक नौकरानी थी जो हज़रत उमर (रजि०) से जाकर उनकी शिकायत किया करती थी, एक दिन कहा कि उनमें यहूदियत का असर अभी बाकी है वह शनिवार को अच्छा समझती है और यहूदियों के साथ अच्छा व्यवहार करती है, हज़रत उमर (रजि०) ने पुष्टि के लिए एक व्यक्ति को भेजा, हज़रत सफिया (रजि०) ने जवाब दिया, शनिवार को अच्छा समझने की कोई जरूरत नहीं, इसके बदले में अल्लाह ने हमको जुमा का दिन दिया है, अल्बत्ता मैं यहूद के साथ अच्छा व्यवहार करती हूं वह मेरे रिश्तेदार है उसके बाद नौकरानी को बुलाकर पूछा कि तूने मेरी शिकायत की थी? बोली, हाँ शैतान ने बहका दिया था।'' हज़रत सफिया चुप हो गयीं और उस नौकरानी को आज़ाद कर दिया।

(इसाबा भाग ८ पेज १२७ व जरकानी भाग ३ पेज ३६७)

हज़रत सफिया (रजि०) को आंहज़रत (सल्ल०) से बहुत मुहब्बत थी, अतः जब आप (सल्ल०) बीमार हुए तो बहुत हसरत से बोली, ''काश! आप की बीमारी मुझको हो जाती।'' सब पत्नियों ने देखना शुरू किया तो आंहज़रत (सल्ल०) ने फरमाया यह सच कह रही हैं (यानी इन के अन्दर बनावट नहीं) (जरकानी भाग ३ पेज हवाला इब्ने सअ़द)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भी उनसे बहुत मुहब्बत थी और हर मौका पर उनकी दिलजोई फरमाते थे, एक बार आप सफर में थे, सब पत्नियां थीं हज़रत सफिया (रजि०) का ऊंट इत्तिफाक़ से बीमार हो गया, हज़रत ज़ैनब (रजि०) के पास ज़रूरत से ज्यादा ऊंट थे, आप (सल्ल०) ने उनसे कहा, एक ऊंट सफिया को दे दो उन्होंने कहा क्या मैं इस यहूदिया को अपना ऊंट दूं? इस पर आंहज़रत (सल्ल०) उनसे इस कदर नाराज हुए कि दो महीने तक उनके पास नहीं गये।

(इसाबा भाग ८ पेज १२६ हवाला इब्ने सअ़द व जरकानी भाग ३ पेज २६६)

एक बार हज़रत आइशा (रजि०) ने उनके कद व कामत के बारे मे कुछ शब्द कहे तो आंहजरत (सल्ल०) ने फरमाया, तुमने ऐसी बात कही है कि अगर समुद्र में छोड़ दी जाए तो उसमें मिल जाए। (अर्थात समुद्र को भी गन्दा कर सकती है)

एक बार आप (सल्ल०) हज़रत सफिया (रजि०) के पास तशरीफ ले गये, देखा कि रो रही हैं, आपने रोने की वजह पूछी उन्होंने कहा, आयशा (रजि०) और हफ्सा (रजि०) कहती हैं कि हम तमाम पत्नियों में अफज़ल (श्रेष्ठ) हैं हम आप (सल्ल०) की पत्नी होने के साथ आपकी चचा जाद बहन भी हैं।'' आपने फरमाया– तुमने यह क्यों न कह दिया कि हारून (अलै०) मेरे बाप मूसा (अलै०) मेरे चचा और मुहम्मद (सल्ल०) मेरे पति हैं, इसलिए तुम लोग क्यों कर मुझ से अफजल हो सकती हो,

(तिर्मिजी पेज ६३८ बाब फ़ज़्ल अजवाजुन्नबी)

सफरे हज में हज़रत सफिया (रजि०) का ऊंट बैठ गया और सबसे पीछे रह गयी थीं, आंहज़रत (सल्ल०) उधर से गुजरे तो देखा कि बहुत रो रही हैं, आप (सल्ल०) हाथ मुबारक से उनके आंसू पोंछे, आप आंसू पोछते जाते थे और वह बेइख्तियार रोती जाती थी। (जरकानी भाग ३ पेज २६६)

हज़रत सफिया (रजि०) बहादुर और फय्याज (दानशील) थीं अतः जब वह उम्मुल मोमिनीन बन कर मदीना में आयीं तो हज़रत फ़ातिमा (रजि०) और अजवाज मुतहहरात को अपनी सोने की बिजलियां बांट दीं।

(जरकारी भाग ३ पेज २६६)

खाना बहुत अच्छा पकाती थीं और आंहज़रत (सल्ल०) के पास तोहफतन भेजा करती थी, हज़रत आइशा (रजि०) के घर में आंहजरत (सल्ल०) के पास उन्होंनं प्याला में जो खाना भेजा था उसका ज़िक्र बुख़ारी और नसई आदि में आया है।

ला इलाह इल्लल्लाहु

मनुस्मृति का पाचंवा अध्याय

खान पान सम्बन्धित

मंत्रों से पवित्र किया हुआ मांस हिन्दू धर्म में भी खाना जाइज़ है

ऋषियों ने स्नातक के यथोक्त धर्म सुनकर अग्नि से उत्पन्न हुए महात्मा भृगु से यह कहा–इस प्रकार यथोक्त रीति से अपने धर्म में रत रहने वाले वेदशास्त्रज्ञ ब्राह्मणों की (अकालावस्था में ही) मृत्यु क्यों हो जाती है। १–२

मनु के पुत्र धर्मात्मा भृगुजी ने उन महर्षियों से कहा–जिस दोष से मृत्यु ब्राह्मणों को मारने की इच्छा करती है वह सुनिये। वेदों का अभ्यास न करने से, अपने आचार को छोड़ देने से आलस्य करने से, और दूषित अन्न खाने से मृत्यु ब्राह्मणों को मारने की इच्छा करती है। ३–४।

लहसुन गाजर प्याज छत्राक (भूकन्द) तथा अशुद्ध (विष्ठा इत्यादि से होने वाले) पदार्थ द्विजातियों के लिए अखाद्य हैं। पेड़ से निकला हुआ लाल गोंद या पेड़ के काटने पर जो गोंद निकलता है लिसोड़े के फल गाय का पेयूष (दूध) ये सब यत्नपूर्वक त्याग दे। ५–६

अपने लिये पकाया हुआ कृसर संयाव (जो गेहूं का मैदा घी में भूनकर दूध और गुड़ में सिद्ध किया जाता है), पायस (खीर) मालपुआ यज्ञ मांस देवताओं के निमित्त रखा हुआ अन्न और हवि ये सब न खाये। व्यायी हुई गाय का दूध ब्याने के दिन से दस दिन तक, ऊँटनी का घोड़ी का और भेड़ी का तथा उस गाय का दूध जो ऋतुमती होने के कारण वृष को चाहती हो और जिस गाय के बछड़ा न हो उसका भी दूध न पियें। ७–८।

भैंस को छोड़कर अन्य जंगली पशुओं का और स्त्री का दूध तथा विकृत हुए रसों (मट्ठा कांजी इत्यादि) को त्याग देना चाहिए। कांजिया में दही और दही की बनी छाछ आदि और पानी में सिझाये फल–मूल आदि यदि विकृत हों तो वे भी नहीं खाने योग्य हैं। ९–१०।

कच्चे माँस खाने वाले (गिद्ध आदि) और गाँव घर में रहने वाले (कबूतर आदि) पक्षी का माँस न खाये। जिनके नाम का निर्देश न किया गया हो ऐसे एक खुर वाले घोड़े और गधे आदि भी अभक्ष्य हैं। टिटहरी पक्षी का माँस वर्जित है। चटका गौरैया पपीहा हंस चकवा ग्रामकुक्कट बत्तख रज्जुवाल जलकाक सुग्गा और मैना इन पक्षियों का माँस न खाये। ११–१२। कठफोड़ा और जिनके चंगुल झिल्ली से जुटे हों या जलमुरगा नख से विदीर्ण कर खाने वाला, बाज आदि और पानी डूबकर मछली खाने वाला, पक्षी बकुला वध स्थान का माँस और सूखा मांस वर्जित है। बगुला बलक द्रोणकाक खंजन मछली खाने वाला जलजीव (मगर आदि) ग्राम्य शूकर और सब प्रकार की मछलियाँ न खाये। १३–१४।

जो जिसके माँस को खाता है वह उसका माँस खाने वाला कहलाता है। जो मछली खाता है वह सभी माँसों को खाने वाला होता है इसलिए मछली न खाए। पाठीन बुआरी और रोहित (रोहू) मछली हव्य–कव्य के लिए प्रशस्त कही गई है। राजीव सिंहतुण्ड और चोयटे वाली मछलियाँ खाद्य हैं। १५–१६।

अकेले चलने और रहने वाले सर्पादि जीवों की भक्ष्यों में कहे गये वे पक्षी जो परिचित न हों और नख वाले प्राणियों (बानर आदि) को न खाय। पचनखियों में सेध साही गोह गेंडा कुछआ और खरहा तथा एक खुर और दांत वाले पशुओं में ऊँट को छोड़कर बकरे आदि भक्ष्य हैं ऐसा कहा है। १७–१८।

गोबर छत्ता ग्राम्य शूकर ग्रामकुक्कुट लहसुन प्याज और गाजर जानकर खाने से द्विज पतित होता है। उपयुक्त छः वस्तुओं में से कोई वस्तु बिना जाने खा ले तो कृच्छू सान्तपन या यति–चन्द्रायण व्रत करे और शेष जितने अखाद्य कहे गए हैं उनमें कोई चीज खा लेने से एक दिन उपवास करे। १९–२०

ब्राह्मण को अज्ञात भक्षण के दोष शन्त्यर्थ वर्ष में कम से कम एक कृच्छ्रव्रत करना चाहिए। किन्तु जिसने जानवर खाया हो उसे विशेष रूप से व्रत करना चाहिए। ब्राह्मण यज्ञ के निमित्ति यज्ञ अथवा भृत्यों के रक्षार्थ प्रशस्त पशु–पक्षियों का वध कर सकते हैं कारण अगस्त्य मुनि ने पहले ऐसा किया है। २१–२२।

पहले ऋषियों ने और ब्राह्मण–क्षत्रियों ने जो यज्ञ किए उनमें भी भक्ष्य पशु–पक्षियों के माँस के पुरोडाश हुए हैं। भक्ष्य (पकान्न) और भोज्य पायसादि पदार्थ जो श्रेष्ठ हों वे

बासी होने पर भी घृत दधि आदि से स्निग्ध करके खाने योग्य हैं। उसी प्रकार हवि का शेष भी बासी होने पर बिना घृतादि मिलाये खाने योग्य है। २३–२४।

यव गेहूं और खोये की बनी हुई वस्तुएं तेल–घी का सम्बन्ध न हो तो वह बहुत दिनों की बनी हुई होने पर भी खाने योग्य है यदि बिगड़ी न हों। यहाँ तक द्विजातियों के भक्ष्याभक्ष्य का सम्पूर्ण विचार कहा गया है। अब माँस खाने और छोड़ने की विधि कहता हूं। २५–२६।

मन्त्रों से पवित्र किया हुआ माँस खाना चाहिए। ब्राह्मण को जब माँस खाने की इच्छा हो तो वह नियम से एक बार माँस खा सकता है। रूग्ण अवस्था में अन्य आहार से प्राणान्त होने के भय से खा सकता है। ब्रह्मा ने यह सब प्राण के लिए अन्न कल्पित किया है। स्थावर (अन्न फल आदि) और जंगल के पशु पक्षी आदि सब प्राण के ही भोजन हैं। २७–२८।

चरों का अन्न (अक्षर तृण आदि, दाढ़ वालों का (व्याघ्र आदि) बिना दाढ़ खाने योग्य प्राणियों को खाकर ही दोष भागी नहीं होता क्योंकि ब्रह्मा ने ही खाद्य और खादक दोनों का निर्माण किया है। २९–३०।

यज्ञ के निमित्त माँस–भक्षण को दैव विधि कहा है। इसके विरूद्ध माँस भक्षण की प्रवृत्ति राक्षसी विधि है। खरीदकर या स्वयं कहीं से लाकर या सौगात की तरह किसी का दिया हुआ माँस देवता और पितरों को अर्पित कर खाय तो खाने वाला दोषी नहीं होता। ३१–३२।

विधि को जानने वाला ब्राह्मण सुखावस्था में अविधि पूर्वक माँस न खाये क्योंकि अविधि से माँस खाने वाले को जन्मान्तर में वे प्राणी खा जाते हैं जिनका माँस उसने खाया था। धन के निमित्त मृग मारने को वैसा पाप नहीं लगता जैसा वृथा माँस खाने वाले को होता है। ३३–३४।

(श्राद्ध और मधुपर्क में) तथा विधि नियुक्त होने पर जो मनुष्य माँस नहीं खाता वह मरने के इक्कीस जन्म तक पशु होता है। ब्राह्मण कभी मन्त्रों से बिना संस्कार किए पशुओं का माँस न खाय सनातन विधि को मानता हुआ मंत्रों में संस्कृत किये पशुओं का माँस न खाय। ३५–३६।

पशु माँस–भक्षण की यदि प्रबल इच्छा हो जावे तो घृत मैदा का पशु बनाकर खाय किन्तु कभी भी पशु को व्यर्थ मारने की इच्छा न करे (अर्थात अपने लिए कभी पशु हिंसा न करे) देवतादि के उद्देश्य के बिना वृथा पशुओं को मारने वाला है। (इसीलिए वृथा पशु हिंसा न करे) ।३७–३८।

स्वयं ब्रह्मा ने यज्ञ के लिए और सब यज्ञों की समृद्धि के लिए पशुओं का निर्माण किया है इसलिए यज्ञ में पशुओं का वध (अहिंसा) है। औषध पशु वृक्ष कछुए आदि और पक्षी ये सब यज्ञ के निमित्त मारे जाने पर फिर उत्तम योनि में जन्म ग्रहण करते हैं। ३९–४०।

कर्मनिष्ठ द्विज गृह में गुरूकुल या वन में (अर्थात ब्रह्मचर्य्याश्रम में या गृहस्थाश्रम में या वानप्रस्थ आश्रम में) रहकर आपत्ति में भी वेद विरूद्ध हिंसा न करे। जो हिंसा वेदविदित है और इस चराचर जगत में नियत है उसे अहिंसा ही समझना चाहिए। क्योंकि ध र्म वेद से ही निकला है। ४३–४४।

जो मनुष्य अपने सुख की इच्छा से अहिंसक जीवों को मारता है वह इस जीवन में या जन्मान्तर में कहीं सुख नहीं पाता। जो जीवों को बांधने मापने या क्लेश देने की इच्छा नहीं करता वह सब जीवों का हित चाहने वाला अत्यन्त सुख पाता है। ४५–४६।

जो किसी जीव को दुःख नहीं देता वह जिस धर्म को मन से चाहता है जो कर्म करता है जिस पदार्थ को चाहता है वह उसे अनायास ही प्राप्त होता है। जीवों को हिंसा बिना किए कभी माँस उत्पन्न नहीं हो सकता। पशुओं का वध करना स्वर्ग प्राप्त्यर्थ नहीं होता इसलिए माँस खाना छोड़ देना चाहिए। ४७–४८।

माँस की उत्पत्ति को और जीवों के वध–बन्धन को अच्छी तरह सोचकर सब प्रकार का माँस भक्षण भी त्याग देना चाहिए। जो विधि को छोड़कर पिशाच की तरह माँस नहीं खाता है वह संसार में सबका प्यारा होता है और हर रोग से पीड़ित नहीं होता। ४९–५०।

मारने की आज्ञा देने वाला उसके खण्ड–खण्ड करने वाला मारने वाला बेचने और मोल लेने वाला पकाने वाला परोसने वाला और खाने वाला–ये आंठो घातक हैं। जो देवता और पितरों का पूजन किए बिना दूसरे के माँस से अपना माँस बढ़ाना चाहता है उससे बढ़कर पापी दूसरा कोई नहीं है। ५१–५२।

मंत्रों से पवित्र किया हुआ मांस ब्राह्मण भी खा सकता है। देखिए श्लोक–२७–२८

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का संसार पर उपकार

संसार के हर व्यक्ति को गर्व करना चाहिए कि हमारी मानव जाति में एक ऐसे मनुष्य का जन्म हुआ जिससे मानवता का सर ऊंचा और नाम रौशन हुआ, अगर आप (सल्ल०) ना आते तो संसार की क्या दशा होती और हम मानवता की सज्जन्ता और श्रेष्ठता के लिए किस को पेश करते? मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर मानव के हैं मुहम्मद (सल्ल०) से इस संसार की रौनक और मानवता की श्रेष्ठता है वह किसी जाति या समूह की संपत्ति नहीं उन पर किसी देश का अधिकार नहीं। वह सम्पूर्ण मानवता के लिए गर्व की बहुमूल्य संपति है।

आज मानव का कौन सा समूह है जिस पर आप (सल्ल०) का उपकार बगैर वास्ते के या किसी के वास्ते से ही क्यों न हो क्या पुरूषों पर आप का उपकार नहीं ? कि आप (सल्ल०) ने उनको मानवता और मर्दानगी की शिक्षा दी क्या महिलाओं पर आप का उपकार नहीं, के आप (सल्ल०) ने उनके अधिकार बताए और उनके लिए समाज को निर्देश दिये और वसीयतें फरमाई आपने फरमाया मांओं के पैरों के नीचे जन्नत है। क्या कमजोरों पर आपका उपकार नहीं कि आप ने उनका पक्ष लिया और फरमाया कि कमजोरों के शाप से डरो उसके और अल्लाह तआला के बीच में कोई पर्दा नहीं होता अल्लाह तआला फरमाते हैं कि मैं टूटे हृदयों के साथहूं।

क्या बलवान और साहसी पर आप का उपकार नहीं है कि उनके अधिकार और कर्तव्य बताए और सीमाएं भी बताई और न्याय करने वालों व खुदा से डरने वालों को खुशखबरी सुनाई कि न्याय करने वाले शासक अल्लाह की रहमत के साये में होंगे।

क्या व्यापारियों पर आप का उपकार नहीं है कि आप (सल्ल०) व्यापार की फजीलत (श्रेष्ठता) और उद्योग की शराफत बताई और स्वयं व्यापार करके उस समूह का मान बढ़ाया, क्या आप ने ये नहीं फरमाया कि मैं और सच्चे और दयानतदार व्यापारी जन्नत में करीब–करीब होंगे।

क्या आप का मजदूरों पर उपकार नहीं? आप (सल्ल०) ने ताकीद फरमाई कि मजदूर की मजदूरी पसीना सूखने से पहले दे दो।

क्या जानवरों तक पर आप का उपकार नहीं? कि आप ने फरमाया वो हर प्राणी जो जिगर (कलेजा) रखता है और जिसमें एहसास और जीवन है, उसको सुख पहचाना और खिलाना भी सदका (पुन्य) है।

क्या सम्पूर्ण मानवता पर आपका उपकार नहीं है रातों को उठ कर आप शहादत देते थे कि मेरे खुदा ये सब तेरे बन्दे (सेवक) भाई–भाई हैं।

क्या सारे संसार पर आपका उपकार नहीं कि सबसे पहले आप ही की जबान से सुना गया कि अल्लाह किसी देश जाति वेश और बिरादरी का नहीं सारे जहानों और संसार के सब मनुष्यों का है जिस संसार में आर्यों का खुदा यहूदियों का खुदा मजूसयों (आग की उपासना करने वाले) का खुदा मिस्रियों का खुदा, इरानियों का खुदा कहा जाता था वहां अल्हमदुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन (अल्लाह तमाम जहानों का पालन हार है) की वास्तविकता का ऐलान हुआ और इसको नमाज का एक भाग बना दिया गया।

हमारे आपके संसार में हकीम फलास्फा भी आये उदबा और कवि भी आये फातेह भी आये सियासी लीडर और सामाजिक मार्ग दर्शक भी, अल्लाह को एक मानने वाले साइंटिस्ट भी परन्तु किसके आने से संसार में बहार आई? पैगम्बरों के आने से और सबसे अन्त में सबसे बड़े पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से बहार आई। कौन अपने साथ हरयाली और बरकतें लाया, अल्लाह की रहमते लाया यह सच है कि मानवता के लिए दौलतें और मनुष्यता के लिए नेअमतें लेकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) आये। चौदह सौ वर्ष का मानव इतिहास पूरे जोर के साथ आप को संबोधित करके कहता है–

सर सब्ज सब्जा हो जो तेरा पाए माल हो
ठहरे तू जिस शजर के तले वह निहाल हो

हजरत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी

अनुवाद : मुहम्मद अरशद नदवी

अल्लाहुम सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्व अ़ला आ़लिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

अबरहा का लश्कर

लतीफ़ अहमद एम० ए०

हबशा के बादशाह नज्जाशी की तरफ से अबरहा बिन सबाह यमन का हाकिम था। यह लोग ईसाई थे और यह देखा करते थे कि अरब के हर कोने से लोग रवाना होकर काबा जाया करते हैं। अबरहा के लोगों से जांच की तो मालूम हुआ कि ये लोग हज और जियारत के उद्देश्य से वैतुल्लाह जाया करते हैं। उसने नज्जाशी से आज्ञा लेकर यमन के इलाके में एक बहुत बड़ा गिरजा निर्मित करवायी और जर व जवाहिरात से उसको खूब सुसज्जित किया और अरबों को प्रेरणा दी कि वह बजाय काबे के यहां आया करें लेकिन लोग तैयार नहीं हुए। इस अवधि में किसी व्यक्ति ने इस गिरजा को नापाकी से लिप्त कर दिया। काफिले के लोग कहीं उसके पास आकर ठहरे। उन्होंने रात को आग जलाई। आग की कोई चिंगारी उसमें आ गिरी। आग लगने से गिरजा जल गया। इस पर अबरहा सख्त नाराज हुआ और काबे पर एक बहुत बड़ी सेना लेकर चढ़ दौड़ा। सेना में बड़े बड़े हाथी भी लाया ताकि काबे को ध्वस्त करने के लिए उन हाथियों को प्रयोग में लाए। अबरहा ने मक्के वालों को कहला भेजा कि मेरा उद्देश्य सिर्फ काबे को ढाना है किसी से लड़ना नहीं है लेकिन जो काबे के समर्थन में हमसे मुकाबला करेगा हम भी उसको कत्ल व गारत करेंगे। चुनांचि अबरहा जो यमन से चला तो अरब की कुछ बस्तियों ने उससे हस्तक्षेप किया मगर वह सबको पराजय करता हुआ चला गया। मक्के वालों ने एकत्र होकर काबे में अत्यंत रो धोकर दुआ की। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब कौम के सरदार और काबे के प्रधान मुतवल्ली थे। उनको मालूम हुआ कि अबरहा के व्यक्तियों ने उनके दो सौ ऊंट पकड़ लिये है। चुनांचे हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने एक व्यक्ति के साथ जो अबरहा का विश्वास–पात्र था उसके माध्यम से अबरहा से भेंट की। उसने उनको सम्मानपूर्वक अपने पास बिठाया और उनसे उनके आने का कारण दरयाफ्त किया। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने कहा 'मेरे ऊंट आपके सिपाही पकड़ लाये हैं उनको छुड़वाने के उद्देश्य से उपस्थित हुआ हूं। इसपर अबरहा ने आश्चर्य से पूछा "मैं तुम्हारे काबे को गिराने आया हूं उसकी सिफारिश तुम करने नहीं आये। उन्होंने जवाब दिया "जिसका घर है वह अपने आप उसको बचायेगा मेरे तो ऊंट है मैं उनके लिए हाजिर हुआ हूं क्योंकि उनकी कमाई पर हमारी अर्थ व्यवस्था का सहारा है। अबरहा ने ऊंट वापस करने की आज्ञा देदी और यह वापस चले आये और मक्के वालों को साथ लेकर किसी पहाड़ पर शरण ग्रहण कर ली।

अबरहा का लश्कर वादी–ए–बत्न मुहस्सर तक पहुंचा था कि यहां आकर अबरहा का हाथी बैठ गया और उसको बहुतेरा मार मार कर उठाया लेकिन हाथी नहीं उठा। इसी अवधि में समुद्र की ओर से हरे रंग के पक्षी आने शुरू हुए। हर पक्षी तीन तीन कंकरियां लिए हुआ था एक मुंह में और दो पंजों में यह पक्षी बहुत बड़ी संख्या में थे, चुनांचि वह कंकरियां पक्षियों ने अबरहा के लश्कर पर बरसाना शुरू कीं। हर कंकरी गोली का काम करती थी। लोग भागे और बुरी तरह मरे। यह कंकरियां मसूर या चने के बराबर थीं। कंकरियां कंकर की थीं। ग़रज थोड़ी देर में लशकर ऐसा हो गया जैसे भूसे का खाया हुआ अवशेष। जो बच गया वह चेचक में ग्रस्त हुआ। कुछ के शरीर पर आबले पड़ गये। कुछ के शारीरिक अंग गलगल झड़ गये। चूंकि यह वाकिया बहुत प्रसिद्ध था और नबीकरीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म से पचास दिन पहले हुआ था इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इरशाद हुआ क्या आपने हाथी वालों के साथ जो हुआ वह नहीं देखा। सुवाल का उद्देश्य तहवील और ताजीम है और इस बात का इजहार है कि मक्के वालों के साथ हमने एहसान किया और ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके पैदा होने से पहले आपकी ताजीम और आपकी इज्जत फरमाई।

अब्दुल्लाह नाम एक प्राचीन कवि अपनी कविता में इस घटना के संबंध में लिखता है– "जरा पूछो कि उस सेनापति ने क्या कुछ देखा, जो जानता है वह न जानने वालों को सूचित कर देगा कि साठ हजार में से एक भी अपने देश को जीवित न लौटा और यदि कोई मरता पड़ता गया तो वह भी न बचा"

सेनापति घबराकर ऐसा भागा कि साथ में न तो सेना थी और न हाथी बल्कि सबकी लाशें मक्के से चार कोस बाहर पड़ी सड़ रही थीं।

ऐ अल्लाह ! इज़्ज़त व ज़िल्लत आप के हाथ है जिसे चाहे इज़्ज़त दें जिसे चाहे ज़लील करे।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

कभी भी फट सकता है तापमान का टाइम बम

धरती का तापमान २०२६ तक खतरनाक हद तक बढ़ सकता है। इससे मौसम चक्र, बुरी तरह प्रभावित हो सकता है।

अंतर्रष्ट्री संस्था डब्लू डब्लू एफ की रिपोर्ट में यह चेतावनी दी गई है कि यदि समय रहते इसे रोकने के उपाय न किये गये तो वर्ष २०२६ से २०६० तक के बीच धरती के तापमान में २.० सेल्सियस की वृद्धि हो जायेगी जिसके कारण उत्तरी और दक्षिणी ध्रव पर जमीं बर्फ़ तेज़ी से पिघलने लगेगी और महासागरों का जल स्तर तेजी से बढ़ेगा और तटीय क्षेत्र समुद्र में डूब जायेगा। रिपोर्ट के मुताबिक धरती के बढ़ते हुए तापमान को रोकने के लिए अब अधिक समय नहीं रह गया है। यह एक टाइम बम है जो आने वाले समय में कभी भी फट सकता है। मौसम वैज्ञानिकों ने इस बात की भी चेतावनी दी है कि धरती के तापमान में इस क़दर इज़ाफ़े से मौसम चक्र बुरी तरह प्रभावित होगा जिससे कई प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर पहुंच जाएंगी।

डब्लू डब्लू एफ की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष १७५० से लेकर अब तक धरती का तापमान ०.७ सेल्सियस बढ़ चुका है। इसका मुख्य कारण कारखानों ऊर्जा संयत्रों और गाड़ियों से निकलने वाली कार्बन डाई ऑक्साइड गैस है जो गर्मी को वायुमण्डल में ही रोक रखती है और उसे बाहर नहीं निकलने देती। यूरोपी संघ के कई देशों और अंतराष्ट्रीय संगठन इस हक में है कि विश्व के सभी देशों की सरकारों को माहोल को प्रदूषित करने वाली ग्रीन हाउस गैसों के निकलने की सीमा तय कर देनी चाहिये, परन्तु अमेरिका इसके लिए राजी नहीं है।

सुनामी की भेंट चढ़ गया महारानी का राजपाट

सुनामी लहरों ने महारानी फ़ातिमा का न केवल राजपाट और महल छीन लिया बल्कि प्रजा से उन्हें दूर कर दिया लेकिन ७२ वर्षीय इस महिला ने हार नहीं मानी है वह उनके पुर्नवास के लिए फिर सक्रिय हो गयी है।

अंडमान निकोबार द्वीप समूह में छोटे छोटे द्वीपों के समूह नैनकावरी की रानी फातिमा स्मृतियों के मोती खंगालते हुए कहती हैं, सब कुछ खत्म हो गया। सुनामी लहरों ने सब कुछ छीन लिया। मेरी प्रजा, मेरे खेत, मेरी छोटी सी शांत और खुशहाल दुनिया सुनामी की भेंट चढ़ गयी। निकोबार द्वीप समूह के मध्य में निचले क्षेत्र में बसा नैनकावरी तीन नन्हें द्वीपों का समूह है जो सुनामी लहरों की विनाशलीला में बुरी तरह तबाह हो गया। करीब ४२,००० से ज्यादा आबादी वाला निकोबार २६ दिसम्बर की सुनामी की लहरों में तहस–नहस हो गया। महारानी को नैनकावरी द्वीप समूह के चाम्पिन गावं से बचाया गया। अपने साम्राज्य की बर्बादी से दुखी रानी फ़ातिमा आखिरी सांस तक चाम्पिन में रहना चाहती थी लेकिन उन्हें वहां से जर्बदस्ती हटाया गया।

महारानी फ़ातिमा की छोटी बेटी सबीरा ने बताया कि वह बीमार हो गयी थी। इसलिए भारतीय वायु सेना के विमान से उन्हें नैनकावरी से पोर्टब्लेयर लाना पड़ा। कमजोर स्वास्थ्य के बावजूद महारानी नौकरशाहों से नियमित मुलाकात कर अपनी प्रजा के लिए राहत सामग्री भिजवाने का प्रयास कर रही है।

रानी फ़ातिमा का छोटा बेटा ग्रामीणों और अधिकारियों के साथ बराबर संपर्क बनाये है ताकि प्रजा को हर सहायता मिल सके। चाम्पिन की वह तीन इमारतें रानी घाट कहलाती थी जहां महारानी फ़ातिमा अपने ४२ सदस्यीय परिवार के साथ रहती थीं। आज रानी घाट सुनामी लहरों में विलीन हो चुका है। सबीरा बताती हैं कि फातिमा की नानी आइसलोन एक निकोबारी महिला थीं जिन्हें उनकी सेवाओं से खुश होकर अंग्रेजों ने महारानी का खिताब दिया था।

अन्धे लोगों के लिए क़ुर्आन का प्रकाशन

हरम शरीफ में ब्रेल **(Braille)** शब्दों में प्रकाशित क़ुर्आन शरीफ़ भी रखा जाएगा ताकि अन्धे लोग भी क़ुर्आन शरीफ़ की तिलावत कर सके। सऊदी सरकार ने इस सिलसिले में एक योजना की मंज़ूरी दी है। हरम शरीफ़ में विभिन्न जगहों पर ऐसे क़ुर्आन शरीफ़ प्रकाशन के बाद रखे जाएंगे।

(शेष पृष्ठ ३३ पर)